NEET Bulletin Helpline No.
8800265682
Completely NEET Counselling Guidance specially for
MBBS BDS BAMS BHMS BUMS
B.Sc Nursing GNM D.| B. Pharma
BPT MPT D|BMLT D.Optometry
OT Technician Clinical Research
B.Sc Ag. Micro Bio Bio Chem
Bio tech. BNYS etc.

R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608

राष्ट्रीय हिंदी दैनिक

विजडम इंडिया

निर्भीक और बेबाक अभिव्यक्ति

लखनऊ से प्रकाशित

EMAIL: sheelshukla100@gmail.com

वर्ष: 14 अंक: 131 लखनऊ, शनिवार 28 दिसंबर 2024 मूल्य: 02 रुपये पृष्ठ- 08

वीर बाल दिवस पर बोले पीएम मोदी

युवाओं को सशक्त बनाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता

प्रधानमंत्री ने कहा कि साहिबजादों ने मुगल साम्राज्य के सभी प्रलोभनों को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने हर अत्याचार सहा। जब वजीर खान ने उन्हें जिंदा ईंटों से मार देने का आदेश दिया, तो साहिबजादों ने बड़ी बहादुरी के साथ चुनौती स्वीकार कर ली।

नई दिल्ली (एजेंसी) दिल्ली में वीर बाल दिवस समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि युवाओं को सशक्त बनाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि आज युवाओं को राष्ट्र के विकास से जुड़े हर क्षेत्र में अवसर मिल रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम हर क्षेत्र में नए बदलाव और चुनौतियां देख सकते हैं, इसलिए हमें अपने युवाओं को भविष्य के लिए तैयार करने की जरूरत है। मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि आज हम तीसरे श्वीर बाल दिवसश का हिस्सा बन रहे हैं। तीन साल पहले हमारी सरकार ने वीर साहिबजादों के बलिदान की अमर स्मृति में श्वीर बाल दिवसश मानने शुरूआत की थी। अब ये दिन करोड़ों देशवासियों के लिए, पूरे देश के लिए राष्ट्रीय प्रेरणा का पर्व बना है। इस दिन ने भारत के कितने ही बच्चों और युवाओं को अदम्य साहस से भरने का काम किया है।प्रधानमंत्री ने कहा कि साहिबजादों ने मुगल साम्राज्य के सभी प्रलोभनों को अस्वीकार कर दिया। उन्होंने हर अत्याचार सहा। जब वजीर खान ने उन्हें जिंदा ईंटों से मार देने का आदेश दिया, तो साहिबजादों ने बड़ी बहादुरी के साथ चुनौती स्वीकार कर ली। उन्होंने वजीर खान को गुरु अर्जन देव, गुरु तेग बहादुर और गुरु गोबिंद सिंह की बहादुरी की याद दिलाई। उन्होंने मृत्यु को स्वीकार कर लिया, लेकिन आस्था के मार्ग से कभी नहीं डिगे। उन्होंने कहा कि गुरु परंपरा ने हमें, सभी को एक समान भाव से देखना सिखाया है और संविधान भी हमें इसी विचार की प्रेरणा देता है।नरेंद्र मोदी ने कहा कि वीर साहिबजादों का जीवन हमें देश की अखंडता और विचारों से कोई समझौता ना करने की सीख देता है और संविधान भी हमें भारत की प्रभुता और अखंडता को सर्वोपरि रखने का सिद्धांत देता है। हमारे लोकतंत्र की विराटता में गुरुओं की सीख है, साहिबजादों का त्याग है और देश की एकता का मूल मंत्र है। उन्होंने कहा कि इतिहास से वर्तमान तक, भारत की प्रगति में हमेशा युवा ऊर्जा की बड़ी भूमिका रही है। आजादी की लड़ाई से लेकर 21वीं सदी के जनांदोलनोंतक, भारत के युवा ने हर क्रांति मेंअपना योगदान दिया है।प्रधानमंत्री ने कहा कि श्वीर बाल दिवसश हमेंप्रेरणाओंसे भरता है और नए संकल्पों के लिए प्रेरित करता है। मैंने लाल किले से कहा है कि अब बेस्ट ही हमारा स्टैंडर्ड होना चाहिए। मैं अपनी युवा शक्ति से कहूंगा कि वो जिस सेक्टर में हों उसे बेस्ट बनाने के लिए काम करें। उन्होंने कहा कि 26 दिसंबर का वो दिन, जब छोटी सी उम्र में हमारे साहिबजादों ने अपने प्राणों की आहुति दे दी। साहिबजादा जोरावर सिंह और साहिबजादा फतेह सिंह की आयु कम थी, लेकिन उनका हौसला आसमान से भी ऊंचा था।

किसानों का आंदोलन तेज, 30 दिसंबर को पंजाब बंद का ऐलान, आपातकालीन सेवाएं छोड़ सब ठप

पंढेर ने कहा कि व्यापारियों, ट्रांसपोर्टरों, कर्मचारी संघों, टोल प्लाजा श्रमिकों, श्रमिकों, पूर्व सैनिकों, सरपंचों और शिक्षक संघों, सामाजिक और अन्य निकायों और कुछ अन्य वर्गों ने बंद को अपना समर्थन दिया है।

नई दिल्ली (एजेंसी) किसान मजदूर संघर्ष समिति के एक किसान नेता ने कहा कि 30 दिसंबर को पंजाब में राज्यव्यापी बंद का आह्वान किया गया है। मीडिया से बात करते हुए सरवन सिंह पंधेर ने कहा कि बंद को राज्य भर में कई यूनियनों और समूहों से समर्थन मिला है। उन्होंने बताया कि बंद सुबह सात बजे से शाम चार बजे तक प्रभावी रहेगा। आगे बोलते हुए, किसान नेता ने कहा कि पंजाब में सरकारी और निजी कार्यालय बंद रहेंगे, और रेल आंदोलन और सड़क यातायात में भी व्यवधान होगा। उन्होंने कहा कि आपातकालीन सेवाएं चालू रहेंगी। पंढेर ने कहा कि व्यापारियों, ट्रांसपोर्टरों, कर्मचारी संघों, टोल प्लाजा श्रमिकों, श्रमिकों, पूर्व सैनिकों, सरपंचों और शिक्षक संघों, सामाजिक और अन्य निकायों और कुछ अन्य वर्गों ने बंद को अपना समर्थन दिया है। साथ ही आम लोग भी इसका समर्थन कर रहे हैं। पंढेर ने पुष्टि की कि ये कार्रवाइयां उनके चल रहे विरोध का हिस्सा हैं और उनका उद्देश्य उनकी मांगों को उठाना है। किसान नेता ने कहा कि यह बंद केंद्र को किसानों की मांगों को स्वीकार करने के लिए मजबूर करेगा, उन्होंने किसानों की मांगों को स्वीकार करने में विफल रहने के लिए केंद्र सरकार की आलोचना की। श्पंजाब बंदश का आह्वान करने का निर्णय पिछले सप्ताह संयुक्त किसान मोर्चा (गैर–राजनीतिक) और किसान मजदूर मोर्चा द्वारा लिया गया था। बंद की सफलता सुनिश्चित करने के लिए एसकेएम (गैर–राजनीतिक) और केएमएम ने गुरुवार को खनौरी विरोध स्थल पर ट्रांसपोर्टरों, कर्मचारियों, व्यापारियों और अन्य लोगों की एक बैठक बुलाई। फसलों के लिए एमएसपी पर कानूनी गारंटी के अलावा, किसान कर्ज माफी, किसानों और खेतिहर मजदूरों के लिए पेंशन, बिजली दरों में कोई बढ़ोतरी नहीं, पुलिस मामलों को वापस लेने और 2021 लखीमपुर खीरी हिंसा के पीड़ितों के लिए न्यायष की मांग कर रहे हैं। एसकेएम (गैर–राजनीतिक) और केएमएम के बैनर तले किसान सुरक्षा बलों द्वारा दिल्ली मार्च रोके जाने के बाद 13 फरवरी से पंजाब और हरियाणा के बीच शंभू और खनौरी सीमा बिंदुओं पर डेरा डाले हुए हैं।

ED कार्यालय पहुचे संजय सिंह, प्रवेश वर्मा और मनजिंदर सिंह सिरसा के खिलाफ की शिकायत, पैसे बांटने का आरोप

नई दिल्ली (एजेंसी) आप सांसद संजय सिंह नई दिल्ली निर्वाचन क्षेत्र में मतदाताओं को कथित तौर पर नकदी बांटने के लिए भाजपा नेताओं परवेश वर्मा और मनजिंदर सिंह सिरसा के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने के लिए ईडी कार्यालय पहुंचे, जहां से आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल मौजूदा विधायक हैं। आप सांसद संजय सिंह ने कहा कि उन्हें सिर्फ शिकायत मिली है। किसी भी अधिकारी ने हमें कार्रवाई का आश्वासन नहीं दिया। ईडी क्या करेगी, मैं इस बारे में नहीं कह सकता। उन्होंने शिकायत की आधिकारिक रिसीविंग दे दी है।मुख्यमंत्री आतिशी समेत कई आप नेताओं ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर वर्मा पर अपने आधिकारिक आवास 20 विंडसर प्लेस में नकदी बांटने का आरोप लगाया था। आतिशी ने दावा किया था कि कई पत्रकारों ने घटना के वीडियो साक्ष्य कैद किए हैं जिसमें कथित तौर पर महिलाओं को नकदी से भरे लिफाफे के साथ परवेश वर्मा और अन्य वरिष्ठ भाजपा नेताओं की तस्वीरों वाले भाजपा के पर्चे के साथ परिसर से बाहर निकलते हुए दिखाया गया है।

खतरे में है महात्मा गांधी की विरासत, कांग्रेस की बैठक में बोलीं सोनिया गांधी, बीजेपी पर निशाना साधा

कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की बैठक में पढ़े गए अपने संदेश में, सोनिया गांधी ने भाजपा और आरएसएस पर जमकर हमला बोला और उन ताकतों से लड़ने का आह्वान किया, जिनके बारे में उन्होंने दावा किया कि उन्होंने जहरीला माहौल बनाया, जिसके कारण महात्मा गांधी की हत्या हुई।

(एजेंसी) कांग्रेस संसदीय दल (सीपीपी) प्रमुख सोनिया गांधी ने गुरुवार को नई दिल्ली में सत्ता में बैठे लोगों पर महात्मा गांधी की विरासत को कमजोर करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि उनकी विरासत को दिल्ली में सत्ता में बैठे लोगों और उन्हें पोषित करने वाली विचारधाराओं और संस्थानों से खतरा है। कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की बैठक में पढ़े गए अपने संदेश में, सोनिया गांधी ने भाजपा और आरएसएस पर जमकर हमला बोला और उन ताकतों से लड़ने का आह्वान किया, जिनके बारे में उन्होंने दावा किया कि उन्होंने जहरीला माहौल बनाया, जिसके कारण महात्मा गांधी की हत्या हुई।सोनिया गांधी ने कहा कि यह हमारे देश के इतिहास में एक परिवर्तनकारी मील का पत्थर था। आज, हम महात्मा गांधी की विरासत को संरक्षित, संरक्षित और बढ़ावा देने के लिए खुद को फिर से समर्पित करते हैं। वह हमारी प्रेरणा के मूल स्रोत रहे हैं और रहेंगे। उन्होंने कहा कि यह वह ही थे जिन्होंने उस पीढ़ी के हमारे सभी उल्लेखनीय नेताओं को तैयार किया और उनका मार्गदर्शन किया। उनकी विरासत को नई दिल्ली में सत्ता में बैठे लोगों और उन्हें पोषित करने वाली विचारधाराओं और संस्थानों से खतरा है।गांधी ने कहा कि इन संगठनों ने कभी भी हमारी आजादी के लिए लड़ाई नहीं लड़ी। उन्होंने महात्मा गांधी का कटु विरोध किया। उन्होंने एक विषाक्त वातावरण बनाया जिसके कारण उनकी हत्या हुई। वे उसके हत्यारों का महिमामंडन करते हैं। पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष ने आरोप लगाया कि देश भर में विभिन्न स्थानों पर गांधीवादी संस्थानों पर हमले हो रहे हैं और कहा कि यह उचित है कि इस बैठक को श्नव सत्याग्रह बैठकश कहा जाए।

BPSC छात्रों पर लाठीचार्ज को लेकर तमतमा गए लालू यादव, प्रियंका ने भी साधा नीतीश सरकार पर निशाना

प्रियंका गांधी ने अपने व्हाट्सएप चौनल पर पोस्ट किया, हाथ जोड़ रहे युवाओं पर इस तरह लाठी चलाना क्रूरता की पराकाष्ठा है। भाजपा राज में रोजगार मांगने वाले युवाओं को लाठियों से पीटा जाता है।

पटना (एजेंसी) बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) के अभ्यर्थियों को तितर–बितर करने के लिए बिहार पुलिस द्वारा लाठीचार्ज करने के एक दिन बाद, राष्ट्रीय जनता दल (राजद) प्रमुख लालू प्रसाद यादव ने गुरुवार को कहा कि पुलिस को लाठीचार्ज नहीं करना चाहिए था और यह गलत था। लालू ने कहा कि ऐसा नहीं करना चाहिए था। गलत बात है। परीक्षा रद्द करने की मांग को लेकर बीपीएससी अभ्यर्थी बुधवार को पटना में आयोग के कार्यालय का श्घेरावश करने के लिए एकत्र हुए।हालाँकि, पुलिस विभाग के अधिकारियों ने एक स्पष्टीकरण जारी किया, जिसमें दावा किया गया कि उन्होंने श्हल्के बलश का प्रयोग किया और विरोध करने वाले अभ्यर्थियों को किसी भी तरह की चोट लगने से इनकार किया। अधिकारियों ने दावा किया कि कोचिंग शिक्षक अभ्यर्थियों को विरोध के लिए उकसा रहे थे। वहीं, कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा ने बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) के अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज को लेकर बृहस्पतिवार को राज्य सरकार और भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधा तथा आरोप लगाया कि भाजपा को सिर्फ अपनी कुर्सी बचाना है। प्रियंका गांधी ने अपने व्हाट्सएप चौनल पर पोस्ट किया, हाथ जोड़ रहे युवाओं पर इस तरह लाठी चलाना क्रूरता की पराकाष्ठा है। भाजपा राज में रोजगार मांगने वाले युवाओं को लाठियों से पीटा जाता है। उत्तर प्रदेश हो, बिहार हो या मध्य प्रदेश, युवा अगर अपनी आवाज उठाते हैं तो उन्हें बर्बरता से पीटा जाता है। उन्होंने कहा कि दुनिया के सबसे युवा देश के नौजवानों का भविष्य क्या होगा, यह सोचना और उनके लिए नीतियां बनाना सरकारों का काम है। प्रियंका गांधी ने आरोप लगाया, भाजपा के पास सिर्फ कुर्सी बचाने का दृष्टिकोण है। जो मांगेगा रोजगार, उस पर होगा अत्याचार।बीपीएससी की ओर से 13 दिसंबर को आयोजित संयुक्त प्रारंभिक परीक्षा (पीएससी) के प्रश्नपत्र लीक होने का दावा करने वाले अभ्यर्थियों ने परीक्षा रद्द करने की मांग को लेकर बुधवार को पटना में विरोध–प्रदर्शन किया, जिस दौरान पुलिस ने लाठीचार्ज किया। पटना के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) राजीव मिश्रा ने बताया था कि पुलिसकर्मियों को प्रदर्शनकारियों पर उस समय लाठीचार्ज करना पड़ा, जब उनमें से कुछ बैरिकेड तोड़कर बीपीएससी कार्यालय तक पहुंच गए और यातायात बाधित किया।

निगमबोध घाट पर होगा पूर्व पीएम का अंतिम संस्कार

नई दिल्ली एजेंसी। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह नहीं रहे। 92 साल की उम्र में उनका दिल्ली एम्स में निधन हो गया। उन्हें उम्र संबंधी दिक्कतों की वजह से गुरुवार रात 8रू06 बजे एम्स में भर्ती कराया गया था। रात 9रू51 बजे उन्हें मृत घोषित कर दिया गया। मनमोहन सिंह प्रखर अर्थशास्त्री थे। 1991 में देश में शुरू किए गए आर्थिक उदारीकरण के वे शिल्पकार रहे। 2004 से 2014 तक वे प्रधानमंत्री रहे। उनके निधन से देशभर में शोक की लहर है।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता डॉ. कर्ण सिंह ने कहा, श्वह एक असाधारण इंसान थे...उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि वह देश के प्रधानमंत्री बनेंगे, लेकिन सोनिया गांधी ने उन्हें देश का प्रधानमंत्री चुना...उन्होंने देश के लिए कई लाभकारी कार्य किए...वह दो कार्यकाल तक देश के प्रधानमंत्री रहे...वह अपने भाषण में बहुत शालीन थे...मनमोहन सिंह पर विपक्ष ने कई बार हमला किया, लेकिन उन्होंने कभी प्रतिक्रिया नहीं दी, वह बहुत शांत थे...उन्हें उनके द्वारा किए गए कार्यों के लिए हमेशा याद किया जाएगाश।

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर भाजपा सांसद रविशंकर प्रसाद ने कहा, 'मैं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। डॉ. मनमोहन सिंह अपने आप में एक अद्भुत नेता थे। वह एक विद्वान अर्थशास्त्री थे और उन्होंने भारत के लगभग सभी पदों पर अपना योगदान दिया– प्रधानमंत्री के रूप में, वित्त मंत्री के रूप में, भारत के मुख्य आर्थिक सलाहकार के रूप में, रिजर्व बैंक के गवर्नर के रूप में, राजस्व सचिव के रूप में, कई वैश्विक निकायों के सदस्य थे..यूजीसी के चेयरमैन रहे और राज्यसभा में विपक्ष के नेता रहे, उन्होंने लगभग सभी पदों को सुशोभित किया। ये बहुत लंबा अनुभव है.. उन्होंने भारत की अर्थव्यवस्था को खोला और भारत की उद्यमशीतला को आगे बढ़ाया। वह प्रधानमंत्री भी रहे और कई फैसले उन्होंने लिए..उन्होंने देश को अपना योगदान दिया। आज उनके निधन से हम सभी दुखी हैं इसलिए भारत सरकार ने 7 दिनों का शोक घोषित किया है।'

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर कांग्रेस नेता नवजोत सिंह सिद्धू ने कहा, श्वह एक श्युगपुरुषश थे। उनके जाने का दुख पूरी दुनिया को है। उन्होंने अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में जो किया है उसकी पूरी दुनिया प्रशंसा करती है.. जब भी काबिलियत किरदार और ईमानदारी का जिक्र आएगा तब डॉ. मनमोहन सिंह का नाम सुनहरे अक्षरों में लिखा जाएगा।श

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर कांग्रेस सांसद रणदीप सुरजेवाला ने कहा, 'डॉ. मनमोहन सिंह ने इस देश की अर्थव्यवस्था को बदला, देश के मिडिल क्लास की जिंदगी को बदला, गरीब की जिंदगी को बदला...किसान के लिए उचित मुआवजा कानून लेकर आए, 72 हजार करोड़ की कर्ज माफी को लेकर आए...मां भारती के उस सच्चे सबूत को श्रद्धांजलि का एक बड़ा हिस्सा ये हैं कि उनकी अंतिम यात्रा उस स्मारक पर हो जो स्मारक दिल्ली राजधानी में बनाया जाए। ताकि उनकी याद सदैव इस देश के लोगों के साथ रहें। ये राजनीति का विषय नहीं हो सकता है इसलिए कांग्रेस अध्यक्ष ने एक पत्र लिखा है कि सरदार मनमोहन सिंह जी की स्मृति में एक स्मारक का निर्माण हो..अब इस पर सरकार को निर्णय लेना है।'

केंद्रीय गृह मंत्रालय ने बताया है कि पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार शनिवार को सुबह 11रू45 बजे निगमबोध घाट श्मशान घाट पर राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा। गृह मंत्रालय (एमएचए) ने शुक्रवार को एक संदेश में कहा, श्सरकार ने निर्णय लिया है कि डॉ. मनमोहन सिंह का राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार किया जाएगा। इसमें कहा गया है कि रक्षा मंत्रालय से पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के पूरे सैन्य सम्मान के साथ राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार की व्यवस्था करने का अनुरोध किया गया है।

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर कांग्रेस महासचिव अविनाश पांडे ने कहा, श्ये बहुत ही दुख की बात है। कांग्रेस कार्य समिति ने डॉ. मनमोहन सिंह जी को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की। देश में उनका योगदान बहुत रहा। कांग्रेस के सही प्रधानमंत्री के रूप में उन्होंने देश का नेतृत्व किया।'

कांग्रेस नेता सलमान खुर्शीद ने कहा, श्पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह एक बुद्धिजीवी और दयालु व्यक्ति थे। उन्होंने आधुनिक भारत की प्रगति के लिए अनगिनत योगदान दिए हैं।

बीजेपी पर बरसे मल्लिकार्जुन खड़गे, कहा- हमारे पास गांधी-नेहरू की विरासत, झूठ को चकनाचूर कर देंगे

नई दिल्ली (एजेंसी) सीडब्ल्यूसी की बैठक में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा कि चुनावी प्रक्रिया में लोगों का विश्वास धीरे–धीरे कम हो रहा है और भारत के चुनाव आयोग की निष्पक्षता पर सवाल उठ रहे हैं। खड़गे ने सत्तारूढ़ भाजपा पर आरोप लगाए और दावा किया कि वह भारत के लिए महत्वपूर्ण सभी संस्थानों पर कब्जा करना चाहती है। उन्होंने कहा कि बीजेपी म्ब जैसी सभी संवैधानिक संस्थाओं पर कब्जा करना चाहती है, लेकिन हम ये लड़ाई लड़ते रहेंगे। ऐसा क्या है जो यह सरकार उन चुनाव नियमों को बदलकर छिपाने की कोशिश कर रही है जिन्हें अदालत ने साझा करने का आदेश दिया था।इसके अलावा, राज्यसभा में विपक्ष के नेता ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं को याद दिलाया कि पार्टी महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू की विरासत है। हमारे पास गांधी–नेहरू की विरासत है, नए संकल्प के साथ बेलगाम से लौटेंगेय यह निराशा का नहीं बल्कि एकजुट होने का, विरोधियों के झूठ को तोड़ने का समय है। इसके अलावा, खड़गे ने अपने संबोधन में न केवल कड़ी मेहनत बल्कि बेहतर रणनीतियों के महत्व पर भी जोर दिया। खड़गे ने कहा कि केवल कड़ी मेहनत पर्याप्त नहीं है, समय पर ठोस रणनीति, दिशा जरूरी हैय नई शक्ति, नेतृत्व को मौका देने की जरूरत है।उन्होंने कहा कि 100 साल पहले यहीं 26 दिसंबर 1924 को 3 बजे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कांग्रेस अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाली थी। इससे पहले मौलाना मुहम्मद अली कांग्रेस अध्यक्ष थे। इस मौके पर सेवादल के संस्थापक क्त. छ ंभ्तकपांत को याद कर मैं उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। यहीं से कांग्रेस के इतिहास में रोज सुबह राष्ट्रीय ध्वज समारोह पूर्वक फहराने और शाम को उतारने का सिलसिला आरंभ हुआ। गांधीजी केवल एक बार एक साल के लिए ही कांग्रेस अध्यक्ष बने थे। लेकिन उन्होंने इसके बाद इतनी लंबी लकीर खींची कि उसकी बराबरी कर पाना किसी भी राजनेता के लिए संभव नहीं है । खड़गे ने कहा कि गांधीजी ने कांग्रेस के संविधान को नया रूप दिया। गांव, गरीब, किसानों और मजदूरों के दिलों में कांग्रेस के लिए मजबूत आधार बनाया। कांग्रेस संगठन को रचनात्मक कामों से जोड़ा। छुआछूत और भेदभाव के खिलाफ मुहिम को कांग्रेस के मुख्य एजेंडे में शामिल किया। आप सभी को गर्व होना चाहिए कि कांग्रेस पार्टी के पास राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की विरासत है। हम लोग उनके उत्तराधिकारी है।बेलगाम सत्र की 100वीं वर्षगांठ मनाने के लिए गुरुवार को कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) की बैठक हुई, जिसका शीर्षक ष्नव सत्याग्रह बैठकष था, जहां महात्मा गांधी ने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की अध्यक्षता संभाली थी। यह ऐतिहासिक बैठक पार्टी के लिए 2025 में सामने आने वाली राजनीतिक और चुनावी चुनौतियों पर अपनी प्रतिक्रिया की रणनीति बनाने के लिए एक मंच के रूप में भी काम करती है।

अजमेरः दरगाह क्षेत्र में अतिक्रमण के खिलाफ निगम की बड़ी कार्रवाई

अजमेर (एजेंसी) अजमेर के ख्वाजा गरीब नवाज के 813वें उर्स की तैयारियां जोरों पर है। इसी बीच दरगाह क्षेत्र में गुरुवार को उस वक्त हड़कंप मच गया जब नगर निगम की टीम ने दरगाह थाना पुलिस के साथ मिलकर अवैध अतिक्रमण के खिलाफ अभियान चलाया। इस कार्रवाई का उद्देश्य नालियों और सड़कों पर हुए अवैध कब्जे को हटाना था, ताकि उर्स के मौके पर क्षेत्र में स्वच्छता और सुव्यवस्था बनी रहे। नगर निगम के अधिकारियों का कहना था कि सार्वजनिक स्थानों पर अवैध अतिक्रमण के कारण आम लोगों को काफी परेशानी हो रही थी। इस दौरान, जिन इलाकों में कार्रवाई की गई, उनमें दरगाह क्षेत्र के अंदरकोट, अढ़ाई दिन का झोपड़ा, दिल्ली गेट और अन्य प्रमुख इलाके शामिल थे। हालांकि, इस अभियान के दौरान कई दुकानदारों और स्थानीय लोगों ने विरोध किया, जिसके चलते पुलिस और लोगों के बीच झड़प भी हुई।

विजडम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, शनिवार 28 दिसंबर 2024
sheelshukla100@gmail.com

समाजवादी पार्टी ने शुरू किया पीडीए चर्चा कार्यक्रम

लखनऊ (संवाददाता)समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री नव्व अखिलेश यादव के निर्देश पर 26 दिसंबर 2024 से 25 जनवरी 2025 तक प्रदेश के सभी विधानसभा क्षेत्रों में सेक्टरवार पीडीए चर्चा कार्यक्रम की शुरुआत की गई। इस अभियान का उद्देश्य संविधान की रक्षा और बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों को जन–जन तक पहुंचाना है।इस अभियान के तहत पार्टी के सभी जनप्रतिनिधि, संगठन के पदाधिकारी और फ्रंटल संगठनों के सदस्य सक्रिय रूप से शामिल हैं। चर्चा के माध्यम से सामाजिक न्याय, आरक्षण, बेरोजगारी, महंगाई, जातीय जनगणना और स्थानीय मुद्दों पर मतदाताओं को जागरूक किया जा रहा है।अम्बेडकर नगर में टांडा विधानसभा के सेक्टर मुबारकपुर में विधायक नव्व राममूर्ति वर्मा की मौजूदगी में कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। इटावा में सांसद जितेंद्र दोहरे और जिलाध्यक्ष प्रदीप शाक्य सहित अन्य पदाधिकारियों ने भी बैठक में हिस्सा लिया। बहराइच में ग्राम पंचायत शेखदहीर में चौपाल का आयोजन किया गया, जिसमें ग्रामीणों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।चंदौली के चकिया और मुगलसराय विधानसभा क्षेत्रों में यह अभियान जोश के साथ आगे बढ़ा। गाजीपुर में जहुराबाद विधानसभा के माहेहु सेक्टर में आयोजित चर्चा में प्रमुख नेताओं ने भाग लिया। हमीरपुर के डेईडिल गांव में अम्बेडकर पार्क में चर्चा आयोजित की गई।सिद्धार्थनगर, मिर्जापुर, प्रयागराज, आजमगढ़ और लखीमपुर खीरी सहित कई जिलों में कार्यक्रम के दौरान पार्टी कार्यकर्ताओं ने संविधान और सामाजिक न्याय के प्रति जागरूकता फैलाने का आह्वान किया।समाजवादी पार्टी का यह पीडीए चर्चा अभियान समाज में समानता, न्याय और अधिकारों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल माना जा रहा है।

कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग की बैठक सम्पन्नरू भाजपा पर तीखे हमले और दलित अधिकारों पर जोर

लखनऊ (संवाददाता)लखनऊ में आज प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी अनुसूचित जाति विभाग की लखनऊ और फैजाबाद मंडल के प्रदेश पदाधिकारियों और जिलाध्शहर अध्यक्षों की एक अहम बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता विभाग के चेयरमैन और सांसद नव्व तनुज पुनिया ने की। बैठक का आरंभ बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुआ।बैठक में उपस्थित पदाधिकारियों और अध्यक्षों ने संगठन को अधिक प्रभावी और गतिशील बनाने के लिए अपने सुझाव प्रस्तुत किए। बैठक का संचालन अनुसूचित जाति विभाग लखनऊ के अध्यक्ष नव्व विषम सिंह ने किया। तनुज पुनिया ने अपने संबोधन में कार्यकर्ताओं को कांग्रेस संगठन की रीढ़ बताते हुए कहा कि संगठन को मजबूत करने में उनका योगदान सराहनीय है। उन्होंने दलित समाज के बुद्धिजीवियों और कांग्रेस विचारधारा में विश्वास रखने वाले लोगों को संगठन से जोड़ने का आह्वान किया।अपने संबोधन में पुनिया ने भाजपा पर तीखे हमले किए। उन्होंने कहा कि भाजपा द्वारा बाबा साहब अंबेडकर और भारतीय संविधान पर की जा रही गलत बयानबाजी को कतई बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने कहा, प्देश संविधान से चलेगा, मनु स्मृति से नहीं।ष उन्होंने गृह मंत्री अमित शाह की हालिया टिप्पणी को घृणित बताते हुए कहा कि इससे दलित समाज आहत और आक्रोशित है।उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा ने संविधान बदलने की साजिशें की हैं और केवल वोट बैंक की राजनीति के लिए दलित समाज का उपयोग करती है, जबकि उनके अधिकारों और सम्मान से उन्हें वंचित रखती है। पुनिया ने कहा कि दलित समाज कांग्रेस को अपना सच्चा हितैषी मानता है और कांग्रेस उनके अधिकारों की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध है।बैठक में कई वरिष्ठ नेता और पदाधिकारी मौजूद रहे, जिनमें पूर्व विधायक नव्व मीता गौतम, पूर्व राज्य मंत्री कमलेश भारती, और अनुसूचित जाति विभाग की प्रवक्ता नव्व सिद्धि श्री सहित अन्य प्रमुख नाम शामिल थे।यह बैठक कांग्रेस संगठन को और अधिक सशक्त बनाने और दलित हितों के प्रति कांग्रेस की प्रतिबद्धता को मजबूत करने के उद्देश्य से आयोजित की गई।

महाकुंभ-2025 में उत्तर प्रदेश स्टेट पवेलियन की स्थापना, प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर की झलक पेश करेगी

लखनऊ(संवाददाता) प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा महाकुंभ–2025 में लगभग 05 एकड़ में उत्तर प्रदेश स्टेट पवेलियन की स्थापना की जायेगी। पर्यटक यहां प्रदेश के महत्वपूर्ण पर्यटन स्थलों सहित अन्य आकर्षणों की झलक देख सकेंगे। हस्तशिल्प बाजार और सांस्कृतिक कार्यक्रम सहित कई अन्य आयोजन भी होंगे। पवेलियन में लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध हस्तशिल्प बाजार सजाई जायेगी। इसके अलावा धार्मिक स्थलों की झांकी भी प्रस्तुत की जायेगी।यह जानकारी प्रदेश के पर्यटन एवं संस्कृति मंत्री जयवीर सिंह ने देते हुए बताया कि प्रत्येक क्षेत्र में उत्तर प्रदेश की अपनी विशिष्टता है। धार्मिक–आध्यात्मिक, प्राकृतिक पर्यटन स्थलों के साथ–साथ यहां के व्यंजन, हस्तशिल्प, गीत और नृत्य पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। महाकुंभ–2025 में लगभग 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं के आने की संभावना हैं। इन्हें प्रदेश की प्रसिद्ध विरासत से परिचित कराने का प्रयास किया जा रहा है।पर्यटन मंत्री ने बताया कि महाकुंभ क्षेत्र सेक्टर 7 नागवासुकी मंदिर के समीप लगभग पांच एकड़ क्षेत्र में उत्तर प्रदेश स्टेट पवेलियन का निर्माण हो रहा है। उत्तर प्रदेश के 12 प्रमुख सर्किटों–रामायण सर्किट, कृष्ण ब्रज सर्किट, बुद्धिस्ट सर्किट, महाभारत सर्किट, शक्तिपीठ सर्किट, आध्यात्मिक सर्किट, सूफी–कबीर सर्किट, जैन सर्किट, बुंदेलखंड सर्किट, वाइल्ड लाइफ एवं ईको सर्किट, क्राफ्ट सर्किट, स्वतंत्रता संग्राम सर्किट के महत्वपूर्ण स्थलों को दर्शाया जाएगा। साथ ही, 15,000 स्क्वायर फीट के वृहद मानचित्र पर थ्री–डी तकनीक के माध्यम से अयोध्या, काशी, मथुरा, प्रयागराज, कुशीनगर, सारनाथ, नैमिषारण्य सहित अन्य महत्वपूर्ण स्थलों को दर्शाया जाएगा। इन स्थलों के महात्म्य के बारे में बताया जाएगा।जयवीर सिंह ने बताया कि प्रत्येक जिले की वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट (ओडीओपी) के लिए 75 स्टॉल लगाए जाएंगे। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए तीन मंच बनाए जाएंगे। खान–पान के 20 से अधिक स्टॉल लगेंगे, जहां स्थानीय के साथ–साथ विभिन्न प्रांतों के व्यंजन उपलब्ध कराए जाएंगे। पवेलियन में अलग–अलग सेल्फी प्वाइंट बनाए जाएंगे, जहां पर्यटक सेल्फी ले सकते हैं। उन्होंने बताया कि अबकी बार का महाकुम्भ पारम्परिक महाकुम्भ से कुछ अलग होगा, इसमें सुरक्षा के साथ साफ–सफाई एवं नये उपकरणों से पूरे मेला क्षेत्र की निगरानी की व्यवस्था की गयी है। प्रदेश के मुख्यमंत्री महाकुम्भ–2025 को भारत की सांस्कृतिक विविधिता, एकता, अध्यात्म को विश्व पटल पर पहुंचाना चाहते हैं। इस दृष्टि से इस बार का महाकुम्भ का आयोजन विशेष होने जा रहा है।

पेट्रोल बम से आगजनी करने वाले आरोपी गिरफ्तार, पुलिस ने भारी मात्रा में हथियार और वाहन बरामद किए

लखनऊ (संवाददाता)पुलिस ने रिटायर्ड फौजी पर जानलेवा हमला और पेट्रोल बम फेंककर आगजनी करने के आरोप में वांछित अभियुक्त मोहम्मद समीम को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने आरोपी के पास से एक तमंचा, दो खोखा कारतूस, दो जिंदा कारतूस और एक चार पहिया वाहन भी बरामद किया है।यह घटना 15ध्16 दिसंबर 2024 की रात को हुई थी, जब मोहम्मद समीम और योगेश यादव ने वादी मनोज कुमार पर जानलेवा हमला किया था। दोनों ने फायरिंग की और पेट्रोल बम फेंककर मनोज के घर में आगजनी कर दी थी। घटना के बाद आरोपी मौके से फरार हो गए थे।मोहम्मद समीम और योगेश यादव ने कई चोरी और नकबजनी की घटनाओं को अंजाम दिया था। योगेश यादव अपनी पहचान छिपाने के लिए फर्जी आधार कार्ड बनाकर कृष्णानगर क्षेत्र में किराए पर रह रहा था। इसके बाद दोनों आरोपी सीतापुर भाग गए थे, जहां उन्हें पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।मोहम्मद समीम ने बताया कि वह और योगेश यादव लंबे समय से आपराधिक गतिविधियों में संलिप्त थे। पुलिस ने आकाश गौतम नामक आरोपी को भी गिरफ्तार किया, जो कृष्णानगर की घटना में प्रयुक्त वाहन के साथ पकड़ा गया था।अभियुक्तों पर कई गंभीर अपराधों के मुकदमे दर्ज हैं। मोहम्मद समीम पर 23 और आकाश गौतम पर 10 आपराधिक मामले दर्ज हैं। योगेश यादव पर भी 13 मामले दर्ज हैं।पुलिस ने इस मामले में तेजी से कार्रवाई की है और अन्य आरोपियों की तलाश जारी है।

सहकारिता मंत्रालय द्वारा सहकार से समृद्धि योजना के अंतर्गत 10,000 नवगठित सहकारी समितियों का शुभारंभ

नई दिल्लीध्लखनऊ(संवाददाता),केन्द्रीय सहकारिता एवं गृहमंत्री श्री अमित शाह ने 25 दिसम्बर, 2024 को नई दिल्ली स्थित भारतरत्न सी0 सुब्रमण्यम सभागार, एन.ए.एस.सी. कॉम्प्लेक्स, आई.सी.ए.आर. पूसा में सहकारिता मंत्रालय द्वारा श्सहकार से समृद्धिश योजना के तहत 10,000 नवगठित बहुउद्देशीय पैक्स, डेंयरी और मत्स्य सहकारी समितियों का शुभारंभ किया। इस कार्यक्रम में केन्द्रीय मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री श्री राजीव रंजन उर्फ ललन सिंह और अन्य मंत्रीगण भी उपस्थित थे।सहकारिता मंत्रालय की इस पहल से सहकारिता क्षेत्र को मजबूत करने के लिए कई नई योजनाओं का आरंभ हुआ। प्रदेश स्तर पर लखनऊ में आयोजित कार्यक्रम में प्रदेश के सहकारिता मंत्री श्री जे.पी.एस. राठौर की अध्यक्षता में 5 बी–पैक्स, 11 दुग्ध और 10 मत्स्य नवगठित सहकारी समितियों को प्रमाण पत्र वितरित किए गए। इस दौरान अन्य समितियों को माइक्रो एटीएम, ऋण सीमा स्वीकृति प्रमाण पत्र भी दिए गए।कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों से चयनित समितियों को प्रशस्ति पत्र वितरित किए गए। इनमें बी–पैक्स, दुग्ध और मत्स्य समितियों के साथ ही प्रधानमंत्री जनऔषधि केन्द्र, एआईएफ, जन सेवा केन्द्र (सीएससी), एमएसएमई योजना और नैनो उर्वरक वितरण में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली समितियों को भी सम्मानित किया गया।इस अवसर पर सहकारिता मंत्रालय द्वारा सहकार से समृद्धि के तहत की गई योजनाओं की सफलता पर चर्चा की गई, और भविष्य में इन योजनाओं को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए उपायों पर विचार किया गया। कार्यक्रम में प्रदेश में सहकारिता विभाग की विभिन्न योजनाओं की उपलब्धियों को साझा किया गया।कार्यक्रम के संयोजक श्री बी.एन. सिंह, आयुक्त एवं निबन्धक, सहकारिता, उ0प्र0 ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और कार्यक्रम की रूपरेखा रखी। धन्यवाद प्रस्ताव श्री आनन्द कुमार, आईएएस, प्रबन्ध निदेशक पीसीडीएफ द्वारा दिया गया।

लखनऊ में सरकारी भूमि पर अतिक्रमण के खिलाफ बड़ी कार्रवाई

लखनऊ,(संवाददाता) लखनऊ मण्डलायुक्त महोदया एवं नगर आयुक्त इन्द्रजीत सिंह के नेतृत्व में सरकारी भूमि को अतिक्रमणमुक्त कराये जाने के अभियान के तहत आज एक बड़ी कार्रवाई की गई। इस कार्यवाही को सफल बनाने के लिए अपर नगर आयुक्त पंकज श्रीवास्तव द्वारा गठित टीम ने ग्राम–कल्ली पश्चिम और ग्राम हैवतमऊ मवैया, तहसील–सरोजनी नगर, जिला–लखनऊ में अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई की।इस कार्रवाई में नगर निगम और तहसील प्रशासन की संयुक्त टीम ने मौके पर जाकर सरकारी भूमि से अतिक्रमण हटाने का कार्य किया। टीम का नेतृत्व नायब तहसीलदार श्री नीरज कटियार ने किया, और इसमें उपजिलाधिकारी–सरोजनी नगर सचिन वर्मा, प्रभारी अधिकारी संपत्ति संजय यादव, तहसीलदार नगर निगम लखनऊ श्री अरविन्द पाण्डेय, तहसीलदार सरोजनी नगर श्रीमती आकृति श्रीवास्तव और अन्य अधिकारी शामिल रहे।इस टीम ने प्रापर्टी डीलरों द्वारा सरकारी भूमि पर की गई प्लाटिंग, अस्थाई बाउंड्रीवाल और सड़क जैसी रिहायसी संरचनाओं को जेसीबी मशीन की मदद से ध्वस्त कर दिया। थाना–पीजीआई द्वारा उपलब्ध कराए गए पुलिस बल और नगर निगम के प्रवर्तन दल के सहयोग से यह कार्रवाई बड़े पैमाने पर की गई।

लखनऊ पुलिस की बड़ी सफलता:मुठभेड़ में चार शातिर लुटेरे गिरफ्तार, लूट के सामान बरामद

लखनऊ(संवाददाता) पुलिस कमिश्नरेट के गोमतीनगर थाना क्षेत्र में पुलिस ने मुठभेड़ के दौरान चार शातिर लुटेरों को गिरफ्तार कर एक बड़ी सफलता हासिल की है। गिरफ्तार किए गए आरोपियों के पास से अवैध हथियार, लूटे गए नकदी और जेवरात, तथा एक चोरी की ब्रेजा कार बरामद की गई है। इस मुठभेड़ में दो लुटेरे घायल हो गए हैं, जिन्हें उपचार के लिए अस्पताल भेजा गया।26 दिसंबर 2024 को पुलिस ने मुखबिर से मिली जानकारी पर कार्रवाई करते हुए संदिग्ध ब्रेजा कार को रोकने की कोशिश की, लेकिन आरोपियों ने पुलिस पर फायरिंग शुरू कर दी। पुलिस ने आत्मरक्षार्थ गोली चलाई, जिससे दो आरोपियों के पैर में गोली लगी। इसके बाद पुलिस ने अन्य आरोपियों को भी गिरफ्तार कर लिया।गिरफ्तार आरोपियों में वीर यादव, अमन सिंह, करन सिंह और एक बाल अपचारी शामिल हैं। इन आरोपियों के खिलाफ दो लूट की वारदातों में शामिल होने का आरोप है, जिसमें पीड़ितों से जेवरात और नकदी लूटे गए थे। पुलिस ने घटना में शामिल कार, हथियार, नकदी, और अन्य लूटी हुई संपत्ति भी बरामद की है।अवैध हथियारों और लूट के सामान के साथ गिरफ्तार आरोपियों पर कई अन्य आपराधिक मामलों की जांच की जा रही है। पुलिस टीम ने इस मुठभेड़ में सूझबूझ और कड़ी मेहनत से यह बड़ी सफलता हासिल की है।

भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ अवध क्षेत्र की लखनऊ से अयोध्या तक भव्य पदयात्रा संपन्न

लखनऊ(संवाददाता) । भारतीय जनता पार्टी चिकित्सा प्रकोष्ठ अवध क्षेत्र ने भारत रत्न और पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जन्मशताब्दी के अवसर पर लखनऊ से अयोध्या तक भव्य पदयात्रा का आयोजन किया। यह पदयात्रा देवा रोड स्थित रघुराज वाटिका से आरंभ होकर अयोध्या तक पहुंची।भाजपा चिकित्सा प्रकोष्ठ अवध क्षेत्र के सहसंयोजक और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त होम्योपैथिक चिकित्सक डॉ. एसबी तिवारी ने बताया कि पदयात्रा का शुभारंभ सुबह 8 बजे बाबा रघुराज दास और उनके नेतृत्व में किया गया। इस यात्रा में लगभग एक हजार लोगों ने भाग लिया, जिनके हाथों में राम ध्वज लहराते हुए अयोध्या की ओर प्रस्थान किया गया।इस पदयात्रा में भाजपा के कई प्रमुख नेता और संत समुदाय के प्रतिनिधि शामिल हुए। मुख्य रूप से रामनिवास यादव (पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा लखनऊ), अरविंद यादव (उपाध्यक्ष भाजपा लखनऊ), महंत अनमोल दास, लल्ला बाबा, महंत गणपति दास, हंसराज यादव (पूर्व जिला मंत्री भाजपा), मोहन यादव, और नवल किशोर यादव ने सक्रिय भागीदारी की।पदयात्रा के दौरान रघुराज वाटिका से मटियारी चौराहे तक पहुंचने पर यह कल्याणम् हाउस में रुकी, जहां लल्ला बाबा और रघुराज बाबा का भरत मिलाप संपन्न हुआ। इसके बाद यात्रा अयोध्या के लिए रवाना हुई।डॉ. एसबी तिवारी ने बताया कि यह पदयात्रा अटल बिहारी वाजपेयी के जन्मदिवस और अयोध्या में राम मंदिर निर्माण की प्रेरणा से आयोजित की जाती है। उन्होंने कहा कि इस बार की पदयात्रा में दर्जनों महिलाओं के साथ–साथ चारपहिया वाहन और मोटरसाइकिलें भी शामिल थीं। सनातन धर्म के प्रचार–प्रसार और अटलजी की स्मृति को समर्पित यह यात्रा पिछले वर्ष से आयोजित की जा रही है।यह पदयात्रा सनातन संस्कृति और धार्मिक एकता के संदेश को फैलाने का प्रयास है। आयोजकों ने इसे सफल बनाने के लिए सभी प्रतिभागियों और सहयोगियों का आभार व्यक्त किया।

महाकुंभ 2025 की तैयारियों पर अखिलेश यादव का भाजपा सरकार पर निशाना

लखनऊ (संवाददाता)समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री नव्व अखिलेश यादव ने भाजपा सरकार पर 'प्रयागराज महाकुंभ 2025' की तैयारियों को लेकर गंभीर सवाल उठाए हैं। उन्होंने कहा कि महाकुंभ जैसे बड़े आयोजन की तैयारियों में लापरवाही सामने आ रही है। पुलिस विभाग का सुरक्षा चक्र का प्रबंधन बहुत पहले ही पूरा हो जाना चाहिए था, क्योंकि यह किसी अंतिम समय की प्रतीक्षा नहीं करता।

अखिलेश यादव ने कहा कि प्रयागराज की जनता पूछ रही है कि भाजपा सरकार ने महादानी सम्राट हर्षवर्धन की प्रतिमा हटाने में तो तत्परता दिखाई, लेकिन प्रशासनिक प्रबंधन में वही तेजी क्यों नहीं दिखाई गई। उन्होंने कहा कि महाकुंभ और मेला क्षेत्र के आसपास की स्थानीय जनता की जरूरतों और समस्याओं को अनदेखा करना गलत है और इन शिकायतों का तुरंत समाधान किया जाना चाहिए।उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि किसी आपातकालीन स्थिति में आवागमन और परिवहन के लिए वैकल्पिक व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। अखिलेश यादव ने कहा, ष्हम चाहते हैं कि महाकुंभ भी सफलतापूर्वक संपन्न हो और प्रयागराज भी गतिमान बना रहे।ष्उन्होंने तंज करते हुए कहा कि यदि भाजपा सरकार महाकुंभ की तैयारियों में विफल हो गई है, तो समाजवादी पार्टी अपने सच्चे और समर्पित कार्यकर्ताओं को सहायता के लिए भेजने का प्रस्ताव रखती है। उन्होंने भाजपा पर आरोप लगाते हुए कहा कि उनके नेता केवल खाने–कमाने या चुनावी जोड़–तोड़ में व्यस्त हैं।महाकुंभ 2025 की तैयारियों को लेकर अखिलेश यादव का यह बयान प्रशासन को सतर्कता और सक्रियता का संदेश है।

उप मुख्यमंत्री ने अटल जी की शताब्दी पर आयोजित समारोह में उनकी जीवन गाथा को सराहा

लखनऊ (संवाददाता)उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने बुधवार को वाराणसी के भारतीय शिक्षा मंदिर विद्यालय में आयोजित भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की जन्म शताब्दी समारोह में भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने अटल जी के स्मृति चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की और उनके जीवन से जुड़ी प्रदर्शनी का उद्घाटन कर उसका अवलोकन किया।उप मुख्यमंत्री मौर्य ने कहा कि अटल जी का जीवन और उनका कार्यकाल हम सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत है। वे महान राष्ट्रवादी विचारक, युगदृष्टा, प्रखर वक्ता और सुशासन के संवाहक थे। उन्होंने अटल जी की कविताओं और जीवन गाथा को पूरे देश के लिए प्रेरणादायक बताया और कहा कि अटल जी द्वारा रखी गई आधारशिला पर आज देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में नव निर्माण हो रहा है।श्री मौर्य ने अटल जी के सिद्धांतों को आत्मसात करने की आवश्यकता पर बल दिया और बताया कि अटल जी ने सुशासन के लक्ष्यों को कैसे प्राप्त किया, इसे देशभर में उदाहरण के रूप में अपनाया जा रहा है। उन्होंने इस वर्ष को अटल जी का जन्म शताब्दी वर्ष बताया और कहा कि इस दिन को श्सुशासन दिवसश के रूप में मनाया जा रहा है।इसके बाद, उप मुख्यमंत्री श्री मौर्य लखनऊ स्थित दिलकुशा लॉन में आयोजित स्वास्थ्य मेले के कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। इस अवसर पर उन्होंने दिव्यांग जनों को साइकिल और अन्य लाभार्थियों को मोबाइल वितरित किए। उन्होंने विभिन्न इलाज से संबंधित कैंपों का भी अवलोकन किया।

बादशाहनगर रेलवे स्टेशन का हो रहा विकास, अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत उपलब्ध होंगी विश्वस्तरीय सुविधाएं

लखनऊ,(संवाददाता) पूर्वोत्तर रेलवे पर अमृत भारत स्टेशन योजना के अंतर्गत रेलवे स्टेशनों पर विश्वस्तरीय यात्री सुविधाएं उपलब्ध कराने का कार्य तेजी से किया जा रहा है। इस योजना में दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ स्टेशनों का विकास किया जा रहा है।इसी क्रम में, लखनऊ मण्डल के बादशाहनगर रेलवे स्टेशन को अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत रुपये 31.13 करोड़ की लागत से अपग्रेड किया जा रहा है। इस परियोजना में स्टेशन की पुरानी सुविधाओं को न केवल अपग्रेड किया जा रहा है, बल्कि नई सुविधाओं को भी जोड़ा जा रहा है।इसके अंतर्गत बादशाहनगर स्टेशन के मुख्य प्रवेश द्वार के सरकुलेटिंग एरिया का विकास किया जाएगा, और स्थानीय कला एवं संस्कृति को ध्यान में रखते हुए स्टेशन का सुंदरीकरण किया जाएगा। इसके अलावा, प्लेटफार्म का अपग्रेडेशन, स्टेशन फसाड का निर्माण, उन्नत लाईटिंग, कोच गाइडेंस सिस्टम, ट्रेन डिस्प्ले बोर्ड, डिजिटल घड़ियाँ, यात्री उद्घोषणा प्रणाली, सोलर प्लांट, वाटर कूलर, एयर कंडीशनर, एलईडी स्टेशन नाम पट्टिकाएं और यात्री सुविधाओं से संबंधित ग्लोसाइन बोर्ड (साइनएज) जैसी सुविधाएं भी स्टेशन में उपलब्ध कराई जाएंगी।इस योजना के तहत, 12 मीटर चौड़ा पैदल उपरिगामी पुल (एफ.ओ.बी.) का निर्माण, स्टेशन पर यात्री प्रतीक्षालय और शौचालयों का आधुनिकीकरण, और 03 लिफ्ट व 02 सेट एस्केलेटर लगाने जैसे कार्य भी किए जा रहे हैं।वर्तमान में, बादशाहनगर रेलवे स्टेशन पर सेकंड इंट्री साइड का सर्कुलेटिंग एरिया, पार्किंग, एप्रोच रोड, स्टेशन भवन पाथवे, लैंडस्केपिंग, फसाड, पोर्च, वेटिंग हाल और प्रसाधन ब्लॉक सहित पीआरएस काउंटर का निर्माण कार्य शत प्रतिशत पूर्ण हो चुका है। प्लेटफार्म नंबर 04 पर पीपी शेल्टर लगाने का कार्य तेजी से चल रहा है।इस निर्माण कार्य की लक्ष्य तिथि 31 मार्च 2025 तक है, जबकि एफ.ओ.बी. के निर्माण कार्य की लक्ष्य तिथि 30 सितम्बर 2025 है।

अटल और सुशासन पर संगोष्ठी का आयोजन

लखनऊ(संवाददाता) उत्तर प्रदेश सिंधी अकादमी द्वारा भारत रत्न श्री अटल बिहारी वाजपेयी के जन्म शताब्दी वर्ष के अंतर्गत 26 दिसम्बर, 2024 को ''अटल जी एवं सुशासन–सिंधी संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में'' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन अकादमी कार्यालय, इन्दिरा भवन, लखनऊ में किया गया।कार्यक्रम की शुरुआत भगवान झूलेलाल की प्रतिमा पर माल्यार्पण से हुई, जिसमें श्री नानक चन्द लखमानी, पूर्व उपाध्यक्ष, उ0प्र0 सिंधी अकादमी, दुनीचन्द, सिंधी विद्वान, प्रकाश गोधवानी, डॉ. अनिल चन्दानी और कनिका गुरूनानी ने सहभागिता की।कार्यक्रम के मुख्य वक्ता श्री प्रकाश गोधवानी ने अटल जी के प्रधानमंत्री कार्यकाल में किए गए सुशासन के महत्व को रेखांकित करते हुए बताया कि उनकी कार्यशैली आज भी प्रेरणास्त्रोत है। उन्होंने अटल जी की कविता ष्गीत नया गाता हूँष के कुछ महत्वपूर्ण पंक्तियां भी प्रस्तुत की, जिनमें ष्हार नहीं मानूंगा, रार नई ठानूंगाष जैसे उदात्त विचारों को साझा किया।वक्ता दुनीचंद चंदानी ने अटल जी के विशाल व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और कहा कि अटल जी का नेतृत्व हमेशा मार्गदर्शक बना रहेगा। श्री सुधामचंद चंदवानी ने सिंधी भाषा को राज भाषा का दर्जा देने के समय अटल जी द्वारा दिए गए भाषण का सार प्रस्तुत करते हुए बताया कि अटल जी हिंदी को अपनी मां और सिंधी भाषा को अपनी मौसी मानते थे।कार्यक्रम की समापन के दौरान कनिका गुरूनानी ने अटल जी की वक्तृत्व कला और उनके हाजिर जवाबी की सराहना करते हुए कहा कि वह अपनी बातों से हर किसी को मंत्र–मुग्ध कर देते थे।

लखनऊ पुलिस की बड़ी कार्रवाई:दो वांछित अभियुक्तगिरफ्तार, सड़क दुर्घटना में एक व्यक्तिकी मौत

लखनऊ(संवाददाता) लखनऊ पुलिस कमिश्नरेट ने 25 और 26 दिसंबर 2024 को विभिन्न थाना क्षेत्रों से दो वांछित अभियुक्तों को गिरफ्तार किया। कृष्णानगर थाना क्षेत्र में पंजीकृत एक मामले में मो. समीम और आकाश गौतम को गिरफ्तार किया गया। इन दोनों अभियुक्तों के खिलाफ मु0अ0सं0–589ध्2024 धारा 296ध्109ध्122ध्326ध्351 (2) बीएनएस के तहत मामला दर्ज था।इसके साथ ही थाना दुबग्गा क्षेत्र में एक सड़क दुर्घटना में एक व्यक्ति की मौत हो गई। वादी श्री लव कुमार सैनी ने पुलिस को सूचित किया कि उनके चाचा घनसिंह, जो एक ट्रक चालक थे, झाखरबाग अंडरपास पर अपनी गाड़ी चेक कर रहे थे। तभी पीछे से तेज गति से आ रहे कन्टेनर वाहन ने उनके ट्रक में टक्कर मार दी। इस हादसे में घनसिंह की मौके पर ही मौत हो गई और उनका ट्रक भी क्षतिग्रस्त हो गया।इस दुर्घटना में कन्टेनर चालक निर्मल को भी चोटें आईं, जिन्हें इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और आवश्यक वैधानिक कार्यवाही की जा रही है।

विजडम इण्डिया
R.N.I.NO.-UPHIN/2011/41608
हिन्दी दैनिक समाचार पत्र
लखनऊ, शनिवार 28 दिसंबर 2024
sheelshukla100@gmail.com

मण्डलायुक्तने चौदह कोसी व पंचकोसी परिक्रमा मार्ग के प्रगति किया समीक्षा

-अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराये जाने का दिया दिशा निर्देश

अयोध्या। मण्डलायुक्त गौरव दयाल की अध्यक्षता में निर्माणाधीन 14 कोसी व पंचकोसी परिक्रमा मार्ग की प्रगति एवं महाकुंभ 2025 के दृष्टिगत अयोध्या आने वाले श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराये जाने हेतु की जा रही तैयारियों की समीक्षा हेतु एक आवश्यक बैठक अयोध्या विकास प्राधिकरण के सभागार में आयोजित की गयी, जिसमें पुलिस महानिरीक्षक प्रवीण कुमार, जिलाधिकारी चन्द्र विजय सिंह, एस0एस0पी0 राजकरन नैय्यर, उपाध्यक्ष अयोध्या विकास प्राधिकरण अश्विनी कुमार पांडेय, नगर आयुक्त संतोष कुमार शर्मा सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।मण्डलायुक्त ने कहा कि परिक्रमा मार्ग निर्माण में जो भी बाधाएं अवशेष है उनके निस्तारण हेतु चौनेज वाइज टीम जिसमें डिप्टी कलेक्टर, तहसीलदार, नायब तहसीलदार कानूनगो व लेखपाल तथा लोक निर्माण विभाग के ए0ई0 व जे0ई0 हों,की ड्यूटी लगाकर सभी बाधाओं का निस्तारण शीघ्र किया जाय तथा इसकी मॉनीटरिंग नियमित हो और मेरे द्वारा भी कार्यो की समीक्षा प्रत्येक सप्ताह में की जायेगी। उन्होंने कहा कि परिक्रमा मार्ग निर्माण के दौरान जिन–जिन स्थानों पर पूर्व में निर्मित नाले क्षतिग्रस्त होने के कारण जलभराव की समस्या हो रही हो उनका तत्काल अस्थायी समाधान सभी सम्बंधित करवायें। उन्होंने कहा कि निर्माणाधीन रिंग रोड व 84 कोसी परिक्रमा मार्ग के प्रगति की भी समीक्षा नियमित की जाय। पुलिस महानिरीक्षक प्रवीण कुमार ने कहा कि आगामी दिनों में महाकुंभ 2025 व प्रान्तीयकृत मकर संक्रांति मेला के अवसर पर लाखों श्रद्धालु सरयू में स्नान करने हेतु आयेंगे, इस हेतु पूर्व से ही घाटों की साफ सफाई व घाटों पर सुरक्षा के दृष्टिगत सभी तैयारियां कर लिया जाय। जिलाधिकारी चन्द्र विजय सिंह ने कहा कि निर्माणाधीन 14 कोसी व पंचकोसी परिक्रमा मार्ग के निर्माण में आ रही बाधाओं के निस्तारण हेतु गठित टीम आपसी समन्वय के साथ कार्य को पूर्ण करायें तथा बैठक में जो भी निर्देश दिये जाए उसका अनुपालन समी संबंधित करते हुए अवगत करायें। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक राजकरन नैय्यर ने कहा कि सरयू घाटध्स्नान घाट पर किन्हीं किन्हीं स्थानों पर लाइट की व्यवस्था की आवश्यकता है इसके लिए सम्बंधित अधिकारी उक्त स्थान पर लाइट की व्यवस्था सुनिश्चित करायें। बैठक में अपर जिलाधिकारी नगर सलिल कुमार पटेल, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व महेन्द्र कुमार सिंह, अपर जिलाधिकारी प्रशासन अनिरुद्ध प्रताप सिंह, अपर जिलाधिकारी एल0ए0, उपजिलाधिकारी सदर, मुख्य अभियन्ता लोक निर्माण विभाग सहित अधिशाषी अभियन्ता, अवर अभियन्ता व अन्य उपस्थित रहे। बैठक के उपरांत मण्डलायुक्त गौरव दयाल ने जिलाधिकारी चन्द्र विजय सिंह व उपाध्यक्ष अयोध्या विकास प्राधिकरण अश्विनी कुमार पांडेय के साथ निर्माणाधीन अयोध्या विकास प्राधिकरण एवं अयोध्या नगर निगम कार्यालय भवन के कार्यो का निरीक्षण किया। इस दौरान उपाध्यक्ष अयोध्या विकास प्राधिकरण द्वारा अवगत कराया गया कि भवन की पहली, दूसरी व तीसरी मंजिल के फ्लोर का कार्य पूर्ण कर लिया गया है तथा चौथे मंजिल पर स्ट्रक्चर का कार्य और ब्रिकवर्क ,फायर फाइटिंग के कार्य भी प्रगति पर है।

मिल्कीपुर उपचुनाव को लेकर सक्रिय हुई सुभासपा

-पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर मिल्कीपुर में करेंगे जनसभा

अयोध्या। मिल्कीपुर विधान सभा उपचुनाव को लेकर सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के कार्यकर्ताओं ने भी तैयारियां तेज कर दी है। पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व प्रदेश के पंचायती राज्यमंत्री ओम प्रकाश राजभर के मिल्कीपुर विधानसभा क्षेत्र में होने वाले कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष अमरमणि कश्यप, मंडल अध्यक्ष संत रमाकांत शर्मा, जिला अध्यक्ष डॉ. जेपी सेन विधानसभा अध्यक्ष सूरज शर्मा विपिन दुबे उर्फ विक्की क्षेत्र का लगातार दौरा कर रहे है। मंगलवार को वह समाजसेवी राजन पाण्डेय के कुमारगंज आवास पर भी पहुंचे और कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए उनसे आग्रह किया जिसपर समाजसेवी ने उन्हें भरोसा दिलाते हुए कहा कि बैकवर्ड समाज के लिए जो काम सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ओम प्रकाश राजभर कर रहे हैं वह प्रदेश का कोई भी नेता नहीं कर रहा है। ओम प्रकाश राजभर विधानसभा से लेकर लोकसभा तक पिछड़ों की आवाज बुलंद कर रहे हैं, वह हमेशा सच्चाई की आवाज को बुलंद करते हैं जो सही होता उसको बोलने में हिचकते नहीं है ऐसे नेता को आगे बढ़ना चाहिए और उनका साथ देना चाहिए इससे ही सर्व समाज का भला होगा। समाजसेवी राजन पाण्डेय ने क्षेत्र के लोगों से ओम प्रकाश राजभर की बातों को सुनने के लिए कलुआमऊ डिग्री कॉलेज पहुंचने को अपील करते हुए पार्टी फंड के लिए 2100 रूपये का चेक भी प्रदेश अध्यक्ष को दिया। उन्होंने कहा कि यह गरीबों और पिछड़ों की पार्टी है इसमें हमसबको थोड़ा–थोड़ा करके मदद करनी चाहिए जिससे पिछड़ो वर्ग के लोगों की आवाज को बुलंद किया जा सके। इस मौके पर समाजसेवी द्वारा प्रदेश अध्यक्ष, मंडल अध्यक्ष और जिला अध्यक्ष का शाल ओढ़ाकर स्वागत किया गया।

'वर्ल्ड रिकार्ड अ फ एक्सीलेन्स से सम्मानित हुई आर्यमा शुक्ला

विभिन्न धर्मावलम्बियों की उपस्थिति से 'सर्वधर्म समभाव' की भावना से ओतप्रोत हुआ वातावरण

लखनऊ, 27 दिसम्बर। सिटी मोन्टेसरी स्कूल, अलीगंज द्वितीय कैम्पस की 9 वर्षीय छात्रा आर्यमा शुक्ला को उसकी अद्भुद स्मरणशक्ति व धर्मग्रंथो के गहरे ज्ञान हेतु एक भव्य सम्मान समारोह में 'वर्ल्ड रिकार्ड ऑफ एक्सीलेन्स' से नवाजा गया। आज विद्यालय परिसर में आयोजित भव्य सम्मान समारोह में वर्ल्ड रिकार्ड ऑफ एक्सीलेन्स, इंग्लैण्ड के प्रतिनिधि एवं भारत में वर्ल्ड रिकार्ड ऑफ एक्सीलेन्स के वाइस प्रेसीडेन्ट श्री संजय पंजवानी एवं भारत सरकार में एजूकेटर व मेंटर श्री शिवशंकर शुक्ला आर्यमा को मेडल एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर विभिन्न धर्मावलम्बियों जैसे हिन्दू धर्म से सर्वश्री अरविन्द शाष्त्री जी, कथा व्यास एवं डा. अनुराग पाठक, जैन धर्म से डा. शैलेन्द्र जैन, मुस्लिम धर्म से मौलाना डा. कल्बे सिब्तेन नूरी, श्री कब्बे हुसैन एवं श्री नजमूल हसन रिजवी आदि की उपस्थिति से सम्पूर्ण वातावरण 'सर्वधर्म समभाव' की भावना से ओतप्रोत नजर आया। इन प्रख्यात धर्मावलम्बियों ने आर्यमा को आशीर्वाद देते हुए उसके उज्जवल भविष्य की कामना की।

विदित हो कि बहुमुखी प्रतिभा की धनी 9 वर्षीय सी.एम.एस. छात्रा आर्यमा शुक्ला ने संस्कृत भाषा के ज्ञान, अद्भुद स्मरणशक्ति व धर्मग्रंथो के वाचन में प्रवीणता अर्जित कर लखनऊ का गौरव सारे विश्व में बढ़ाया है। आर्यमा ने गीता जयन्ती के अवसर पर मात्र 2 घंटे 10 मिनट में सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत् गीता का सस्वर गायन कर एक अनूठा कीर्तिमान अपने नाम किया है। इसी अभूतपूर्व उपलब्धि हेतु आर्यमा को आज 'वर्ल्ड रिकार्ड ऑफ एक्सीलेन्स' से नवाजा गया। सी.एम.एस. संस्थापिका–निदेशिका डा. भारती गांधी ने इस अवसर पर उपस्थित विभिन्न धर्मावलम्बियों व गणमान्य अतिथियों का हार्दिक स्वागत करते हुए कहा कि आर्यमा की इस उपलब्धि पर सी.एम.एस. परिवार गौरवान्वित हैडा. गांधी ने विद्यालय के शिक्षकों का भी आभार व्यक्त किया जो छात्रों की रूचियों को पहचान कर उन्हें उनकी रूचि के क्षेत्रों में बढ़ावा देने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं।

निर्माणधीन मकान स्वामी के पुत्र ने की मजदूर महिला की हत्या

(गोवर्धन)(ए.के.शर्मा) चार दिन पूर्व थाना गोवर्धन के ग्राम महरौली में निमार्णाधीन मकान में मजदूरी को गयी महिला की हत्या मकान स्वामी के बेटे ने ही की थी। पुलिस ने आरोपी को आज गिरफ्तार कर लिया है।ज्ञात रहे कि गत 23 दिसंबर को महरौली गांव के खेत में महिला का शव पड़ा हुआ था। महिला अपने मायके में रहकर मजदूरी आदि कर जीवनयापन कर रही थी। इस मामले में मृतका के पति सूखराम पुत्र महीपाल निवासी सोनेरा कुम्हेर ने रिपोर्ट दर्ज कराई थी। इस मामले में पुलिस ने हरीश उर्फ हरेन्द्र पाल सिंह पुत्र कृष्णमुरारी निवासी ग्राम महरौली को गिरफ्तार किया है। मृत महिला जिस निमार्णाधीन मकान में मजदूरी करने जाती थी, आरोपी उसी मकान स्वामी का पुत्र है। आरोपी ने मृतका की गरीबी का फायदा उठाकर उसे मजदूरी के पैसे देने के लिए एकांत में बुलाकर शारीरिक सम्बन्ध बनाने के लिए कहा। जब मृतका ने मना करते हुये अपनी मजदूरी के तय रुपये मांगे तो आरोपी ने पैसे देने से मना कर दिया और मृतका के साथ जबरदस्ती शारीरिक सम्बन्धा बनाने का दबाव बनाने लगा। इस पर मृतका द्वारा उसकी हरकतों को गांव में बताने की बात कही तो गुस्से में आकर डर कर आरोपी ने महिला के गले में पड़े दुपट्टे से उसका गला दबा दिया जिससे वह बेहोश हो गयी और फिर उसने महिला के सिर पर सीमेन्ट की ईंट मारकर उसकी हत्या कर दी। गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम में प्रभारी निरीक्षक विनोद बाबू मिश्रा, एसओजी प्रभारी राकेश यादव, सर्विलांस प्रभारी विकास शर्मा, उपनिरीक्षक विपिन कुमार व पुलिसबल शामिल रहा।

दिव्य कवि सम्मेलन में दिव्यांगो ने अपनी प्रतिभा का किया प्रदर्शन

अयोध्या। दिव्यांगजनों को मंच प्रदान करने, स्वावलंबन व आत्मविश्वास बनाने हेतु दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग व जिला प्रशासन व साकेत महाविद्यालय के संयुक्त तत्वाधान में चल रही तीन दिवसीय दिव्य कला समागम के दूसरे दिन दिव्यांगजनों द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों,खेलकूद प्रतियोगिताओं व दिव्य कवि सम्मेलन में अपने प्रतिभा का बखूबी प्रदर्शन किया गया। सांस्कृतिक कार्यक्रम में मुख्य रूप से बचपन डे केयर सेंटर अयोध्या, लोक जागृति संस्थान अंबेडकर नगर, मनोजागृति स्पेशल स्कूल वाराणसी, वाणी विकलांग सेवा संस्थान, सोशल इनफॉर्मेटिव सोशल हार्मनी अकैडमी, जन चेतना संस्थान, ग्रामोदय विकास संस्थान, अखिल भारतीय विकलांग कल्याण समिति अयोध्या के दिव्यांगजनों एवं दिव्यांग छात्राओं ने अपने शानदार प्रस्तुति से कार्यक्रम में चार चाँद लगा दिया। दिव्यांग विद्यार्थियों, नई सुबह संस्था व साकेत महाविद्यालय के छात्रों ने भगवान राम कृष्ण के भक्ति गीतों से लोगों को सराबोर किया तथा विभिन्न गानों पर एकल एवं सामूहिक नृत्य का प्रदर्शन कर लोगों से खूब प्रशंसा प्राप्त किया।100 मीटर दौड़ में बचपन डे केयर अयोध्या के रोहन यादव प्रथम जान्हवी व्दितीय व शिवा तृतीय स्थान पर विजयी रहे। दूसरे दौड़ प्रतियोगिता अखिल भारतीय विकलांग कल्याण समिति अयोध्या के पीयूष मिश्रा प्रथम, आदित्य गुप्ता व्दितीय एवं जितेंद्र सोनी तृतीय स्थान प्राप्त किया। मनोज जागृति संस्थान वाराणसी के दीपांशु प्रथम, दीपक व्दितीय व गुरु तृतीय स्थान पर विजय रहे। म्यूजिकल चेयर प्रतियोगिता में बचपन देखे के शिवा, मनोज जागृति संस्थान के अर्चना गौतम विजयी रहे। नीबू चम्मच दौड़ में अर्चना गौतम प्रथम नाम दीपांशु व्दितीय स्थान पर रहे।दिव्य कवि सम्मेलन में दिल्ली के चंद्रवीर, मथुरा के राम खिलाडी स्वदेशी, प्रदीप गंगवाल लखनऊ, अकबर ताज खंडवा मध्य प्रदेश, नागेश पाण्डेय लखनऊ एवं उत्तर प्रदेश के प्रख्यात मानसिक रोग विशेषज्ञ डॉ जे के वर्मा ने प्रमुख रूप से काव्य पाठ किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करने वाले दिव्यांगजन, खेलकूद प्रतियोगिता में विजेता दिव्यांगजनों तथा दिव्य कविजनों को अनुपमा मौर्या उपनिदेशक दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग अयोध्या, जिला दिव्यांगजन सशक्तिकरण अधिकारी अयोध्या चंद्रेश त्रिपाठी, नई सुबह संस्था के संस्थापक अध्यक्ष डॉ अजय तिवारी, वरिष्ठ मनोवैज्ञानिक डॉ मनोज कुमार तिवारी, सुनीता तिवारी पुष्पगुच्छ व स्मृति चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। उपनिदेशक दिव्यांगजन सशक्तिकरण विभाग अयोध्या श्रीमती अनुपम मौर्या ने दिव्य कला समागम में संस्थाओं एवं प्रकाशन केंद्रोंद्वारा लगाए गए स्टॉल का अवलोकन किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में आजाद तिवारी, डॉ आदित्य तिवारी, डॉ अमित तिवारी, राजीव कुमार सिन्हा, गौरव चक्रवर्ती की महत्वपूर्ण भूमिका रही। प्रो हिमांशु शेखर झा मुख्य राज्य आयुक्त दिव्यांगजन उत्तर प्रदेश की विशेष उपस्थिति रही। प्रो हिमांशु कल समापन समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। कार्यक्रम का संचालन साक्षी बुधौलिया तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ अजय तिवारी ने किया।

'पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी बाजपेई के जन्मदिवस पर खेल कूद प्रतियोगिता का हुए आयोजन''

शाहजहांपुरएजेंसी। नेहरू युवा केंद्र के तत्वावधान में क्लस्टर स्तरीय दो दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के जन्म दिवस के अवसर पर विनोबा भावे इंटर कॉलेज कांट के प्रांगण में किया गया जिसका उद्घाटन विधायक अरविंद सिंह ने अटल बिहारी वाजपेई के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए एवं वॉलीबॉल का शुभारंभ वाली मारते हुए खिलाड़ियों का परिचय प्राप्त कर किया उन्होंने अपने उद्बोधन में युवाओं को उत्साहवर्धन करते हुए कहा कि आप कभी भी कोई भी बड़ा टूर्नामेंट कराएं हम आपका पूर्ण सहयोग करेंगे साथ ही अपने विधानसभा क्षेत्र में एक स्टेडियम का निर्माण कराने का आश्वासन भी दिया आज प्रथम दिवस वॉलीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन हुआ जिसमें कांट रावतपुर, केएसएफएल पिपरोला, महमदपुर आजमाबाद, बरनावा, शुभम एकेडमी कांट, जरावन बरी खास आदि टीमों ने प्रतिभा किया बड़े ही रोमांचक ढंग से मैच खेला गया जिसमें फाइनल मैच रेड रोज क्लब कांट एवं केएसएफएल पिपरोला के बीच खेला गया जो की रेड रोज क्लब कांट टीम विजेता व केएसएफएल पिपरौला उपविजेता रही कल इसी प्रांगण में बालक वर्ग 500 मीटर दौड़ व कुश्ती एवं बालिका वर्ग में कबड्डी साइकिल रेस, 400 मीटर दौड़, का आयोजन किया जाएगा कार्यक्रम उपरांत सभी विजेता उपविजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण एवं प्रमाण पत्र वितरण किया जाएगा आज के कार्यक्रम में वरिष्ठ खिलाड़ी वॉलीबॉल से सुमेरमल वर्मा एवं स्टेट खिलाडी संजीव कुमार मिश्रा, अरविन्द कुमार मिश्रा, ओमप्रकाश वर्मा हिमांशु गुप्ता तथा नेहरू युवा केंद्र से हिमांशु एवं हरिशंकर आदि लोग उपस्थित रहे कार्यक्रम के सहयोग में विवेक कुमार, हर्ष मिश्रा, अर्पित, अभिषेक, नितिन, प्रांशु, विमल कुमार आदि लोगों का रहा कार्यक्रम के अंत में युवा सामाजिक कार्यकर्ता कुंवर मुनीश सिंह परिहार (एड.) ने सभी का आभार व्यक्त किया।

21.48 करोड़ की लागत से दो साल मे तैयार होगा एमवीडीए का चार मंजिला कार्यालय

(मथुरा)(ए.के.शर्मा)

मथुरा वृंदावन विकास प्राधिकरण के चार मंजिला नवीन कार्यालय भवन की शुक्रवार को आधारशिला रखी गई। इसका भूमि पूजन करते हुए उपाध्यक्ष एसबी सिंह ने कहा कि विकास प्राधिकरण का यह नवीन कार्यालय भवन आधुनिक सुविधायुक्त होगा, जो दो वर्ष में करीब 21.48 करोड़ की लागत से तैयार किया जाएगा। सिविल लाइन स्थित मथुरा वृंदावन विकास प्राधिकरण के नवीन कार्यालय भवन का निर्माण कार्य अब शुरु हो गया। इस दौरान निर्माण स्थल पर भूमि पूजन उपाध्यक्ष एसबी सिंह, सचिव अरविंद कुमार द्विवेदी, ओएसडी प्रसून द्विवेदी, अधिशासी अभियंता प्रशांत गौतम ने विधिवत रूप से किया। इस दौरान उपाध्यक्ष एसबी सिंह ने बताया कि कार्यालय भवन के निर्माण पर 21.48 करोड़ की लागत आएगी। यह चार मंजिल का होगा। दो मंजिल बेसमेंट भी रहेगा, जिसका उपयोग पार्किंग और कैंटीन के लिए किया जाएगा। सभी चार मंजिल यहाँ आने वाले लोगों की सुविधाओं को ध्यान रखते हुए तैयार किए जाएंगे। भूतल पर मीटिंग रूम, राजस्व रूम, विधिक रूम, मेप रूम, रिकॉर्ड रूम और जनसुनवाई कार्यालय का निर्माण किया जाना है। इसके ऊपर प्रथम तल पर टीपी एटीपी रूम, अकाउंट पटल, अवर अभियंता पटल संपत्ति पर अवैध निर्माण के साथ पेंट्री व स्टोर रूम भी बनाया जाएगा। उन्होंने ने बताया कि द्वितीय तल पर उपाध्यक्ष, सचिव, ओएसडी, मुख्य अभियंता, अधिशासी अभियंता कक्ष के साथ कांफ्रेंस रूम और मीटिंग हॉल बनाया जाएगा। तृतीय तल पर सहायक और अवर अभियंता कक्ष रहेंगे। एसबी सिंह ने बताया कि चतुर्थ तल पर लाइब्रेरी और सर्वर रूप रहेगा। सभी तल पर पहुंचने के लिए चार लिफ्ट और मैकेनिज्म कार पार्किंग बनाई जाएगी। प्रत्येक तल पर टायलेट ब्लाक रहेगा। यह कार्यालय भवन करीब दो साल में बनकर तैयार होगा। इस मौके पर सहायक अभियंता सुनील अग्रवाल, अवर अभियंता विमल कोहली आदि मौजूद रहे।

नया सालः भीड नियंत्रण, भगदड रोकने को संयुक्त पूर्वाभ्यास

-अग्निकांड, भगदड़ व डूबने के परिदृश्य पैदा कर किये गये बचाव कार्य

(मथुरा)(ए.के.शर्मा) इन दिनों समूचे ब्रज में भीड़ का बेजा दबाव बना हुआ है। आगामी कुछ दिनों यह दबाव और बढेगा। खास कर वृंदावन सहित दूसरे प्रमुख स्थलों पर अनुमान से अधिक भीडभाड होने की संभावना जताई जा रही है। एक अनुमान के तहत 80 लाख से एक करोड तक लोग नए साल पर मथुरा जनपद के विभिन्न धार्मिक स्थलों, मठ मंदिरों और आश्रमों में आ सकते हैं। मंदिर प्रबंधनों और जिला प्रशासन की ओर से एडवाइजरी जारी की गई हैं। साथ ही 25 दिसम्बर से दो जनवरी तक वृंदावन में और प्रवेश मार्गों पर यातायात को लेकर व्यापक बदलाव किये गये हैं। शुक्रवार को उत्तर प्रदेश राज्य आपदा प्राधिकरण के तत्वाधान में जिलाधिकारी शैलेन्द्र कुमार सिंह के निर्देशानुसार अग्निकांड, भगदड़ व डूबने के परिदृश्य पर मेगा मॉक एक्सरसाइज का आयोजन जनपद में चिन्हित दो स्थलों पर किया गया। रूपम सिनेमा निकट श्रीकृष्ण जन्मभूमि पर अग्निकांड व भगदड़ परिदृश्य पर व यमुना घाट, गोकुल बैराज पर डूबने के परिदृश्य पर ड्रिल का आयोजन किया गया। योगानन्द पाण्डेय अपर जिलाधिकारी (वि. रा.) इंसिडेंट कमांडर की भूमिका निभाते हुए कण्ट्रोल रूम में रूपम सिनेमा हॉल में अग्निकांड व भगदड़ की सूचना उपलब्ध होने पर घटना स्थल पर पहुंचे जहा पर कुल आठ व्यक्तियों को प्रभावित बताया गया। जिनका रेस्क्यू अग्निशमन विभाग व सिविल डिफेन्स के स्वयंसेवकों के द्वारा कराया गया। तीन व्यक्तियों को रूपम सिनेमा में स्थापित मेडिकल पोस्ट पर प्राथमिक उपचार के बाद डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल रवाना किया गया व पांच व्यक्तियों को प्राथमिक उपचार मेडिकल पोस्ट पर ही उपलब्ध कराया गया। इस मॉक ड्रिल के बाद गोकुल बैराज पर डूबने के परिदृश्य पर मॉक ड्रिल कराया गया। जिसमें दो व्यक्तियों के डूबने का परिदृश्य बना कर राज्य आपदा मॉक बल की टीम की सहायता से उनका रेस्क्यू किया गया। रेस्क्यू के उपरांत मेडिकल पोस्ट पर प्राथमिक उपचार के बाद उनको डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटल रवाना किया गया। मॉकड्रिल के दौरान योगानन्द पाण्डेय अपर जिलाधिकारी (वि. रा.), तहसीलदार सदर सौरभ, तहसीलदार महावन सुशील, आपदा विशेषज्ञ सुशील कुमार, अग्निशमन अधिकारी अपनी टीम के साथ, पुलिस प्रशासन की टीम, राज्य आपदा मोचक बल की टीम मनीश के नेतृत्व में सिविल डिफेन्स टीम, आपदा मित्र आदि मौजूद रहे।

भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई के जन्म दिवस समारोह का आयोजन अटल बिहारी वाजपेई प्रेक्षागृह में किया गया''

शाहजहांपुरएजेंसी। भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेई के जन्म दिवस समारोह का आयोजन अटल बिहारी वाजपेई प्रेक्षागृह निकट अंटा चौराहा में किया। सर्वप्रथम मुख्य अतिथि नगर आयुक्त विपिन कुमार मिश्र का स्वागत जिला विद्यालय निरीक्षक हरिवंश कुमार द्वारा सजीव पौधा व स्मृति चिन्ह देकर किया, तत्पश्चात मुख्य अतिथि ने अटल बिहारी बाजपेयी के जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में पी.एम. राजकीय इण्टर कॉलेज में आयोजित जनपद स्तरीय प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र व नकद धनराशि देकर पुरस्कृत किया गया। पुरस्कार वितरण उपरांत मुख्य अतिथि महोदय द्वारा छात्र– छात्राओं को अटल के जीवन शैली से सीख लेकर अपने जीवन में उसका अनुसरण करने हेतु प्रेरित किया। अंत में कार्यक्रम नोडल राजकुमार, प्राचार्य द्वारा मुख्य अतिथि को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का संचालन इंदु अजनबी ने किया। कार्यक्रम में अनिल कुमार, प्रधानाचार्य रा.ई.का. शाह, राजन प्रजापति डी.सी, रत्नेश शुक्ल, सत्यपाल, सर्वेश कुमार, विपिन इत्यादि का सहयोग रहा।

मऊमें 97 आशाओं का चयन, प्रशिक्षण जारी

मऊ(एजेंसी)। जनपद में शहरी स्वास्थ्य सेवाओं को सशक्त बनाने की दिशा में बड़ी पहल की गई है। 97 नई आशाओं का चयन कर उन्हें शहरी स्वास्थ्य प्रणाली का अभिन्न हिस्सा बनाया जा रहा है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. राहुल सिंह ने जानकारी दी कि चयनित आशाओं को तीन चरणों में प्रशिक्षण दिया जा रहा है। पहले चरण में 32 आशाओं का प्रशिक्षण पूरा हो चुका है, जबकि शेष को जनवरी के पहले सप्ताह तक प्रशिक्षण पूरा कर नियुक्ति दी जाएगी। सीएमओ डा राहुल सिंह ने बताया कि आशा कार्यकर्ता स्वास्थ्य विभाग और जनसामान्य के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी की भूमिका निभाती हैं। उनके माध्यम से गर्भवती महिलाओं और बच्चों का टीकाकरण, राष्ट्रीय स्वास्थ्य योजनाओं का प्रचार–प्रसार, और आम जनता को चिकित्सा सेवाओं से जोड़ने का कार्य किया जाता है। आशा कार्यकर्ता बीमार व्यक्तियों को चिकित्सा इकाई तक पहुंचाने और प्रसव से जुड़ी सेवाओं की सुविधा देने में भी अहम भूमिका निभाती हैं। एआरओ सुनील सिंह ने बताया कि साफ–सफाई और रोगों से बचाव पर जागरूकता फैलाने से लेकर घर–घर सर्वे कर टीकाकरण बूथ तक गर्भवती महिलाओं और बच्चों को लाने का काम आशाओं द्वारा किया जाता है। इस पहल से न केवल स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में सुधार होगा, बल्कि जनपद के नागरिकों का स्वास्थ्य स्तर भी बेहतर होगा। स्वास्थ्य विभाग का यह कदम शहरी स्वास्थ्य व्यवस्था को मजबूती देने और समाज में स्वास्थ्य सेवाओं की व्यापकता बढ़ाने में एक मील का पत्थर साबित हो रहा है।

गर्लफ्रेंड से मिलने आए युवक को बनाया बंधक,महिला के ससुरालियों ने जमकर पीटा

नोएडा, ग्रेटर नोएडा की दनकौर कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में अपनी गर्लफ्रेंड से मिलने आए युवक को महिला के ससुरालियों ने बंधक बनाकर जमकर पीटा। बाद में सूचना के आधार पर मौके पर पहुंची पुलिस ने उसको छुड़वाया। महिला के परिजनों का आरोप है कि आरोपी जबरदस्ती उनके बेटे की पत्नी को अपने साथ कार में बैठाकर ले जा रहा था। पुलिस का कहना है कि युवक को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। अतरौली ग्राम निवासी एक युवक का अलीगढ़ की एक युवती से पिछली कई वर्ष से प्रेम प्रसंग था।

गोसाईगंज रेलवे स्टेशन पर जलापूर्ति की जगी आस

गोसाईगंज–अयोध्या। गोसाईंगंज रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म नंबर 1 पर 12 व पीएफ 2 पर 4 स्टैंड वाटर बूथ पर 2 दर्जन टोटियों का कनेक्शन दिया गया है। लेकिन पीएफ 1 पर 9 तथा 2 पर 17 टोटीया नहीं लगी हुई है तथा दोनों प्लेटफार्मों पर यूरिनलध्शौचालय तो बने है लेकिन टोटियां उसमें न होने से गंदगी बनी हुई है।सर्कुलेटिंग एरिया में सवा 2 लाख लीटर की पानी टंकी 2 वर्ष पूर्व बनकर तैयार खड़ी है।

पानी सप्लाई के लिए जगह जगह पाइप बिछी हुई हैं,लेकिन मोटर खराब होने के कारण पानी की आपूर्ति नहीं हो पा रही है।यह खुलासा बीते 11 दिसंबर को गोसाईगंज नगर पंचायत की सभासद आरती जायसवाल द्वारा डीआरएम को दिए गए शिकायती पत्र पर गोसाईगंज रेलवे स्टेशन का निरीक्षण करने आए अयोध्या कैंट में तैनात इंजीनियरिंग महकमे के आईओडब्लू आकाश यदुवंशी एवं गोसाईगंज एस0एस0 महेंद्र नाथ मिश्र नेतृत्व में बनी टीम में शामिल अधिकारियों के सामने हुई।मालूम हो कि सभासद आरती जायसवाल ने एक पखवारे पूर्व मंडल रेल प्रबंधक को शिकायती पत्र भेजकर स्थानीय रेलवे स्टेशन पर जलापूर्ति बाधित होने एवं स्टेशन परिसर में जगह जगह फैली गंदगी की बात की थी।

संविधान, आरक्षण और डा. अंबेडकर पर कांग्रेस की विकृत राजनीति हो रही बेनकाब

यद्यपि दिल्ली विधानसभा चुनावों में आप और कांग्रेस आमने सामने हैं किन्तु आप के नेता भी गृहमंत्री की कथित टिप्पणी का वीडियो बनाकर गली-गली में घुमा रहे हैं कि शायद इसका लाभ विधानसभा चुनाव में मिल जाए।

मृत्युंजय दीक्षित ।

संसद का शीतकालीन सत्र हंगामे के साथ समाप्त हो चुका है। अपनी आदत के अनुसार विपक्ष विरोध के नाम पर सदन से भी सियासी चिंगारी निकालने का प्रयास कर रहा है। संसद के शीतकालीन सत्र में संविधान के 75 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर संविधान पर चर्चा का आयोजन किया गया था जिसमें सत्तापक्ष और विपक्ष के नेताओं ने संविधान पर अपने–अपने विचार व्यक्त किये। लोकसभा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और राज्यसभा में गृहमंत्री अमित शाह ने अपने संबोधन में संविधान, आरक्षण और डॉ. आंबेडकर पर कांग्रेस के विचारों को सप्रमाण सदन में रखा जिससे निरुत्तर हुई कांग्रेस ने राज्यसभा में गृहमंत्री अमित शाह के संबोधन से 12 सेकेंड का एक टुकड़ा उठाकर उसे बाबा साहेब का अपमान बताते हुए गृहमंत्री के विरुद्ध मोर्चा खोल दिया। इस झूठे विमर्श को सच सिद्ध करने के प्रयास में पूरा विपक्ष कांग्रेस के नेतृत्व में एक बार फिर एकजुट हो रहा है। यद्यपि दिल्ली विधानसभा चुनावों में आप और कांग्रेस आमने सामने हैं किन्तु आप के नेता भी गृहमंत्री की कथित टिप्पणी का वीडियो बनाकर गली–गली में घुमा रहे हैं कि शायद इसका लाभ विधानसभा चुनाव में मिल जाए। गृहमंत्री के विरुद्ध उसी प्रकार का वातावरण बनाने का प्रयास किया जा रहा जैसा 2024 के लोकसभा चुनावों में भाजपा को आरक्षण विरोधी व संविधान विरोधी साबित करने के लिए किया गया था। अब हर एक दल व नेता डॉ. आंबेडकर को भगवान बनाकर अपनी डूबती हुई राजनीतिक नैया को पार लगाने का स्वप्न देखने लगा है। गृहमंत्री अमित शाह के भाषण के अगले दिन राहुल गांधी और प्रियंका वाड्रा दलितों के प्रति अपना प्रेम दिखाने के लिए संसद परिसर में नीली टी शर्ट और नीली साड़ी पहनकर नमूदार हुए। उप्र में समाजवादी पार्टी भी भला पीछे क्यों रहती उसने भी डॉ. आंबेडकर की तस्वीरों के साथ यूपी विधानसभा में जमकर हंगामा किया ओर सदन की कार्यवाही ठप करने का प्रयास किया। गृहमंत्री के बयान के खिलाफ विपक्ष देशव्यापी विरोध प्रदर्शन करने का प्रयास कर रहा है। इस पूरे घटनाक्रम में बसपा नेत्री मायावती ने भी आक्रामक तेवर अपनाए हैं किन्तु वह सधे हुए बयान देकर कांग्रेस, भाजपा और सपा तीनों ही दलों को नसीहत दे रही हैं। बसपा नेत्री मायावती कांग्रेस पर हमलावर हैं, उनका कहना है कि बाबा साहेब की उपेक्षा करने वाली और देशहित में उनके द्वारा किये गये संघर्ष को हमेशा आघात पहुंचाने वाली कांग्रेस पार्टी का बाबा साहेब के अपमान को लेकर उतावालापन विशुद्ध छलावा है। बहिन मायावती ने डॉ. आंबेडकर के प्रति प्रेम दर्शा रहे समाजवादियों की पोल भी खोलकर रख दी है, मायावती का मानना है कि आज सपाई बाबासाहेब के नाम पर पीडीए का पर्चा निकाल रहे हैं जबकि वास्तविकता यह है कि सपा ने भी कभी भी डॉ. आंबेडकर का सम्मान नहीं किया था। समाजवादियों ने वास्तव में बाबा साहब सहित बहुजन समाज में जन्मे सभी महान संतों, गुरुओं, महापुरुषों के प्रति द्वेष के तहत नए जिले, नई संस्थाओं व जनहित योजनाओं तक के नाम बदल डाले थे। सपा सरकार में तो डॉ. आंबेडकर का नाम तक सही नहीं लिखा जाता था।

कांग्रेस पार्टी आज नीली टी शर्ट व नीली साड़ी पहनकर इतराती हुई घूम रही है और उसे लग रहा है कि उसे वह मुद्दा मिल गया है जिससे उसकी वापसी की राह आसान हो जायेगी लेकिन कांग्रेस बहुत बड़े भ्रम में है। सभी जानते हैं यह वहीं कांग्रेस पार्टी है जिसने कभी भी डॉ. आंबेडकर का सम्मान नहीं किया और न ही संविधान का कभी मान रखा। आज कांग्रेस नीले कपड़े पहनकर दलित समाज को छलने के लिए निकल पड़ी है। अगर कांग्रेस पार्टी ने कभी भी डॉ. आंबेडकर का सम्मान किया होता तो आज उसकी यह दुर्गति न होती।स्वतंत्रता संग्राम के समय से ही कांग्रेस और डॉ. आंबेडकर के मध्य गहरे मतभेद उत्पन्न हो गये थे। कांग्रेस के साथ बाबासाहेब का प्रथम विवाद 1930 में गोलमेज कांफ्रेस के समय हुआ था। आंबेडकर अनुसूचित जाति के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र चाहते थे जबकि गांधी जी इसके विरोधी थे। गांधी जी ने आंबेडकर जी के खिलाफ आमरण अनशन तक किया था। 29 जनवरी 1932 को दूसरी गोलमेज सम्मेलन के बाद मुंबई में बाबा साहब ने कहा कि मुझे कांग्रेसी देशद्रोही कहते हैं, यानी आज जो बाबासाहब की फोटो लेकर राजनीति कर रहे हैं,उस समय उन्हें गद्दार कहते थे। संविधान सभा में आंबेडकर जी के चयन का रास्ता भी नेहरू जी ने ही रोका था। हिंदू कोड बिल और सरकार की दलित विरोधी मानकिता के चलते आंबेडकर ने 1951 में नेहरू मंत्रिमंडल से इस्तीफा देते हुए लिखा, "संरक्षण की सबसे अधिक जरूरत अनुसूचित जाति को है पर नेहरू का सारा ध्यान सिर्फ मुसलमानों पर है। ध्यान देने योग्य बात है कि आज भी कांग्रेस पार्टी पूरी तरह मुस्लिम परस्त है।

कांग्रेस स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी आंबेडकर जी का लगातार अपमान करती रही। बाबा साहब को 40 साल तक भारत रत्न के लिए इंतजार करना पड़ा जबकि कांग्रेस अपने ही परिवार को भारत रत्न देती रही। नई दिल्ली में गांधी नेहरू परिवार की पीढ़ियों के स्मारक बने हैं जबकि गांधी परिवार ने आंबेडकर जी का अंतिम संस्कार तक दिल्ली में नही होने दिया। कांग्रेस ने पग–पग पर डॉ. आंबेडकर के विचारों का धुर विरोध किया और आज राहुल गांधी नीली टी शर्ट पहनकर उनके अपमान पर घड़ियाली आंसू बहा रहे हैं। वस्तुतः कांग्रेस का आंबेडकर के प्रति प्रेम 2019 लोकसभा चुनाव में हारने के बाद से उमड़ा है। गृहमंत्री अमित शाह ने कांग्रेस व विरोधी दलों के सभी आरोपों को खारिज करते हुए स्पष्ट कर दिया है कि वह सपने में भी डॉ.आंबेडकर का अपमान नहीं कर सकते। संसद में चर्चा के दौरान यह तो सिद्ध हो गया है कि कांग्रेस ने न केवल जीते जी बाबा साहेब का लगातार अपमान किया वरन उनकी मृत्यु के बाद भी उनका मजाक उड़ाने का प्रयास किया। जब तक कांग्रेस सत्ता में रही बाबा साहेब का एक भी स्मारक नहीं बना जबकि जहां –जहां अन्य दलों की सरकारें आती गई वहां –वहां उनका स्मारक बनता चला गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार ने बाबासाहेब के जीवन से संबंधित पंचतीर्थ विकसित किये। जिसमें मध्य प्रदेश में महू, लंदन में डॉ. भीमराव आंबेडकर स्मारक, नागपुर में दीक्षा भूमि, दिल्ली में राष्ट्रीय स्मारक और महाराष्ट्र के मुंबई में चौत्य भूमि का विकास किया। 19 नवंबर 2015 को पीएम मोदी ने डॉ. आंबेडकर के सम्मान में 26 नवंबर को संविधान दिवस मनाने की घोषणा की। आज जो लोग संविधान की किताब हाथ में लेकर घूम रहे हैं यही लोग संविधान दिवस का विरोध व बहिष्कार करते रहे हैं।

कांग्रेस के नेतृत्व में आज संपूर्ण विपक्ष केवल वोटबैंक की राजनीति के कारण ही सदन में डॉ. आंबेडकर के अपमान का मुद्दा उछाल रहा है, क्योंकि देश में 20 करोड़ 13 लाख 78 हजार 86 दलित हैं जो आबादी का 16.63 फीसदी है। दलितो की आबादी का ग्रामीण क्षेत्रों में 68.8 फीसदी और शहरी क्षेत्रों में 23.6 फीसदी है। इस आबादी को अपना वोट बैंक बनाने के लिए आतुर कांग्रेस अपने साथियों के साथ मिलकर रोज नए नए स्टंट कर रही है क्योंकिउसको लगता है कि अकेले मुस्लिम वोट बैंक से उसे सत्ता नहीं मिल सकती।

सम्पादकीय

मोदी-शाह राज में सब मुमकिन

इस सप्ताह नीतीश कुमार को भारत रत्न देने का कयास सुना तो वही उद्धव ठाकरे ने सावरकर को भारत रत्न देने की मांग की। जबकि सरकार ने सर्वत्र अंबेडकर, अंबेडकर, अंबेडकर का कीर्तन बनाया हुआ है। तो क्यों नहीं मोदी सरकार अपने दिल में बसे डॉ. भीमराव अंबेडकर को दिखाने के लिए इस जनवरी उनके पोते प्रकाश अंबेडकर को भारत रत्न से नवाज देती है? हालांकि कांशीराम, मायावती भी दलितों के आईकॉन हैं!

हां, मोदी–शाह राज में सब मुमकिन है। आखिर यथा राजा तथा प्रजा के सत्य में टके सेर भाजी टके सेर खाजा भी तो हम हिंदुओं का इतिहासजन्य अनुभव है।

कुछ भी संभव है! बस, राजा के कान में हेडलाइन्य का मंत्र फूंक जाए। सोचें अंबेडकर शब्द के मंत्र पर! भाजपा जन्म से आज तक कभी भी अंबेडकर के नाम पर, दलित वोटों से नहीं जीती। हमेशा रामजी, हिंदू वोट, हिंदू राजनीति से जीती। नरेंद्र मोदी और अमित शाह को न गुजरात में न बनारस में कभी थोक दलित वोट मिले और न हाल में महाराष्ट्र, झारखंड के चुनावों में मिले। यह भी सत्य है कि संविधान पर हुई बहस में अमित शाह के कहे में कुछ भी गलत नहीं था।

अमित शाह का कहना था– हमारे संविधान को कभी भी अपरिवर्तनशील नहीं माना गया। समय के साथ साथ देश भी बदलना चाहिए। समय के साथ कानून भी बदलने चाहिए और समय के साथ साथ समाज भी बदलना चाहिए।अब ये एक फैशन हो गया है। आंबेडकर, आंबेडकर, आंबेडकर, आंबेडकरज् इतना नाम अगर भगवान का लेते तो सात जन्मों तक स्वर्ग मिल जाता।

भाषण का यह अंश संसद कार्यवाही का हिस्सा है। तब नरेंद्र मोदी और अमित शाह के कान में किसने यह मंत्र फूंका कि राहुल गांधी के इस ट्विट (मनुस्मृति मानने वालों को अंबेडकर जी से तकलीफ बेशक होगी ही) से दलित भड़केंगे? और भविष्य में प्रधानमंत्री बनने का आपका सपना बिखर जाएगा इसलिए जरूरी है कि कांग्रेस को अंबेडकर विरोधी करार देने के लिए भाजपा पिल पड़े! तभी संसद परिसर मानों आर–पार की लडाई का पानीपत हुआ।

सोचें बैठक खाने में सावरकर, चाणक्य की तस्वीर लगाए अमित शाह की अंबेडकर पर पहले स्पष्टवादिता, फिर रक्षात्मक, आक्रामक होने की इस राजनीति पर। भला राहुल गांधी, खडगे के मनुस्मृति के जुमले से भाजपा का क्या कोई वोट खराब होता है? अंबेडकर का पोता प्रकाश अंबेडकर दशकों की दलित राजनीति के बावजूद आज भी जीरो है। मायावती जब तक तिलक, तराजू और तलवार इनको मारो जूते चार का नारा लगाती थी तब तक सड़क पर रही और मनुस्मृति के वंशज ब्राह्मणों को हाथी नहीं गणेश का नारा लगा पटाया तो सत्ता में आईं!ऐसे ही आरएसएस के लाठीधारियों के लिए हमेशा पूजनीय यदि सावरकर, हेडगेवार और गोलवलकर थे और उन्हीं की बदौलत अंततरू हिंदू राजनीति को केंद्र का शासन मिला तो मोदी–शाह को सावरकर के सत्य पर अटल रहना चाहिए था या कांग्रेस पर यह पलट वार करना था कि हम असली अंबेडकरवादी हैं और कांग्रेस ने उन्हें धोखा किया जबकि हमने अंबेडकर को भारत रत्न दिया!तभी नैरेटिव के अधबीच उद्धव ठाकरे का संघ परिवार को यह थप्पड़ है जो (सावरकर पर राहुल गांधी की टिप्पणी के ताजा संदर्भ में) उन्होंने सावरकर को भारत रत्न देने की मांग की। उन्होंने देश–दुनिया को बताया है कि मोदी राज अंबेडकर, अंबेडकर तो कर रहा है लेकिन जिस हिंदुवाद तथा संघ परिवार की बदौलत मोदी–शाह सत्ता भोग रहे हैं उसके पितामह सावरकर को अभी तक इस मोदी राज ने भारत रत्न क्यों नहीं दिया?अंबेडकर को दिया और उन्हें नहीं दिया तो यह कथित हिंदुत्व, हिंदू राजनीति की अहसानफरामोशी है या नहीं? जब प्रणब मुखर्जी से कर्पूरी ठाकुर तक तमाम लोगों को भारत रत्न बांट दिए तो आरएसएस के हेडगेवार, गोलवलकर को भी बांट देतें? ये क्या अंबेडकर, अंबेडकर कर उनसे अपनी वफादारी दिखा रहे हैं? वही यदि अपने सावरकर, हेडगेवार, गोलवलकर का ही नाम ले लिया होता तो कम से कम अपने वंश, अपनी विचारधारा के तो सगे कहलाते!।

एकता के अभाव में किसी भी समाज या राष्ट्र का उत्थान संदिग्ध

चेतनादित्य आलोक

बता दें कि दुनिया में जहां कहीं भी जो लोग विकास की दौड़ में पीछे छूट गए हैं अथवा पीडिघ्त, शोषित, दुखी और परंशान हैं या कहा जाए कि व्यवस्था में जिन लोगों तक अब तक मदद सबसे कम या नहीं पहुंच पाई है, उन व्यक्तियों, समुदायों तक आज सहायता पहुंचाने की आवश्यकता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह जन्म, रिश्ते और रोजगार के अतिरिक्त भौगोलिक, सामाजिक, आर्थिक एवं अन्य कारणों से चाहे दुनिया के किसी भी कोने में, किसी भी देश का निवासी बनकर क्यों न रहता हो, उसका अपना एक समाज, अपनी एक अलग दुनिया होती है। इसी प्रकार, अलग.अलग जगहों पर रहते हुए मनुष्य की समस्याएं, दुविधाएं, आवश्यकताएं, आकांक्षाएं और उसके पास उपलब्ध सुविधाएं भले ही अलग.अलग प्रकार की हों, परंतु एक बात सभी मनुष्यों के जीवन पर लागू होती है और वह है मानव एकता तथा एकजुटता के साथ उसका आगे बढ़ना। दरअसल, मानव जाति की एकता की जरूरत दुनिया को आरंभिक काल से ही रही है। हालांकि, मनुष्य जाति के लिए अपेक्षित एकता और एकजुटता कभी कायम नहीं हो पाई, जबकि यह सच है कि एकता और एकजुटता के अभाव में किसी भी समाज या राष्ट्र का उत्थान संदिग्ध होता है। जाहिर है कि मानव जाति की एकता और एकजुटता के साथ उसके आगे बढ़ने की इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए अपने.अपने स्तर पर दुनिया के तमाम देशों को गंभीर प्रयास करने ही होंगे। हालांकि, यह उतना भी आसान कार्य नहीं है कि सारे देश एक दूसरे के निकट आ जाएं और दुनिया में एकता एवं एकजुटता कायम करने के लिए अपनी.अपनी नीतियों में बदलाव कर लें, लेकिन समय की मांग यही है कि गुटबाजियों को छोड़ और खेमेबंदियों को तोड़ कर हर हाल में दुनिया के सभी देश एक दूसरे के निकट आएं और साथ. साथ चलने के लिए संकल्पबद्ध हों।यह तभी संभव होगा, जब सभी छोटे.बड़े देश अपनी जिद्द, लिप्सा, अपने मोह, लालच और संकुचित सोच को परे रख कर विश्वहित एवं मानवहित में सोचेंगे। देखा जाए तो क्षुद्र विचारों और संकुचित सोच में सिमटकर दुनिया और मानवता ने अपना बहुत नाश कराया है। इसलिए अब जरूरी है कि एकता और एकजुटता को 21वीं सदी के लिए एक आधार और प्रोत्साहन के रूप में स्वीकार करते हुए आगे बढ़ा जाए। हालांकि यह सच है कि वैश्वीकरण ने दुनिया भर के लोगों को आगे बढ़ने और विकास करने के अनेक अवसर प्रदान किए हैं, लेकिन इस वैश्वीकरण ने दो दुनियाओं के निर्माण की पटकथा लिखी। इनमें एक दुनिया ऐसी बनी, जिसमें केवल गरीब लोग रहते हैं, जहां दुरूख, संकट, परेशानियां, समस्याएं, शोषण और उत्पीड़न का साम्राज्य खूब फलता.फूलता है। वहीं, वैश्वीकरण ने इसके बिल्कुल पास ही में एक अलग दुनिया भी बनाई, जिसमें कदम.कदम पर अमीरी की दास्तानें लिखी होती है। जाहिर है कि वैश्वीकरण के कारण होने वाले विकास के लाभों और भारों का वितरण दुनिया भर के मानव समुदायों के बीच असमान रूप से हुआ। इसका दुष्परिणाम यह हुआ कि दुनिया भर में मनुष्यों की एक बड़ी संख्या विकास के मामले में अन्य लोगों से काफी पीछे रह गई। यह विडंबना नहीं तो और क्या है। बहरहाल, 21वीं सदी में मनुष्य की वास्तविक उन्नति और उत्थान को लेकर वैश्विक एकता और एकजुटता के लिए एक संयुक्त वैश्विक प्रयास करने की नितांत आवश्यकता है।

बता दें कि दुनिया में जहां कहीं भी जो लोग विकास की दौड़ में पीछे छूट गए हैं अथवा पीडिघ्त, शोषित, दुखी और परंशान हैं या कहा जाए कि व्यवस्था में जिन लोगों तक अब तक मदद सबसे कम या नहीं पहुंच पाई है, उन व्यक्तियों, समुदायों तक आज सहायता पहुंचाने की आवश्यकता है। वैसे, बेहतर तो यह होगा कि जिन्हें व्यवस्था से सबसे अधिक लाभ प्राप्त होता रहा है, वे ही उन तक सहयोग के अपने हाथ लेकर जाएं। जाहिर है कि यदि समर्थ लोग निर्धन और लाचार लोगों तक स्वयं अहयोग का हाथ लेकर जाएंगे तो इससे दोनों ही दुनियाओं के बीच आपसी प्रेम और सद्भाव तो बढ़ेगा ही, साथ ही, इससे साझी जिम्मेदारी की संस्कृति भी विकसित होगी और दुनिया में एकता और एकजुटता के कायम होने में आसानी भी होगी। देखा जाए तो एकता और एकजुटता के विराट महत्व को आत्मसात करते हुए हमारे पूर्वज ऋषि. मुनियों ने इसे बहुत महत्व दिया था। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में आरंभ से ही एकता और एकजुटता महान मानवीय गुण माने जाते रहे हैं। हालांकि, इसके लिए प्रमाण की जरूरत नहीं, फिर भी यदि दुनिया के इतिहास को उठाकर देखा जाए तो पता चलता है कि दुनिया में आज तक सभी महान कार्य मानव जाति की एकता एवं सहयोग से ही संभव हो पाए हैं। तात्पर्य यह कि महान एवं बड़े कार्यो को पूरा करने हेतु दुनिया में मानवीय एकता का होना परम आवश्यक है।

साथ ही, विभिन्न समस्याओं यथा. भुखमरी, निर्धनता, अशिक्षा, आतंकवाद, उग्रवाद, हिंसा, लूट, भ्रष्टाचार एवं अन्य तमाम समस्याओ का निराकरण भी एकल नहीं, बल्कि सामूहिक प्रयासों से ही सफलतापूर्वक

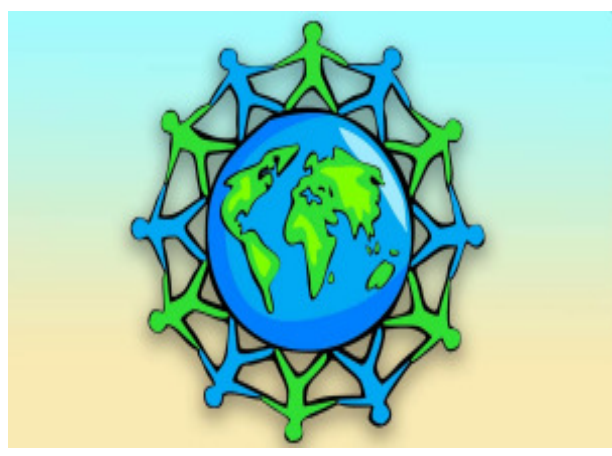

किया जा सकता है। इतना ही नहीं, विश्व भर में समावेशी विकास को अंजाम तक पहुंचाने, अनेकता में एकता के जीवन मूल्य को चरितार्थ करने, सतत विकास के लक्ष्यों को प्राप्त करने एवं एकता के महत्व को प्राप्त करने हेतु भी अंतर्राष्ट्रीय मानव एकता महत्वपूर्ण है। इसके अतिरिक्त अंतरराष्ट्रीय संबंधों के मामले में भी एकता को महत्वपूर्ण मूल्य के रूप में परिभाषित किया जा चुका है। जाहिर है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मानवीय एकजुटता के आयोजन और प्रदर्शन से विविधता में एकता को बढ़ावा और इसकी उपयोगिता को सम्मान होगा। वैसे, देखा जाए तो एकजुटता का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना भी है कि न्याय के लिए परस्पर एक दूसरे की देखभाल और चिंता की जाए। मनुष्य के लिए आपस में एकजुटता प्रदर्शित करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि परस्पर एक दूसरे का सम्मान किया जाए और एक दूसरे की जरूरतों और परिस्थितियों से संबंधित बेहतर समझ पैदा की जाए। गौरतलब है कि परस्पर एक दूसरे से जुड़ी हमारी यह विस्तृत दुनिया एकत्व के भाव के साथ एक.दूसरे को ऊपर उठाने एवं मनुष्य की व्यक्तिगत सफलता को प्रोत्साहित करने के साथ.साथ पूरे मानव समाज की समृद्धि के लिए समग्र रूप से प्रतिबद्धता पर निर्भर करती है। तात्पर्य यह कि जब हम एक.दूसरे के लिए सहयोग का हाथ बढ़ाते हैं अथवा दुरूख.दर्द और लाचारी में एक.दूसरे का हाथ थामते हैं, तो ऐसा करके केवल एक.दूसरे के प्रति सहयोग का भाव ही नहीं प्रकट कर रहे होते, बल्कि एकता और एकजुटता को कायम करने के संकल्प की सिद्धि भी कर रहे होते हैं। इतना ही नहीं, एक.दूसरे के लिए सहयोग का हाथ बढ़ाकर या आवश्यकता पड़ने पर एक.दूसरे का हाथ थामकर हम एकत्व की पवित्र और विराट भावना को सम्मानित भी कर रहे होते हैं तथा मनुष्य जाति के लिए अधिक बेहतर और निष्पक्ष भविष्य की दिशा में प्रगति भी कर रहे होते हैं।

जीवन भर मानव कल्याण में रत रहे यीशु

ाी धर्मों में एक परम शक्ति मानी गयी है जिसकी उस धर्म के मानने वाले आराधना करते हैं और उसके बताये रास्ते पर चलकर सुख–शांति की अनुभूति करते हैं। क्रिश्चियन (ईसाई) धर्म में यीशु को परम शक्ति माना गया है जो मानव के रूप में अवतरित हुए। यीशु जीवन पर्यन्त मानव कल्याण की दिशा में कार्यरत रहे। उन्होंने 25 दिसंबर को एक साधारण परिवार में जन्म लिया था। तत्कालीन शासन व्यवस्था को उनकी बातें अच्छी नहीं लगीं और यीशु को क्रूस पर लटका दिया गया। यीशु की महानता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि जो लोग और जिनके आदेश पर उन्हें मृत्युदण्ड दिया जा रहा था उनके लिए भी ईश्वर से प्रार्थना की और कहा हे ईश्वर उन्हें माफ करना क्योंकि ये लोग अज्ञानी हैं। ऐसे महान यीशु के जन्म दिन पर पूरी दुनिया में ईसाई धर्म के अनुयायी क्रिसमस डे मनाते हैं। भारत में भी सर्व धर्म सद्भाव के रूप में यह पर्व बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है। यीशु की स्तुति में कैरोल गाया जाता है। चर्च सजाए जाते हैं और प्रार्थना की जाती है।

ईसाइयों का सबसे महत्वपूर्ण त्योहार क्रिसमस विश्व भर में 25 दिसम्बर को खूब हर्षोल्लास से मनाया जाता है। क्रिसमस की पूर्व संध्या यानि 24 दिसंबर से ही क्रिसमस से जुड़े कार्यक्रम शुरू हो जाते हैं। यूरोपीय और पश्चिमी देशों में इस दौरान खूब रंगारंग कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। भारत में गोवा राज्य में क्रिसमस की काफी धूम रहती है। इसके अलावा विभिन्न शहरों की बड़ी चर्चों में भी इस दिन सभी धर्मों के लोग एकत्रित होकर प्रभु यीशु का ध्यान करते हैं। क्रिसमस की पूर्व संध्या पर लोग प्रभु की प्रशंसा में कैरोल गाते हैं और क्रिसमस के दिन प्यार व भाईचारे का संदेश देने एक दूसरे के घर जाते हैं।

क्रिसमस अब सिर्फ एक धार्मिक पर्व नहीं रहा बल्कि इसने सामाजिक पर्व का रूप धारण कर लिया है तभी तो अब सभी समुदायों के लोग बढ़.चढ़कर इसे मनाते हैं और आपस में खुशियां बांटते हैं।

इस पर्व के दौरान सभी लोग अपने घरों में क्रिसमस ट्री लगाते हैं जिसे अच्छे अच्छे उपहारों से सजाया जाता है। इसकी सुंदरता देखते ही बनती है। ईसाइयों के अलावा अन्य लोग भी इस दौरान अपने घर में क्रिसमस ट्री लगाते हैं। इसे अच्छे अच्छे उपहारों से सजाया जाता है और इसकी सुंदरता देखते ही बनती है। आजकल बाजार में बने बनाए क्रिसमस ट्री भी मिलते हैं।

माना जाता है एक बार ईश्वर ने ग्रैबियल नामक अपना एक दूत मैरी नामक युवती के पास भेजा। ईश्वर के दूत ग्रैबियल ने मैरी को जाकर कहा कि उसे ईश्वर के पुत्र को जन्म देना है। यह बात सुनकर मैरी चौंक गई क्योंकि अभी तो वह कुंवारी थी, सो उसने ग्रैबियल से पूछा कि यह किस प्रकार संभव होगा? तो ग्रैबियल ने कहा कि ईश्वर सब ठीक करेगा। समय बीता और मैरी की शादी जोसेफ नाम के युवक के साथ हो गई। भगवान के दूत ग्रैबियल जोसेफ के सपने में आए और उससे कहा कि जल्द ही मैरी गर्भवती होगी और उसे उसका खास ध्यान रखना होगा क्योंकि उसकी होने वाली संतान कोई और नहीं स्वयं प्रभु यीशु हैं। उस समय जोसेफ और मैरी नाजरथ जोकि वर्तमान में इजराइल का एक भाग है, में रहा करते थे। उस समय नाजरथ रोमन साम्राज्य का एक हिस्सा हुआ करता था। एक बार किसी कारण से जोसेफ और मैरी बैथलेहम, जोकि इस समय फिलस्तीन में है, में किसी काम से गए, उन दिनों वहां बहुत से लोग आए हुए थे जिस कारण सभी धर्मशालाएं और शरणालय भरे हुए थे जिससे जोसेफ और मैरी को अपने लिए शरण नहीं मिल पाई। काफी थक.हारने के बाद उन दोनों को एक अस्तबल में जगह मिली और उसी स्थान पर आधी रात के बाद प्रभु यीशु का जन्म हुआ। अस्तबल के निकट कुछ गडरिए अपनी भेड़ें चरा रहे थे, वहां ईश्वर के दूत प्रकट हुए और उन गडरियों को प्रभु यीशु के जन्म लेने की जानकारी दी। गडरिए उस नवजात शिशु के पास गए और उसे नमन किया।

यीशु जब बड़े हुए तो उन्होंने पूरे गलीलिया में घूम.घूम कर उपदेश दिए और लोगों की हर बीमारी और दुर्बलताओं को दूर करने के प्रयास किए। धीरेधीरे उनकी प्रसिद्धि चारों ओर फैलती गई। यीशु के सद्भावनापूर्ण कार्यों के कुछ दुश्मन भी थे जिन्होंने अंत में यीशु को काफी यातनाएं दीं और उन्हें क्रूस पर लटकाकर मार डाला लेकिन यीशु जीवन पर्यन्त मानव कल्याण की दिशा में जुटे रहे, यही नहीं जब उन्हें क्रूस पर लटकाया जा रहा था, तब भी वह यही बोले कि हे पिता इन लोगों को क्षमा कर दीजिए क्योंकि यह लोग अज्ञानी हैं। उसके बाद से ही ईसाई लोग 25 दिसम्बर यानि यीशु के जन्मदिवस को क्रिसमस के रूप में मनाते हैं।

क्रिसमस या बड़ा दिन ईसा मसीह या यीशु के जन्म की खुशी में मनाया जाने वाला पर्व है। यह 25 दिसंबर को पड़ता है और इस दिन लगभग संपूर्ण विश्व में अवकाश रहता है। क्रिसमस से 12 दिन के उत्सव क्रिसमसटाइड की भी शुरुआत होती है। एन्नो डोमिनी काल प्रणाली के आधार पर यीशु का जन्म, 7 से 2 ई.पू. के बीच हुआ था। 25 दिसंबर यीशु मसीह के जन्म की कोई ज्ञात वास्तविक जन्म तिथि नहीं है और लगता है कि इस तिथि को एक रोमन पर्व या मकर संक्रांति (शीत अयनांत) से संबंध स्थापित करने के आधार पर चुना गया है। आधुनिक क्रिसमस की छुट्टियों में एक दूसरे को उपहार देना, चर्च में समारोह और विभिन्न सजावट करना शामिल हैं। इस सजावट के प्रदर्शन में क्रिसमस का पेड़, रंग बिरंगी रोशनियाँ, बंडा, जन्म के झाँकी और हॉली आदि शामिल हैं। सांता क्लॉज (जिसे क्रिसमस का पिता भी कहा जाता है हालांकि, दोनों का मूल भिन्न है) क्रिसमस से जुड़ी एक लोकप्रिय पौराणिक परंतु कल्पित शख्सियत है जिसे अक्सर क्रिसमस पर बच्चों के लिए उपहार लाने के साथ जोड़ा जाता है। सांता के आधुनिक स्वरूप के लिए मीडिया मुख्य रूप से उत्तरदायी है। क्रिसमस को सभी ईसाई लोग तो मनाते ही हैं और आजकल कई गैर ईसाई लोग भी इसे सांस्कृतिक उत्सव के रूप मे मनाते हैं। क्रिसमस के दौरान उपहारों का आदान–प्रदान, सजावट का सामन और छुट्टी के दौरान मौजमस्ती के कारण यह एक बड़ी आर्थिक गतिविधि बन गया है और अधिकॉश खुदरा विक्रेताओं के लिए इसका आना एक बड़ी घटना है।दुनिया भर के अधिकतर देशों में यह 25 दिसम्बर को मनाया जाता है।

दलित राजमिस्त्री हत्याकांड का खुलासा चौथे दिन भी लालगंज पुलिस के लिए बना दिखा सिरदर्द ..

लालगंज, प्रतापगढ़। दलित राजमिस्त्री की बर्बर हत्या को लेकर चौथे दिन भी लालगंज पुलिस घटना की तह तक पहुंचने में हाथ पैर चलाती दिखी। हालांकि पुलिस घटना में सही अपराधियों तक शीघ्र पहुंचने का दावा भी गुरूवार को करती नजर आयी। सीओ लालगंज रामसूरत सोनकर का कहना है कि घटना के कई बिंदुओं पर पुलिस टीमें काम कर रही हैं। सीओ के मुताबिक जल्द ही घटना की सच्चाई उजागर करते हुए सही अपराधियों को बेनकाब कर लिया जाएगा। लालगंज कोतवाली के हरनाहर गांव में राजमिस्त्री नत्थू सरोज की बाइस दिसंबर को जघन्य हत्या हुई थी। मृतक के पुत्र शिवशंकर सरोज की तहरीर पर गांव के प्रधानपति समेत चार के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है। पुलिस राजमिस्त्री की हत्या को लेकर घटना की असली वजह तलाशने में होमवर्क कर रही है। नामजद आरोपियों मे तीन अज्ञात होने के कारण भी पुलिस की मुश्किलें बढी हुई है। प्रधानपति की नामजदगी को लेकर पुलिस गांव में पंचायत चुनाव की आपसी खेमेबंदी को लेकर भी फूंक फूंक कर कदम रख रही है। राजमिस्त्री के भी कुछ चर्चा में आये अनाम रिश्तों को भी पुलिस घटना के कारणो मे से एक संभावित मानते हुए जांच पड़ताल मे लगी हुई है। घटना के चार दिन बीत जाने के बावजूद पुलिस के हाथ अभी खाली होने को लेकर गांव में तरह तरह की चर्चा का माहौल भी देखा सुना जा रहा है। दलित हत्याकांड को लेकर मुकदमें का क्लू तलाशने में लालगंज सीओ के कंधे पर अहम जिम्मेदारी है। ऐसे में सीओ भी घटना के खुलासे को लेकर पुलिस टीमों की मानीटरिंग में जुटे हुए बताये जाते हैं। दलित राजमिस्त्री का घटना के एक दिन पूर्व कहीं जाना और फिर दूसरे दिन सुबह उसका रक्तरंजित शव मिलना खुलासे में एक और टेढ़ी खीर पुलिस के लिए सिरदर्दी लिए हुए है। लोगों की भी नजर राजमिस्त्री हत्याकांड के खुलासे को लेकर पुलिस की तरफ टिकी हुई देखी जा रही है।

मेधावियों की चमक से दुनिया भारत के ज्ञानदर्शन की मान रही लोहा- प्रमोद तिवारी

लालगंज, प्रतापगढ़। सांगीपुर क्षेत्र के पूरे नरायनदास स्थित पीकेबीडी इण्टर कालेज में गुरूवार को शैक्षिक महोत्सव में प्रतिभाओं की चमक दिखी। समारोह का शुभारंभ बतौर मुख्य अतिथि राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। शैक्षिक महोत्सव में क्षेत्रीय विधायक एवं कांग्रेस विधानमण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना की ओर से सरयू समाज कल्याण संस्थान द्वारा विद्यालय के दो टॉपर छात्रों को लैपटाप की सौगात भी मिली। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने हाईस्कूल बोर्ड परीक्षा में स्कूल के टापर शाहिद अली तथा सत्यांशु सरोज को लैपटाप प्रदान किया। वही सांसद प्रमोद तिवारी ने विधायक मोना की ओर से विधायक निधि से विद्यालय को शैक्षणिक भवन के लिए ढ़ाई लाख रूपये तथा हाईमास्ट की सौगात सौपी। सौगात पाकर मेधावियों के चेहरे खिल उठे दिखे। कार्यक्रम में छात्रा रियांश शर्मा, सेजल सरोज, पलक शुक्ला, आकांक्षा तिवारी, अंशिका मिश्रा ने लोकगीत, भावनृत्य, भाषण प्रतियोगिता में मनमोहक प्रस्तुतियां दी। समारोह को संबोधित करते हुए राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा कि समूचा विश्व आज भारत की बहुल प्रतिभा की चमक का कायल हो उठा है। उन्होने कहा कि देश में शैक्षिक उन्नयन के लिए भविष्य निर्माण के लिए शिक्षाविद गुरूकुल की परम्परा को यादगार बनाते हुए सर्वस्व समर्पण का योगदान दें। कार्यक्रम की अध्यक्षता ब्लाक प्रमुख अशोक सिंह बबलू व संचालन प्रधान कटेहटी बृजकिशोर तिवारी ने किया। प्रधानाचार्या सरिता भलोठिया ने शैक्षिक प्रगति आख्या प्रस्तुत की। प्रबंधक उमाकांत बरनवाल ने स्वागत भाषण तथा अध्यक्ष रमाकांत बरनवाल ने आभार जताया। इसके बाद सांसद प्रमोद तिवारी ने लालगंज में व्यापारिक संवाद कार्यक्रम में देश की प्रगति में सौर ऊर्जा की महत्वता को बदलते परिवेश में मुख्य आधार कहा। उन्होने 1924 में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के छब्बीस दिसंबर को कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचन का जिक्र करते हुए कहा कि गांधी जी के नेतृत्व में देश की आजादी के प्रकाश का शंखनाद हुआ। विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के सत्य के लिए संघर्ष की प्रेरणा भारतीय विचारदर्शन की आज दुनिया में प्रेरणा का श्रोत है। कार्यक्रम का संयोजन आशीष पाण्डेय ने किया। सह संयोजक संजीव चौधरी तथा वरूण शुक्ला व नन्हें पाण्डेय के साथ व्यापारियों ने सांसद प्रमोद तिवारी को सम्मानित किया। इस मौके पर चेयरपर्सन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी, केडी मिश्र, ज्ञानप्रकाश शुक्ल, विकास मिश्र, छोटे लाल सरोज, विंदेश्वरी पटेल, धीरेन्द्रमणि शुक्ल, मुरलीधर तिवारी, शैलेन्द्र मिश्र, दिनेश सिंह, विनय जायसवाल, आशुतोष मिश्र, राजू मिश्र आदि रहे।

इलाज के दौरान घायल शिक्षक की मौत, कोहराम

लालगंज, प्रतापगढ़। घर से निकले कोचिंग संचालक को अज्ञात बाइक ने जोरदार टक्कर मार दी। गंभीर रूप से घायल कोचिंग संचालक की इलाज के दौरान गुरूवार सुबह मौत हो गयी। मौत की जानकारी होने पर परिवार में कोहराम मच गया है। लीलापुर थानान्तर्गत तुलापुर गांव निवासी अवनीश प्रताप सिंह 55 पुत्र सुरेश बहादुर सिंह घर पर ही कोचिंग चलाते थे। वह एक स्थानीय विद्यालय में शिक्षक भी थे। वह बुधवार की शाम करीब चार बजे साइकिल से घर से किसी काम से लीलापुर जा रहे थे। इसी बीच गांव समीप तिराहे पर सामने से आ रही अज्ञात बाइक सवार ने जोरदार टक्कर मार दिया। जिससे अवनीश गंभीर रूप से घायल हो गये। उनका एम्स रायबरेली में इलाज चल रहा था। जहां गुरूवार की सुबह इलाज के दौरान अवनीश प्रताप की मौत हो गयी। मौत की जानकारी होने पर परिवार में कोहराम मच गया है। मृतक की पत्नी समेत परिवार के लोगों का रो रो कर बुराहाल है। मृतक के तीन पुत्र व दो पुत्रियां हैं। एसओ लीलापुर अरूण कुमार का कहना है कि तहरीर मिलने पर बाइक चालक के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया जाएगा।

उदयपुर एसओ के निलंबन की मांग को लेकर लालगंज के वकीलो ने डीएम व एसपी को सौपा ज्ञापन

प्रतापगढ़। जिले के उदयपुर थानाध्यक्ष पर अधिवक्ता उत्पीडन की शिकायत को लेकर गुरूवार को लालगंज के अधिवक्ताओं ने डीएम तथा एसपी से मुलाकात कर निलंबन की मांग उठाई। अधिवक्ताओं ने डीएम तथा एसपी से अलग अलग भेंट कर साथी अधिवक्ता अंकुर त्रिपाठी के पुलिसिया उत्पीडन को लेकर ज्ञापन भी सौपे। लालगंज संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष संदीप सिंह तथा रूरल बार के राष्ट्रीय अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल के नेतृत्व में अधिवक्ताओं के प्रतिनिधिमण्डल ने कलेक्ट्रेट में डीएम संजीव रंजन से मुलाकात कर एसओ उदयपुर राधेबाबू से जुडी शिकायतो पर ज्ञापन सौपते हुए कार्रवाई न होने पर असंतोष जताया। वहीं डीएम से मिलने के बाद अधिवक्ता पुलिस अधीक्षक कार्यालय पहुंचे। यहां एसपी डॉ. अनिल कुमार को ज्ञापन सौपकर उदयपुर एसओ पर अधिवक्ताओ तथा फरियादियों के साथ अनुचित व्यवहार की बिंदुवार जानकारियां दी। रूरल बार के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने डीएम से विशेषाधिकार के तहत एसओ उदयपुर को जिला मुख्यालय वापस बुलाए जाने की मांग रखी। वकीलो ने एसपी को ज्ञापन सौपकर एसओ उदयपुर के निलंबन की मांग उठायी। डीएम तथा एसपी ने प्रतिनिधिमण्डल को मांग पत्र पर निष्पक्ष जांच के साथ समुचित कार्रवाई का भरोसा दिलाया। प्रतिनिधिमण्डल मे रूरल बार के जिलाध्यक्ष अंजनी सिंह बाबा, अनिल त्रिपाठी महेश, देवी प्रसाद मिश्र, विकास मिश्र, संतोष पाण्डेय, सिंटू मिश्र आदि अधिवक्ता शामिल रहे।

नई चुनौतियों से निपटने के लिए एक हो समाज-पंडित राम शब्द मिश्र

अंग वस्त्र से हुए सम्मानित, वितरित हुआ कंबल

सुल्तानपुर(एजेंसी)। महामना पंडित मदन मोहन मालवीय जी की जयंती धूमधाम से मनाई गई। ब्राह्मण समाज के बैनर तले आयोजित इस कार्यक्रम में अतिथियों को अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया, वहीं सैकड़ो जरूरतमंदो को ठंड से बचाने के लिए कंबल वितरण किया गया। सहकारिता प्रकोष्ठ के प्रदेश सहसंयोजक पंडित रामचंद्र मिश्र, कांग्रेस के पूर्व प्रमुख वरिष्ठ समाजसेवी पंडित राम शब्द मिश्रा अखिल भारतीय चाणक्य परिषद के अध्यक्ष कृपा निधान तिवारी ने महामना के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए कार्यक्रम की शुरुआत की। यहां रामचंद्र मिश्र ने कहा हमें महामना के बताए हुए रास्ते पर चलना चाहिए समाज की विभूतियो के पद चिन्हों पर चलकर ही हम स्वस्थ समाज की स्थापना कर सकते हैं कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे हैं वरिष्ठ समाज सेवी पंडित राम शब्द मिश्र ने कहा ब्राह्मण समाज देश में सभी समाज का मार्गदर्शक रहा है उसके द्वारा किए गए कार्य और व्यवहार जनमानस में एक संदेश देते हैं। वर्तमान चुनौतियों से निपटने के लिए समाज को एकजुट होने की जरूरत है। शिक्षा स्वास्थ्य के साथ–साथ सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में भी संगठित होने के लिए अभियान चलाने की आवश्यकता है। ब्राह्मण समाज त्याग और बलिदान के लिए जाना जाता है। संगठन के प्रदेश अध्यक्ष सत्यनारायण तिवारी व महामंत्री पंडित नारायण राय ने आए हुए अतिथियों का आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में सृजनात्मक कार्यक्रम के लिए सभी से आशीर्वाद मांगा वे समाज में हर प्रकार के सहयोग के लिए तैयार है। संगठन के नेताओं सुभाष तिवारी नारायण राय व सत्यनारायण तिवारी ने आए हुए अतिथियों को ब्राह्मण समाज की ओर से साल पहनकर सम्मानित किया। वहीं मौजूद सैकड़ो जरूरत मंदों को कंबल वितरित किया गया। कार्यक्रम का संचालन पंडित सुभाष तिवारी ने किया यहां प्रमुख रूप से भवानी प्रसाद मिश्र बंगाली पदुमनाथ तिवारी पालिका अध्यक्ष प्रवीण कुमार अग्रवाल बार एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष करुणा शंकर दूबे एसपी त्रिपाठी कृपा निधान तिवारी रामकिंकर तिवारी पूर्व सभासद राजदेव शुक्ल बेनू रामदयाल शुक्ला एडवोकेट श्रवण पाठक दिलीप मिश्रा चंद्रभान मिश्रा नरेंद्र देव तिवारी अरविंद तिवारी गोपी मिश्रा राम कीरत मिश्रा निशाकांत पांडेय रामदत्त तिवारी कमला तिवारी समेत सैकड़ो लोग मौजूद रहे।

चार आरोपियों के खिलाफ मारपीट व धमकी का केस

लालगंज, प्रतापगढ़। मारपीट गालीगलौज व धमकी को लेकर पुलिस ने चार लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। लालगंज कोतवाली के टोडरपुर निवासी भगौती पटेल पुत्र रामखेलावन ने पुलिस को दी गई तहरीर में कहा है कि पुरानी रंजिश को लेकर बाइस दिसंबर की सुबह करीब नौ बजे गांव के हीरालाल पुत्र रामनेवाज व उनके पुत्र सुभाष पटेल तथा परिवार की प्रतिभा व नेताइन ने एकराय होकर उसकी पुत्री रूचि तथा किरन, लता, गोलू, रामजसी के साथ गालीगलौज करते हुए मारापीटा। आरोपियों ने जान से मारने की धमकी भी दी। गंभीर चोट लगने से रामजसी व किरन बेहोश हो गये। कोतवाल नीरज यादव का कहना है कि जांच के बाद हीरालाल समेत चार के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है।

जलनिकासी में अनियमितता का आरोप, सीएम को भेजी गयी शिकायत

लालगंज, प्रतापगढ़। जलनिकासी के लिए बनाए गए नाले में अनियमितता का आरोप लगाते हुए ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री से शिकायत कर नाले को दुरूस्त कराए जाने की मांग उठाई है। तहसील लालगंज अन्तर्गत नौढ़िया ग्राम पंचायत के चंदू की बाग में नहर व सड़क के बीच जलनिकासी की समस्या के समाधान को लेकर करीब दो सौ मीटर लम्बा कच्चा नाला बनाया गया है। ग्रामीणों का आरोप है कि मानक के अनुसार नाले का निर्माण न कराये जाने से ग्रामीणों को खासी असुविधा हो रही है। आये दिन नाले मे गिरकर लोग चुटहिल भी हो रहे हैं। गांव के आयुष पाण्डेय, अजय यादव, शिवम पाण्डेय, हरी यादव, अवधेश, कमलेश कुमार, मुकेश कुमार आदि ने नाले को दुरूस्त करवाये जाने की मांग मुख्यमंत्री से की है।

गले में फंसे खिलौने को निकालकर बच्चे को दिया जीवन दान

सुल्तानपुर(एजेंसी)। एक साल के बच्चे के गले में सांस की नली में चॉकलेट के साथ मिलने वाला खिलौना फंसा हुआ था जिससे बच्चा जिंदगी और मौत की बीच जूझ रहा था यह प्लास्टिक का खिलौना सांस लेने के रास्ते में जाकर रुका हुआ था बच्चा सांस नहीं ले पा रहा था। जनपद में कई चिकित्सकों एवं स्वशासी राज्य की मेडिकल कॉलेज में दिखाया मगर कहीं से बच्चे को राहत न मिली तब बच्चे के परिजन एकाएक गल्ला मंडी स्थित डॉक्टर अमित कौशल के क्लीनिक पर पहुंचे वहां पर उन्होंने बच्चे के परिजनों को राहत की सांस लेने का मौका दिया और बीती रात ऑपरेशन करके सांस की नली में फंसे प्लास्टिक को दूरबीन के विधि से निकला। बच्चों के परिजनों ने चिकित्सक को साधुवाद देते हुए कहा कि समय रहते हमारे बच्चे के गले में फंसे हुए प्लास्टिक के खिलौने को निकाल दिया डॉक्टर नहीं हमारे लिए भगवान साबित हुए।

प्रांत अध्यक्ष एवं प्रांत मंत्री के रूप में प्रो सुचिता और अभय पुनर्निर्वाचित

सुलतानपुर(एजेंसी)। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप), काशी प्रांत के चार–दिवसीय 64वें प्रांत अधिवेशन का शुभारंभ भगवान कुश की नगरी कुशभवनपुर (सुल्तानपुर) के फरीदीपुर स्थित केएनआईटी प्रांगण में हुआ। अधिवेशन के पहले दिन, उद्घाटन सत्र के साथ ही पिछले सत्र की कार्यकारिणी को भंग किया गया। इसके पश्चात चुनाव अधिकारी डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह ने वाराणसी महानगर की प्रो. सुचिता त्रिपाठी और बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के अभय प्रताप सिंह को अभाविप काशी प्रांत के प्रांत अध्यक्ष और प्रांत मंत्री के रूप में पुनर्निर्वाचित किया। प्रांत मंत्री अभय प्रताप सिंह ने अपने प्रतिवेदन में बताया कि पिछले सत्र में अभाविप काशी प्रांत के कार्यकर्ताओं ने कुल 3,05,802 सदस्य जोड़े हैं। अभाविप काशी प्रांत के इस चार–दिवसीय प्रांत अधिवेशन का उद्घाटन मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश की उच्च शिक्षा राज्य मंत्री, रजनी तिवारी, अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. राजशरण शाही, विकासार्थ विद्यार्थी की राष्ट्रीय संयोजिका कु. पायल राय, प्रांत अध्यक्ष प्रो. सुचिता त्रिपाठी, प्रांत मंत्री अभय प्रताप सिंह, स्वागत समिति अध्यक्ष डॉ राम आशीष वर्मा, और स्वागत समिति मंत्री चंदन नारायण द्वारा किया गया। यह अधिवेशन 25 से 28 दिसंबर तक महाराज कुश की नगरी कुशभवनपुर के फरीदीपुर स्थित केएनआई प्रांगण में आयोजित किया जा रहा है। अधिवेशन की शुरुआत 25 दिसंबर को सायं प्रख्यात कवि पंडित राम नरेश त्रिपाठी के नाम से आयोजित प्रदर्शनी के उद्घाटन के साथ हुई, जिसमें आचार्य नरेंद्र देव कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बृजेंद्र सिंह और काशी प्रांत की सह–मंत्री आंचल सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं।

जनाबे फातमा जहरा के जन्म दिवस पर मनाया गया जश्न

सुल्तानपुर(एजेंसी)। कमर हैदर खान की तरफ से महेल रिसोर्ट बैंकवेट लान अमहट में मंगलवार को रात में मोहम्मद साहब की बेटी जनाबे फातमा जहरा सलामुल्लाह अलैहा के जन्म दिवस के अवसर पर एक महफिल शेरो शायरी का आयोजन करके जश्न मनाया गया। जिसमें तकरीर मौलाना जीशान हैदर सुलतानपुरी संचालन प्रोफेसर डॉ.अब्बास रजा नैयर जलालपुरी ने किया। उक्त कार्यक्रम में मौलाना मुशीर अब्बास खान, मौलाना मोहम्मद जाफर खान, मौलाना आसिफ नकवी, मौलाना शकील अहमद खान, सलीम बलरामपुरी, फाजिल जरैलवी, अलताफ जिया मालेगॉव, खुर्शीद मुजफ्फर नगरी, एकबाल अशहर देहली, अली हैदर, जोहेर, वकार सुलतानपुरी ने अपना कसीदा सुनाया। इनके अलावा रजमी सुलतानपुरी आदि शायर–ए–अहलेबैत मौजूद रहे। उक्त जानकारी हैदर अब्बास खान अध्यक्ष हुसैनी शिया वेलफेयर एसोसिएशन सुलतानपुर ने दी है।

गोमती मित्र और विश्व हिन्दु महासंघ ने मनाया तुलसी पूजन दिवस

सुल्तानपुर(एजेंसी)। तुलसी पूजन दिवस के शुभ अवसर पर 25 दिसंबर को देर शाम गोमती मित्र मंडल व विश्व हिंदू महासंघ द्वारा सीता कुंड धाम स्थित सीता उपवन में तुलसी पूजन दिवस मनाया गया। जिसमें बच्चों, महिलाओं व पुरुषों द्वारा हरिप्रिया तुलसी माता का वैदिक मंत्रोच्चार के साथ तिलक लगाकर एवं अक्षत, प्रसाद, पुष्प अर्पित कर आरती व परिक्रमा के साथ पूजन किया गया। गोमती मित्र मंडल के प्रदेश अध्यक्ष रुद्र प्रताप सिंह मदन ने कहा कि आज लोग अपनी संस्कृति को भूलते जा रहे हैं जिससे आने वाली पीढ़ी प्रभावित हो रही है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य हमारी संस्कृति को बचाना है, विश्व हिंदू महासंघ के जिला अध्यक्ष डॉ कुंवर दिनकर प्रताप सिंह ने बताया कि पूजन का उद्देश्य केवल धार्मिक आस्था को मजबूत करना नहीं बल्कि यह भी बताना है कि प्रकृति का संरक्षण कितना महत्वपूर्ण है। गौ रक्षा वाहिनी के वरिष्ठ पदाधिकारी राकेश सिंह दद्दू ने सभी से तुलसी के औषधीय महत्व को समझते हुए इन्हें संरक्षित करने का संकल्प लेने का आवाहन किया,, अंत में सभी को प्रसाद वितरित किया गया।

संयुक्त समायोजित शिक्षक संघ के जिला अध्यक्ष मनोनीत हुए बृजेश कुमार सिंह

लंभुआध्सुल्तानपुर(एजेंसी)। बृजेश कुमार सिंह सहायक अध्यापक प्रा वि पिलखिनी वि.क्षे लंभुआ जनपद सुलतानपुर को संयुक्त समायोजित शिक्षक संघ के प्रदेश अध्यक्ष की तरफ से संगठन के जिला इकाई के सबसे अहम और महत्वपूर्ण पद जिला अध्यक्ष के लिए मनोनयन किया गया। शिक्षक बृजेश कुमार सिंह अपनी कर्तव्य निष्ठा और ईमानदारी के लिए विभाग में जाने जाते हैं।उनके मनोनयन के अवसर पर सुलतानपुर के शिक्षक रणवीर सिंह ब्लॉक अध्यक्ष लंभुआ, सुशांत मिश्र, राणा सिंह, सनत कुमार सिंह, मनीष कुमार सिंह, विवेक कुमार सिंह, संदीप गोस्वामी उमेश तिवारी, पंकज तिवारी, संतोष कुमार पाण्डेय, अभिनव सिंह आदि ने बृजेश कुमार सिंह को बधाई दी। उनके शिक्षक साथियों ने बताया कि बृजेश सिंह विभागीय समस्याओं के निस्तारण के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। वे स्वयं मुख्यालय पहुंचकर शिक्षकों की समस्याओं का समाधान कराते हैं। उम्मीद की जाती है कि उनके द्वारा नवीन दायित्व का निर्वहन पूर्ण मनोयोग से किया जाएगा।

प्ले ग्रुप स्कूल के नन्हे मुन्ने बच्चों ने बनाया तुलसी पूजन दिवस

सुल्तानपुर।(एजेंसी) हिंदी मान्यता के अनुसार पंचवटी प्ले स्कूल डे केयर में 25 दिसंबर को परम पूज्य संत श्री रविशंकर गुरु भाई के निर्देश पर तुलसी पूजन दिवस के रूप में मनाया गया।

तुलसी पूजन दिवस के आयोजक पंचवटी प्ले स्कूल डे एंड केयर कंचन कसौधन ने बताया कि प्ले स्कूल के नन्हे मुन्ने बच्चों द्वारा तुलसी पूजन दिवस मनाया गया। इस दौरान बच्चों को मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचंद्र की जीवन पर भी प्रकाश डालते हुए कहा कि सभी को अपने घरों में तुलसी का एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए जो मानव जीवन की सुरक्षा के लिए बहुत ही कारगर है तुलसी के पेड़ को ऑक्सीजन प्रदाता कहा जाता है। तुलसी के पत्ते को हम दवा के रूप में प्रयोग करते हैं। इस अवसर पर नन्हे मुन्ने बच्चों के बीच स्कूल की अध्यापिका रजनी सिंह, परी श्रीवास्तव, गरिमा त्रिपाठी, ज्योति गुप्ता उपस्थिति रही।

दलित महिला प्रधान से धनउगाही की मांग पर आधा दर्जन से अधिक आरोपियों पर केस

लालगंज, प्रतापगढ़। दलित महिला प्रधान से जांच के नाम पर धनउगाही तथा मानसिक प्रताड़ना को लेकर पुलिस ने आधा दर्जन से अधिक आरोपियों के खिलाफ दलित उत्पीड़न समेत गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया है। लीलापुर थानान्तर्गत लक्ष्मणपुर विकासखण्ड की रामपुर खजूर ग्राम पंचायत की प्रधान रेनू देवी ने पुलिस को दी गई तहरीर मे कहा है कि एक किसान संगठन के पदाधिकारियों समेत आरोपियो ने उसकी ग्राम पंचायत के सरबाजपुर, पुतईपुर, आदि पुरवो मे तेईस दिसंबर को दिन में तीन बजे कथित जांच पड़ताल किया। आरोपियों ने अवैधानिक रूप से उसके गांव में आवास, शौचालय, खडण्जा, पेंशन, राशनकार्ड आदि की जांच के लिए पहुंचे। इसकी जानकारी ग्रामीणों ने उसके पति विमलेश कुमार सरोज को दी। आरोप है कि रात में लगभग साढ़े आठ बजे महिला प्रधान के पति के मोबाइल पर फोन कॉल के जरिए चार लाख रूपये की मांग की गयी। आरोपी ने यह भी धमकाया कि पैसा न देने पर प्रधानी समाप्त हो जाएगी। घटनाक्रम को लेकर एक आडियो भी वायरल हुआ है। प्रधान की तहरीर पर आरोपी अखिलेश कुमार, गंगाबक्श सिंह, राकेश गिरि, अनीता गौतम, मो. हई, राकेश सिंह, शील गहलौत तथा एक अखबार समूह के खिलाफ पुलिस ने केस दर्ज किया है। प्रभारी निरीक्षक अरूण सिंह का कहना है कि केस दर्ज किया गया है, जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

जनसेवक ग्राम प्रधान ने तालाब की जमीन पर मकान बना कर लिया कब्जा

सुल्तानपुर। तहसील क्षेत्र बल्दीराय की ग्राम पंचायत पीरोसरैया में जनता का प्रतिनिधित्व करने वाले ग्रामप्रधान ने ही तालाबी नम्बर में व्यवसायिक मकान बनाकर अवैध अतिक्रमण किया है। जिसकी पैमाइस तहसील की राजस्व टीम ने करवा करके पुष्टि कर दी है। ग्राम पंचायत के निवासी अजय ने इसकी शिकायत जिलाधिकारी से करके कार्यवाही की मांग की है।

बता दे कि ग्रामसभा पीरोसरैया प्रधान शिव बहादुर द्वारा तालाबी गाटा संख्या 1187 में ,पक्का मकान निर्माणकर अवैध कब्जा कर लिया है जिसकी पुष्टि भी राजस्व टीम के पैमाइस के बाद हो चुकी है। जिसमें प्रधान के ऊपर तहसील प्रशासन द्वारा मुकदमा दर्जकर बेदखली व जुर्माना का आदेश भी दिया जा चुका है। ग्राम पंचायत के निवासी अजय कुमार ने ग्रामप्रधान द्वारा तालाबी गाटा की वेशकीमती जमीन पर अवैध कब्जा कर ब्यवसायिक भवन निर्माण कर अपने पद का दुरुपयोग करने ,व ग्राम पंचायतध्राज्य सरकार की क्षति करने की पुष्टि रिपोर्ट की प्रतिलिपि के साथ जिलाधिकारी को शिकायतीपत्र देते हुए ,उचित कार्यवाही व प्रधानपद के बर्खास्तगी की मांग की है। जिसके क्रम में जिलाधिकारी ने जिला पंचायतराज अधिकारी को आवश्यक कार्यवाही कर आख्या रिपोर्ट मांगी है।

2025-26 में राजकोषीय घाटा कम करने पर जोर देगी सरकार

नई दिल्ली ,26 दिसंबर । वित्त मंत्रालय के एक बयान के अनुसार, सरकार गुणवत्तापूर्ण व्यय में सुधार, सामाजिक सुरक्षा को मजबूत करने और वित्त वर्ष 2025–2026 में राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 4.5 प्रतिशत तक कम करने पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखेगी।

वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण द्वारा 1 फरवरी को संसद में 2025–26 के लिए केंद्रीय बजट पेश किया जाएगा। इस दौरान राजकोषीय घाटे को नियंत्रण में रखते हुए बड़े बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं और गरीबों के लिए सामाजिक कल्याण योजनाओं पर खर्च बढ़ाने की सरकार की स्थिति को जारी रखे जाने की उम्मीद है।

प्राप्तियों और व्यय के रुझानों की अर्ध–वार्षिक समीक्षा पर वित्त मंत्रालय के बयानों के अनुसार, सरकार राजकोषीय कंसोलिडेशन के के ग्लाइड पथ पर चलने के लिए प्रतिबद्ध है, जिसका लक्ष्य वित्त वर्ष 2025–26 तक राजकोषीय घाटे को जीडीपी के 4.5 प्रतिशत तक कम करना है।

समीक्षा में कहा गया है, सार्वजनिक व्यय की गुणवत्ता में सुधार लाने पर जोर दिया जाएगा, साथ ही गरीबों और जरूरतमंदों के लिए सामाजिक सुरक्षा को मजबूत किया जाएगा।

यह दृष्टिकोण देश के बड़े आर्थिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करने और वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करने में मदद करेगा।

बयानों के अनुसार, बजट 2024–25 यूरोप और मध्य पूर्व में युद्धों के कारण वैश्विक अनिश्चितताओं को ध्यान में रखते हुए पेश किया गया था।

भारत के मजबूत आर्थिक बुनियादी ढांचे ने देश को वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाली अनिश्चितताओं से बचाया है।

बयान में कहा गया, इसने देश को राजकोषीय समेकन के साथ विकास को आगे बढ़ाने में भी मदद की है। नतीजतन, भारत दुनिया में सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में अपना गौरव बरकरार रखता है। हालांकि, विकास के लिए जोखिम अभी भी बने हुए हैं।

2024–25 के बजट अनुमान के अनुसार कुल व्यय 48.21 लाख करोड़ रुपये अनुमानित था, जिसमें राजस्व खाते और पूंजी खाते पर व्यय क्रमशरू 37.09 लाख करोड़ रुपये और 11.11 लाख करोड़ रुपये अनुमानित था।

48.21 लाख करोड़ रुपये के कुल व्यय के मुकाबले, वित्त वर्ष 2025 की पहली छमाही में व्यय 21.11 लाख करोड़ रुपये या बजट अनुमान का लगभग 43.8 प्रतिशत था।

पूंजीगत परिसंपत्तियों के निर्माण के लिए अनुदान को ध्यान में रखते हुए, प्रभावी पूंजीगत व्यय 15. 02 लाख करोड़ रुपये अनुमानित किया गया था।

सकल कर राजस्व 38.40 लाख करोड़ रुपये अनुमानित था, जिसमें निहित कर–जीडीपी अनुपात 11.8 प्रतिशत था। केंद्र की कुल गैर–ऋण प्राप्ति 32.07 लाख करोड़ रुपये अनुमानित थी।

इसमें 25.83 लाख करोड़ रुपये का कर राजस्व (केंद्र को शुद्ध), 5. 46 लाख करोड़ रुपये का गैर–कर राजस्व और 0.78 लाख करोड़ रुपये की विविध पूंजी प्राप्तियां शामिल थीं।

प्राप्तियों और व्यय के इन अनुमानों के साथ, राजकोषीय घाटा 2024–25 के बजट अनुमान में 16. 13 लाख करोड़ रुपये या जीडीपी का 4.9 प्रतिशत आंका गया था।

वर्ष 2023–25 की पहली छमाही में राजकोषीय घाटा 4.75 लाख करोड़ रुपये या बजट अनुमान का लगभग 29.4 प्रतिशत रहने का अनुमान है।

केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) द्वारा जारी लेटेस्ट आंकड़ों के अनुसार, चालू वित्त वर्ष के दौरान 1 अप्रैल से 10 नवंबर तक भारत का शुद्ध प्रत्यक्ष कर संग्रह, जिसमें कॉर्पोरेट कर और व्यक्तिगत आयकर शामिल हैं, 15.4 प्रतिशत बढ़कर 12.1 लाख करोड़ रुपये हो गया।

इसी तरह, बढ़ती आर्थिक गतिविधियों के कारण जीएसटी संग्रह में भी शानदार वृद्धि हुई है।

कर संग्रह में उछाल से सरकार के खजाने में अधिक धनराशि आती है और इससे राजकोषीय घाटे को नियंत्रित करने में मदद मिलेगी, जो अर्थव्यवस्था के आर्थिक बुनियादी ढांचे को मजबूत करता है।कम राजकोषीय घाटे का मतलब है कि सरकार को कम उधार लेना पड़ता है, जिससे बड़ी कंपनियों के लिए बैंकिंग प्रणाली में उधार लेने और निवेश करने के लिए अधिक पैसा बचता है। इससे बदले में उच्च आर्थिक विकास दर और अधिक नौकरियों के अवसर पैदा होते हैं।

इसके अलावा, कम राजकोषीय घाटा मुद्रास्फीति दर को भी नियंत्रित रखता है, जिससे अर्थव्यवस्था को स्थिरता मिलती है।

आस्ट्रेलिया के शीर्ष चार बल्लेबाजों ने ठोके अर्धशतक, बुमराह ने भारत की वापसी कराई

0–पहले दिन का खेल बराबरी पर छूटा

मेलबर्न, 26 दिसंबर। भारत और ऑस्ट्रेलिया के बीच मेलबर्न में बॉर्डर–गावस्कर सीरीज के चौथे टेस्ट की शुरुआत हो चुकी है. बॉक्सिंग डे पर शुरु हुए इस टेस्ट में ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग करने का निर्णय लिया है और पहले दिन की समाप्ती तक मजबूत स्कोर बना लिया है. ऑस्ट्रेलिया के लिए सैम कोंटास, उस्मान ख्वाजा, मार्नस लाबुशेन और स्टीव स्मिथ ने अर्धशतक लगाए.ऑस्ट्रेलिया के लिए इस मैच में 19 साल के सैम कोंस्टास ने डेब्यू किया. दाएं हाथ के इस विस्फोटक सलामी बल्लेबाज ने 65 गेंद पर 60 रन की पारी खेली. इसके अलावा उस्मान ख्वाजा ने 57, मार्नस लाबुशेन ने 72 रन बनाए, एलेक्स कैरी 31 रन बनाकर आउट हुए. स्टीव स्मिथ रन पर नाबाद हैं. पहले दिन का खेल समाप्त होने तक ऑस्ट्रेलिया ने 6 विकेट के नुकसान पर 311 रन बना लिए हैं.दिन के पहले 2 सेशन ऑस्ट्रेलिया के नाम रहे थे. कंगारु टीम ने सिर्फ 2 विकेट के नुकसान पर 200 से उपर रन बना दिए थे लेकिन तीसरे सेशन में भारत ने वापसी की और विकेट गिरा दिए. भारत की वापसी जसप्रीत बुमराह ने कराई. हेड को 0 और मार्श को 4 के स्कोर पर आउट कर टीम इंडिया ने वापसी की नहीं तो ऑस्ट्रेलिया और मजबूत स्थिति में हो सकती थी. तीसरे सेशन में भारत को 4 विकेट मिले जिसमें 2 बुमराह के थे. बुमराह को अबतक कुल 3 विकेट मिले हैं.जसप्रीत बुमराह ने इस मैच में भारत की वापसी जरुर कराई लेकिन एक बार फिर से उन्हें दूसरे तेज गेंदबाजों मोहम्मद सिराज और आकाश दीप से उम्मीद के मुताबिक साथ नहीं मिल सका. नीतिश रेड्डी असरहीन रहे और कप्तान ने उनसे ज्यादा गेंदबाजी भी नहीं कराई. आकाश दीप, जडेजा और सुंदर को 1–1 विकेट मिले.भारतीय टीम इस मैच में 1 बड़े बदलाव के साथ उतरी है. टीम इंडिया की प्लेइंग इलेवन में शुभमन गिल को मौका नहीं मिल पाया है. लगातार विदेशी पिच पर खराब प्रदर्शन की वजह से उन्हें टीम से बाहर किया गया है. उनकी जगह किसी बल्लेबाज को नहीं बल्कि ऑलराउंडर वाशिंगटन सुंदर को टीम में जगह दी गई है.

एंडी पाइक्रॉफ्ट 100 पुरुष टेस्ट में रेफरी बनने वाले चौथे मैच रेफरी बने

मेलबर्न, 26 दिसंबर। मेलबर्न डे टेस्ट में जिम्बाब्वे के पूर्व कप्तान एंडी हैं।1983 से 1992 तक जिम्बाब्वे के पाइक्रॉफ्ट रंजन मदुगले (225 बार), में यह अनूठी उपलब्धि हासिल करने

उन्होंने आईसीसी के एक बयान दुनिया भर में अलग–अलग संस्कृतियों खुशी की बात है।मैं आईसीसी को उनके पेशेवर रवैये और मित्रता के सहनशीलता के लिए धन्यवाद देना कर रखा है।

1983, 1987 और 1992 के वनडे वनडे, 174 पुरुष टी20 और 21 महिला अद्भुत मील के पत्थर को पार कर रहे

आईसीसी के वरिष्ठ प्रबंधक–सदस्य के रूप में, वह खेल की रक्षा एंडी का खिलाड़ियों और साथियों द्वारा समान रूप से सम्मान किया जाता है, और हम भाग्यशाली हैं कि वह हमारी टीम में हैं। मैच रेफरी बनने से पहले, पाइक्रॉफ्ट ने प्रशासन में काम किया था, जिम्बाब्वे अंडर 19 टीम का प्रबंधन किया था और सीनियर पुरुष टीम को कोचिंग दी थी।

क्रिकेट ग्राउंड (एमसीजी) में ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच चल रहे बॉक्सिंग पाइक्रॉफ्ट 100 पुरुष टेस्ट मैचों में मैच रेफरी बनने वाले चौथे व्यक्ति बन गए लिए तीन टेस्ट मैचों में 152 रन और 20 वनडे मैचों में 220 रन बनाने वाले जेफ क्रो (125 बार) और क्रिस ब्रॉड (123 बार) के साथ मैच रेफरी के रूप वाले एक विशेष क्लब में शामिल हो गए हैं।

में कहा, आईसीसी के एलीट पैनल ऑफ मैच रेफरी में शामिल होना और को अपनाते हुए काम करने का अवसर मिलना मेरे लिए बहुत सम्मान और उसके समर्थन के लिए, मेरे साथी मैच अधिकारियों, भूतपूर्व और वर्तमान को, लिए, और मेरी पत्नी, करेन और मेरे परिवार को, उनके प्रोत्साहन और चाहता हूं। यह एक पुरस्कृत यात्रा रही है, और मैंने इसके हर पल को संजो

विश्व कप में जिम्बाब्वे के लिए खेलने वाले पाइक्रॉफ्ट ने 2009 से 238 पुरुष टी20 में भी काम किया है। मैं एंडी को बधाई देना चाहता हूं क्योंकि वह इस हैं – आईसीसी मैच रेफरी के रूप में टेस्ट मैचों की एक शताब्दी।

अंपायर और रेफरी सीन ईजी ने कहा, हमारे एलीट पैनल के एक अनुभवी और सुधार के लिए क्रिकेट की अपनी समझ का लगातार लाभ उठाते हैं।

मेलबर्न में विराट कोहली और सैम कोंस्टास के बीच हुई नोकझोंक

मेलबर्न, 26 दिसंबर। मेलबर्न टेस्ट के पहले दिन भारत के सीनियर खिलाड़ी विराट कोहली और ऑस्ट्रेलिया के लिए डेब्यू कर रहे सैम कोंस्टास के बीच टकराव हो गया। यह घटनाक्रम 10वें ओवर के दौरान घटित हुआ जब कोहली और कोंस्टास ओवर की समाप्ति के बाद पिच पर आपस में टकरा गए। इसके तुरंत बाद दोनों खिलाड़ियों के बीच जुबानी भिड़ंत भी हुई लेकिन यह ज़्यादा देर नहीं चली और उस्मान ख्वाजा ने बीच बचाव कर दिया।सत्र में बाद में रिप्ले सामने आने पर यह दिखा कि कोंस्टास दूसरे छोर की ओर जा रहे थे लेकिन पिच के बाहर से गेंद को हाथ में टॉस करते हुए आ रहे कोहली कोंस्टास से टकरा गए।कोंस्टास ने चौनल सेवन को बाद में कहा, मैं समझ नहीं पाया। मैं दस्ताने ठीक कर रहा था और तब कंधे टकरा गए। लेकिन यह क्रिकेट में होता रहता है।ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने कमेंट्री के दौरान कहा, जरा देखिए विराट कैसे चल रहे हैं। विराट पिच की दाईं तरफ गए और इस टकराव की शुरुआत उन्हीं की ओर से हुई।चौनल सेवन से बात करते हुए साइमन टॉफेल ने इस घटनाक्रम पर बात करते हुए इस घटना को आईसीसी के कोड ऑफ कंडक्ट के तहत अनुचित करार दिया।टॉफेल ने कहा, डायरेक्टर द्वारा मुहैया कराए गए लॉन्ग शॉट से यह स्पष्ट होता है कि विराट कोहली अपनी लाइन बदलते हुए कोंस्टास की लाइन में आ रहे हैं।आईसीसी के कोड ऑफ कंडक्ट में एक प्रावधान है, जो अनुचित शारीरिक व्यवहार से संबंधित है। दिन के खेल की समाप्ति के बाद देखना होगा कि कोहली का यह व्यवहार इसके दायरे में आता है या नहीं। मुझे लगता है कि अंपायर और रेफरी इस मामले को गंभीरता से ले रहे होंगे, ।19 वर्षीय कोंस्टास ने अपने टेस्ट डेब्यू पर महज 52 गेंदों पर अर्धशतक पूरा किया। कोहली के साथ जब उनका टकराव हुआ तब वह 38 गेंदों पर 27 रन बनाकर खेल रहे थे। जसप्रीत बुमराह की गेंद पर कुछ दर्शनीय स्कूप और रैप शॉट खेलते हुए कॉन्स्टास ने छह चौके और दो छक्के की मदद से 65 गेंदों पर 60 रन बनाए। लंच ब्रेक से पहले वह रवींद्र जडेजा का शिकार बने।

पहले ही मैच में बुमराह के एक ओवर में 18 रन जड़ सुर्खियों में आए सैम कोंस्टास

मेलबर्न, 26 दिसम्बर। भारत और आस्ट्रेलिया के बीच खेले जा रहे बाक्सिंग डे टेस्ट मैच में डेब्यू करने वाले आस्ट्रेलियाई युवा सलामी बल्लेबाज ने दुनिया के नंबर एक गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को नहीं बख्शा। आउट होने के बाद उन्होंने कहा कि वह आगे भी सीरीज में ऐसे ही खेलते रहेंगे।19 वर्षीय कोनस्टास ने 65 गेंदों पर 60 रनों की धमाकेदार पारी खेलकर सीरीज के बचे हुए मैच के लिए टीम इंडिया को आगाह कर दिया है।

ऑस्ट्रेलियाई युवा खिलाड़ी ने पारी के सातवें ओवर में बुमराह के खिलाफ रैप शॉट खेलते हुए बेहतरीन बाउंड्री लगाई। इसके बाद उन्होंने बुमराह के ओवर में कई चौके और 2 छक्के जड़े।भारतीय शीर्ष खिलाड़ी को पिछले चार वर्षों में खेले गए पिछले 25 टेस्ट मैचों में कोई छक्का नहीं लगा था।जब पारी का 11वां ओवर बुमराह फेंकने आए तो कोनस्टास ने एक छक्का और दो चौके की मदद से 18 रन बनाए। इससे पहले भी पारी के 7वें ओवर में जसप्रीत बुमराह को निशाना बनाते हुए एक छक्के और दो चौके की मदद से 14 रन लिए थे।कोनस्टास ने ड्रिंक्स ब्रेक के दौरान फॉक्स क्रिकेट से कहा, यह अविश्वसनीय है, दर्शकों की संख्या को देखिए, मैं बस कुछ स्वतंत्रता के साथ खेलने और खुद पर भरोसा करने की कोशिश कर रहा हूं और उम्मीद है कि मैं कुछ और रन बना पाऊंगा।जब उनसे पूछा गया कि क्या बुमराह के खिलाफ उनका रैप्प शॉट पहले से ही सोचा–समझा था तो उन्होंने कहा, नीचे आ रही गेंद पर मैंने ध्यान दिया। मैं निशाना बनाना जारी रखूंगा और उम्मीद है कि ऐसा फिर होगा, लेकिन देखते है क्या होता है।कोनस्टास ने डेब्यू पर पहला अर्धशतक सिर्फ 52 गेंदों पर लगाया। ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट इतिहास में तीसरा सबसे तेज अर्धशतक था। इससे पहले एडम गिलक्रिस्ट और एश्टन एगर ने ये कारनामा किया था।उन्होंने रवींद्र जडेजा की गेंद पर एलबीडब्यू आउट होने से पहले विकेट के लिए 89 रन की साझेदारी की।

पूर्व भारतीय ऑलराउंडर इरफान पठान ने भी युवा ऑस्ट्रेलियाई खिलाड़ी की तारीफ की। उन्होंने एक्स पोस्ट में लिखा, मैं सैम कॉन्स्टास में जो देख रहा हूं वह निडरता है। ऑस्ट्रेलिया यही चाहता था। हम चाहते थे कि कोई ऐसा व्यक्ति हो जो जसप्रीत बुमराह का अलग तरीके से सामना करे।

भारत में चालू और अगले वित्त वर्ष में 6.5 प्रतिशत रियल जीडीपी वृद्धि का अनुमान : रिपोर्ट

नई दिल्ली ,26 दिसंबर । भारत में वित्त वर्ष 2025 और 2026 में 6.5 प्रतिशत रियल जीडीपी वृद्धि का अनुमान है, जो लचीली अर्थव्यवस्था और बुनियादी सुविधाओं के बीच उम्मीद के अनुकूल है।लेटेस्ट ईवाई इकोनॉमी वॉच दिसंबर 2024 ने अनुमान लगाया है कि वित्त वर्ष 2025 की पहली दो तिमाहियों की रियल जीडीपी वृद्धि क्रमशरू 6.7 प्रतिशत और 5.4 प्रतिशत, आरबीआई के संशोधित विकास अनुमानों के साथ वित्त वर्ष 2025 की तीसरी और चौथी तिमाही के लिए क्रमशरू 6.8 प्रतिशत और 7.2 प्रतिशत को एक साथ देखने के बाद वार्षिक वित्त वर्ष 2025 की रियल जीडीपी वृद्धि का अनुमान 6.6 प्रतिशत लगाया जा सकता है।रिपोर्ट में कहा गया है, हालांकि, अगर भारत सरकार के निवेश व्यय में बदलाव धीमा रहा तो तीसरी तिमाही की वृद्धि 6.5 प्रतिशत या उससे कम हो सकती है।जुलाई–सितंबर तिमाही (वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही) में रियल जीडीपी वृद्धि दर घटकर 5.4 प्रतिशत रह गई, जबकि पिछली तिमाही में यह 6.7 प्रतिशत थी।अक्टूबर और नवंबर के लिए उपलब्ध हाई फ्रिक्वेंसी डेटा भारतीय अर्थव्यवस्था की विकास गति के बारे में मिश्रित तस्वीर की ओर इशारा करते हैं।

नवंबर में मैन्युफैक्चरिंग पीएमआई में 56.5 की नरम वृद्धि देखी गई, जबकि अक्टूबर में यह 57.5 थी। हालांकि, मजबूत अंतरराष्ट्रीय मांग और कारोबारी विश्वास में सुधार के कारण सेवा पीएमआई नवंबर 2024 में 58.4 पर लगभग स्थिर रही, जो अक्टूबर 2024 में 58.5 के स्तर के करीब है।

फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशन द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, नवंबर में मोटर वाहनों की रिटेल बिक्री में 11.2 प्रतिशत की दोहरे अंकों की वृद्धि जारी रही। विशेष रूप से, दोपहिया वाहनों और ट्रैक्टर की रिटेल बिक्री में वृद्धि देखी गई।

ईवाई रिपोर्ट के अनुसार, नवंबर 2024 में दोपहिया वाहनों और ट्रैक्टरों ने क्रमशरू 15.8 प्रतिशत और 29. 9 प्रतिशत की मजबूत वृद्धि दर दिखाई।

रिपोर्ट में बताया गया है, अक्टूबर 2024 में आईआईपी वृद्धि में सितंबर के 3.1 प्रतिशत से बढ़कर 3.5 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई, जो मजबूत मैन्युफैक्चरिंग और इलेक्ट्रिसिटी उत्पादन की वजह से रही।

सीपीआई मुद्रास्फीति अक्टूबर में 6.2 प्रतिशत से घटकर नवंबर में 5.5 प्रतिशत हो गई, क्योंकि सब्जियों की कीमतों में कमी आई, जबकि कोर सीपीआई मुद्रास्फीति लगातार दूसरे महीने 3.7 प्रतिशत पर स्थिर रही।थोक मूल्य सूचकांक मुद्रास्फीति भी अक्टूबर में 2.4 प्रतिशत से घटकर नवंबर में 1.9 प्रतिशत हो गई।ईवाई इंडिया के मुख्य नीति सलाहकार डीके श्रीवास्तव के अनुसार, मध्यम अवधि में भारत की रियल जीडीपी वृद्धि की संभावनाएं 6.5 प्रतिशत प्रति वर्ष रखी जा सकती हैं, बशर्ते सरकार चालू वित्त वर्ष के शेष भाग में अपने पूंजीगत व्यय में वृद्धि को बढ़ाए और मध्यम अवधि के निवेश के साथ आए जिसमें भारत सरकार और राज्य सरकारों और उनके संबंधित सार्वजनिक क्षेत्र की संस्थाओं और निजी कॉर्पोरेट क्षेत्र की भागीदारी हो।

भारत में मान्यता प्राप्त स्टार्टअप की संख्या 1,57,066 हुई

नई दिल्ली ,26 दिसंबर । सरकार ने बुधवार को बताया कि उद्योग संवर्द्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआईआईटी) द्वारा मान्यता प्राप्त स्टार्टअप की संख्या देश में बढ़कर 1,57,066 हो गई है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अनुसार, देश में अब 73,000 से अधिक स्टार्टअप हैं, जिनमें कम से कम एक महिला निदेशक हैं, जिन्हें श्स्टार्टअप इंडिया पहलश् के तहत मान्यता दी गई है, जो सरकार द्वारा समर्थित 1,57,066 स्टार्टअप का लगभग आधा हिस्सा है।भारत पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक स्तर पर सबसे वाइब्रेंट स्टार्टअप इकोसिस्टम में से एक के रूप में उभरा है और इसने तीसरे सबसे बड़े स्टार्टअप हब के रूप में अपनी जगह बनाई है। 100 से अधिक यूनिकॉर्न के साथ भारतीय स्टार्टअप इकोसिस्टम इनोवेशन और उद्यमिता के भविष्य को नया आकार दे रहा है।मंत्रालय ने कहा कि पिछले दशक में भारत में उद्यमशीलता की भावना में आमूलचूल परिवर्तन आया है। बेंगलुरु, हैदराबाद, मुंबई और दिल्ली–एनसीआर जैसे शहर इनोवेशन के केंद्र बन गए हैं।

2024 में कुल 13 स्टार्टअप्स कंपनियों ने आईपीओ लॉन्च किए। य संख्या पिछले कई वर्षों की तुलना में काफी अधिक थी। वहीं, यह आंकड़ा 2021 में 10, 2022 में 6 और 2023 में 6 पर था।इन सभी 13 स्टार्टअप कंपनियों ने मिलकर 29,247.4 करोड़ रुपये शेयर बाजार से जुटाए हैं। इसमें से 14,672.9 करोड़ रुपये का फ्रेश इश्यू था, जबकि 14,574.5 करोड़ रुपये का ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) था।किफायती इंटरनेट की व्यापक उपलब्धता, साथ ही युवा और गतिशील कार्यबल ने फिनटेक, एडटेक, हेल्थ–टेक और ई–कॉमर्स सहित विविध क्षेत्रों में स्टार्टअप के विकास को बढ़ावा दिया है।स्टार्टअप इंडिया द्वारा पेश की गई श्भारतीय स्टार्टअप इकोसिस्टम रिपोर्टश् के अनुसार, भारत के स्टार्टअप ने स्थानीय और वैश्विक समस्याओं को हल करने के लिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), ब्लॉकचेन और आईओटी जैसी उभरती तकनीकों का लाभ उठाया है।केंद्र सरकार द्वारा 2016 में शुरू किया गया स्टार्टअप इंडिया कार्यक्रम इस प्रयास की आधारशिला रहा है।इसके अलावा अटल इनोवेशन मिशन (एआईएम) और नेशनल इनिशिएटिव फॉर डेवलपिंग एंड हार्नेसिंग इनोवेशन (एनआईडीएचआई) जैसी पहल इनोवेटर्स को बुनियादी ढांचा और वित्तीय सहायता प्रदान करती हैं।

न्यू ईयर से पहले बाजार में दिखी तेजी, सरकारी बैंकों के शेयर उछले

मुंबई ,26 दिसंबर । क्रिसमस की छुट्टी के बाद भारतीय शेयर बाजार आज गुरुवार को बढ़त के साथ खुला है। बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज का सूचकांक सेंसेक्स आज 78,557.28 अंक पर खुला। शुरुआती कारोबार में यह 0.44 फीसदी या 344 अंक की बढ़त लेकर 78,816 पर ट्रेड करता दिखाई दिया। शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स के 30 शेयरों में से 28 शेयर हरे निशान पर और 2 शेयर लाल निशान पर थे। वहीं, नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का सूचकांक निफ्टी आज 0.37 फीसदी या 88.95 अंक की बढ़त लेकर 23,816 पर ट्रेड करता दिखाई दिया। निफ्टी पैक के 50 शेयरों में से 42 शेयर हरे निशान पर और 8 शेयर लाल निशान पर थे।

इन शेयरों में दिखी तेजी

निफ्टी पैक के शेयरों में सबसे अधिक तेजी मारुति में 1.11 फीसदी, बीपीसीएल में 1.10 फीसदी, एसबीआई में 1 फीसदी, एक्सिस बैंक में 1 फीसदी और आईसीआईसीआई बैंक में 0.94 फीसदी देखने को मिली। वहीं, सबसे अधिक गिरावट एशियन पेंट में 0.49 फीसदी, सिप्ला में 0.32 फीसदी, ट्रेंट में 0.24 फीसदी, डॉ रेड्डी में 0.23 फीसदी और टीसीएस में 0.14 फीसदी देखने को मिली।

रामायण विवाद पर सोनाक्षी के भाई ने स्वीकार की गलती

मुकेश खन्ना ने पिछले दिनों सोनाक्षी सिन्हा की परवरिश और संस्कारों पर सवाल खड़े किए और अभिनेत्री को उनके रामायण ज्ञान को लेकर निशाने पर लिया। सोनाक्षी से भी ये सब देखा और सुना नहीं गया, जिस पर उन्होंने तुरंत प्रतिक्रिया दी और जवाब में एक लंबा–चौड़ा पोस्ट शेयर कर दिया। अपने पोस्ट में सोनाक्षी मुकेश खन्ना पर जमकर बरसीं, जिसके बाद अभिनेता को अनमने ढंग से ही सही, लेकिन माफी मांगनी पड़ी। अब इस पूरे विवाद पर सोनाक्षी सिन्हा के भाई लव सिन्हा ने भी प्रतिक्रिया दी है। एक इवेंट में पहुंचे लव सिन्हा से जब मुकेश खन्ना और सोनाक्षी के बीच के विवाद के बारे में पूछा गया तो वह इशारों–इशारों में अपनी बहन की गलती बताते दिखे और साथ ही पिता शत्रुघ्न सिन्हा के जवाब से सहमत नजर आए।लव सिन्हा ने कहा– अभी उन्होंने जवाब दे दिया है। हो सकता है, मेरा जवाब थोड़ा अलग होता। मैं अपने पिताजी के जवाब से ज्यादा सहमत हूं। पापा हमेशा संक्षेप में बोलते हैं, लेकिन उन्हें जो बोलना होता है वह बोल देते हैं। मुकेश जी जाहिर तौर पर मेरे काफी सीनियर हैं। उनको पापा के बारे में ये सब नहीं बोलना चाहिए था। सोनाक्षी के बारे में उन्हें अभी कुछ नहीं कहना चाहिए था, क्योंकि वो बात काफी पुरानी हो गई है। वो गलती तो थी, मगर पुरानी गलती थी।

सोनाक्षी सिन्हा ने 2019 में अमिताभ बच्चन के क्विज शो कौन बनेगा करोड़पति में शिरकत की थी। इसी दौरान उनसे रामायण से जुड़ा सवाल किया गया, जिसका वह जवाब नहीं दे पाई थीं। सोनाक्षी की इसी गलती पर निशाना साधते हुए मुकेश खन्ना ने हाल ही में एक इंटरव्यू में कहा कि शत्रुघ्न सिन्हा ने अपने बच्चों को सनातन धर्म के बारे में कुछ नहीं सिखाया है। इसी के साथ उन्होंने शत्रुघ्न सिन्हा की परवरिश पर भी सवाल खड़े किए थे। ¼fgQ½

सूर्या और पूजा हेगड़े की अगली फिल्म के शीर्षक से उठा पर्दा, रेट्रो का टीजर भी आया सामने

सूर्या और निर्देशक कार्तिक सुब्बराज की बहुप्रतीक्षित फिल्म का आखिरकार नाम सामने आ गया है। इस फिल्म का नाम रेट्रो रखा गया है। इसके साथ ही निर्माताओं ने क्रिसमस के मौके पर एक रोमांचक टाइटल प्रोमो भी जारी किया। रेट्रो एक गैंगस्टर ड्रामा है, जिसमें पूजा हेगड़े भी एक महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आएंगी।

सूर्या ने अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर टाइटल टीजर का लिंक साझा करते हुए लिखा, सभी को मेरी क्रिसमसद्य रेट्रो 2025 की गर्मियों में आ रही है...जल्द मिलते हैं....। वहीं, पूजा हेगड़े ने भी फिल्म की झलक अपने सोशल मीडिया हैंडल से शेयर की है।

दो मिनट और पांच सेकंड का यह टीजर सूर्या और पूजा हेगड़े के किरदार क ।`

बनारस के घाट के किनारे बैठे हुए दिखाता है। पूजा हलके गुलाबी रंग की साड़ी में हैं, जबकि सूर्या इसमें काले कुर्ते में नजर आ रहे हैं। पूजा उनके हाथ में एक पवित्र धागा बांधती हैं। सूर्या उनकी आंखों में देखकर तमिल में कहते हैं, मैं अपने गुस्से पर काबू पाऊंगा। मैं अपने पिता के साथ काम करना छोड़ दूंगा। हिंसा, गुंडागर्दी, लाठी–गोलीकृअब सब कुछ छोड़ दूंगा। मैं मुस्कुराने की कोशिश करूंगा और खुश रहने की कोशिश करूंगा। मेरे जीवन का उद्देश्य तुम्हारे शब्दों में प्रेम है। शुद्ध प्रेम। बस यही। मैं सब कुछ सीधे और ईमानदारी से कह रहा हूं। अब बताओ क्या हमें शादी कर लेनी चाहिए?

सूर्या को आखिरी बार कंगुवा फिल्म में देखा गया था। इस फिल्म में बॉबी देओल ने विलेन का रोल निभाया था। फिल्म को बड़े बजट में तैयार किया गया था। हालांकि, दर्शकों को यह फिल्म बिल्कुल भी पसंद नहीं आई थी। बॉक्स ऑफिस पर यह फिल्म बुरी तरह फ्लॉप रही थी।

ललिता पवार कभी नहीं भूल सकतीं जंगे आजादी का हादसा

साल 1942 में ललिता पवार भगवान दादा के साथ जंग ए आजादी मूवी में शूट कर रही थीं। एक सीन के लिए भगवान दादा ने ललिता पवार को इतनी जोर से थप्पड़ मारा कि ललिता पवार के चेहरे को लकवा मार गया और उनकी एक आंख की नस भी फट गई, जिसका इलाज तीन साल तक चला। आंख पूरी तरह ठीक नहीं हो पाई। तीनसाल के गैप के बाद ललिता पवार फिल्मी पर्दे पर लौटीं लेकिन फिर उन्हें हीरोइन्स वाले रोल नहीं मिले। मजबूरन उन्हें निगेटिव किरदार चुनने पड़े। इन किरदारों में भी उन्होंने ऐसी जान डाली कि वो सबसे खूंखार लेडी विलेन मानी जाती हैं। उनकी आवाज सुनकर एक्ट्रेस थरथर कांपा करती थीं।बॉलीवुड में विलेन्स की जबरदस्त भरमार है। ऐसी बहुत ही कम फिल्में होती हैं जो बिना विलेन के पूरी हो जाए। थोड़े बदलावों के बाद फिल्मों में प्रोटागोनिस्ट होने लगे हैं तो एंटागोनिस्ट भी दिखाई देते हैं जो भले ही पारंपरिक विलेन जैसे न दिखे लेकिन उनका किरदार निगेटिव शेड में होता है। आमतौर पर ये एरिया मेल डोमिनेंस वाला रहा है लेकिन कुछ एक्ट्रेस भी ऐसी रही हैं जो फीमेल एंटागोनिस्ट या फीमेल विलेन के रूप में जबरदस्त हिट रही हैं। उन्हीं में से एक एक्ट्रेस ऐसी थी जिसका फिल्मी करियर तो बतौर हीरोइन शुरू हुआ। फिर एक हादसे की वजह वो विलेन बनने पर मजबूर हो गईं।

ललिता पवार ने अपने फिल्मी करियर में करीब 700 फिल्मों में काम किया साल 1928 से लेकर 1997 तक वो फिल्मी दुनिया में एक्टिव रहीं। हिंदी सिनेमा की पहले अबोली फिल्म राजा हरीशचंद्र से उन्होंने काम करना शुरू किया। बहुत सी ऐसी मूक फिल्में हैं जिसमें ललिता पवार बतौर एक्ट्रेस नजर आईं। 1932 में रिलीज हुई एक फिल्म कैलाश को ललिता पवार ने को प्रड्यूस भी किया और खुद उसमें एक्टिंग भी की। ¼fgQ½

थाई स्लिट ड्रेस पहने श्रद्धा दास ने बिखेरा हुस्न का जलाव

साउथ एक्ट्रेस श्रद्धा दास हमेशा अपने लेटेस्ट लुक्स की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर अक्सर फैंस के होश उड़ाती रहती हैं। उनका कातिलाना अवतार इंटरनेट पर आते ही तेजी से वायरल होने लगता है। अब हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें फैंस के बीच साझा की हैं। इन तस्वीरों में उनका सेक्सी और हॉट अवतार देखकर लोग दीवाने हो गए हैं।

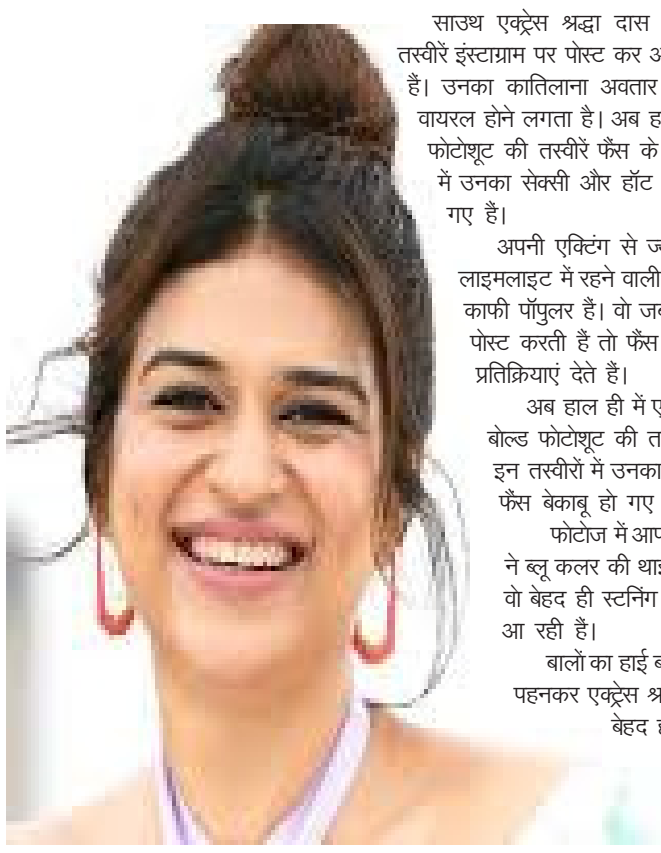

अपनी एक्टिंग से ज्यादा फैशन स्टेटमेंट्स के कारण लाइमलाइट में रहने वाली एक्ट्रेस श्रद्धा दास लोगों के बीच काफी पॉपुलर हैं। वो जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनके हर एक लुक पर अपनी प्रतिक्रियाएं देते हैं।

अब हाल ही में एक्ट्रेस श्रद्धा दास ने अपने लेटेस्ट बोल्ड फोटोशूट की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर शेयर की हैं। इन तस्वीरों में उनका हॉट एंड सेक्सी अंदाज देखकर फैंस बेकाबू हो गए हैं।

फोटोज में आप देख सकते हैं एक्ट्रेस श्रद्धा दास ने ब्लू कलर की थाई स्लिट ड्रेस पहनी हुई है, जिसमें वो बेहद ही स्टनिंग और किलर पोज देती हुई नजर आ रही हैं।

बालों का हाई बन बनाकर और कानों में इयररिंग्स पहनकर एक्ट्रेस श्रद्धा दास ने अपने आउटलुक को बेहद ही शानदार तरीके से निखारा है। श्रद्धा दास सोशल मीडिया लवर हैं और आए दिन अपनी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ से जुड़े अपडेट्स फैंस के बीच शेयर करती रहती हैं।

श्रद्धा दास सोशल मीडिय पर काफी एक्टिव रहती हैं। उनकी इंस्टाग्राम पर फैन फॉलोइंग लिस्ट भी काफी जबरदस्त है। ये ही नहीं एक्ट्रेस का हर एक लुक इंटरनेट पर पोस्ट होते ही बवाल मचाने लगता है।

डकैत में मृणाल ठाकुर ने श्रुति हासन को किया रिप्लेस, फिल्म के नए पोस्टर में अदिवि शेष के साथ एक्शन मोड में आई नजर

टॉलीवुड अभिनेता आदिवि शेष का आज जन्मदिन हैं। ऐसे में निर्माताओं ने फिल्म डकैत का पोस्टर जारी किया है। उनकी आगामी बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक डकैत है, जिसका निर्देशन शैनियल देव कर रहे हैं। यह एक प्रेम कहानी है। निर्माताओं ने फिल्म डकैत का पोस्टर जारी किया, जिसमें श्रुति हासन की जगह मृणाल ठाकुर नजर आईं।

निर्माताओं ने मृणाल के दो पोस्टर जारी किए हैं। एक पोस्टर में आदिवि शेष सीरियस दिखाई दे रहें हैं, जबकि मृणाल उन्हें दुख से देखती नजर आ रही हैं दूसरे पोस्टर में मृणाल हाथ में बंदूक लिए गुस्से में दिखाई दे रही हैं। दोनों ही स्टार्स स्टाइलिश तरीके से कार में बैठे हुए नजर आ रहे हैं। डकैत के दोनों पोस्टर काफी शानदार हैं।

यह फिल्म दो पूर्व प्रेमियों की कहानी है, जिन्हें कई साहसिक डकैतियों के लिए फिर से एकजुट होने के लिए मजबूर किया जाता है, जो आखिर में उनके जीवन की दिशा बदल देती है। फिल्म का निर्माण सुप्रिया यारलागड्डा ने किया है, सह–निर्माता सुनील नारंग हैं और अन्नपूर्णा स्टूडियो द्वारा प्रस्तुत किया गया है। फिल्म की शूटिंग हिंदी और तेलुगु में एक साथ की जा रही है, जिसकी कहानी और पटकथा अदिवी शेष और शैनियल देव ने मिलकर तैयार की है। फिल्म की शूटिंग फिलहाल हैदराबाद में हो रही है। इसके बाद महाराष्ट्र में एक और शेड्यूल की शूटिंग होनी बाकी है।

फिल्म डकैत में पहले श्रुति हासन को लिया गया था। लेकिन आज पोस्टर रिलीज के बाद यह साफ हो गया है कि इस फिल्म में श्रुति की जगह मृणाल ने ले ली है। यह फिल्म एक गुस्सैल अपराधी के सफर पर आधारित है, जो अपनी पूर्व प्रेमिका से धोखा खाने के बाद उससे बदला लेने का प्लान बनाता है। डकैत में मृणाल का एक ऐसा रूप दिखाई देगा, जिसे आपने पहले कभी नहीं देखा होगा।

फिल्म के बारे में बात करते हुए

दे दे प्यार दे 2 को मिली नई रिलीज तारीख, अगले साल 14 नवंबर को रिलीज होगी फिल्म

साल 2019 में आई फिल्म दे दे प्यार दे का सीक्वल आ रहा है। यह

फिल्म अगले साल मई में रिलीज होनी थी। मगर, इसकी रिलीज डेट अचानक टल गई। फिर कहा गया कि यह फिल्म सितंबर में आएगी। मगर, आज मेकर्स की तरफ से दी गई आधिकारिक जानकारी में पता चला है कि दर्शकों को अभी इस फिल्म के लिए लंबा इंतजार करना पड़ेगा। अजय देवगन, आर माधवन और रकुल प्रीत सिंह जैसे सितारों से सजी यह फिल्म कब रिलीज होगी? चलिए जानते हैंफिल्म दे दे प्यार दे 2 अब साल 2025 में नवंबर के महीने में रिलीज होगी। लव फिल्म्स की तरफ से इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट साझा किया गया है। इसमें लिखा है, फिल्म दे दे प्यार दे 2 14 नवंबर 2025 को रिलीज होगी। इस फिल्म का निर्देशन अंशुल शर्मा कर रहे हैं। भूषण कुमार, कृष्ण कुमार, लव रंजन और अंकुर गर्ग फिल्म को प्रोड्यूस कर रहे हैं। फिल्म को तरुण जैन और लव रंजन ने लिखा है।

दे दे प्यार दे 2 पहले 1 मई 2025 को रिलीज हो रही थी। लेकिन, अब नवंबर में बाल दिवस के अवसर पर फिल्म आएगी। हंसी–तफरी से लेकर रोमांस और फैमिली ड्रामा तक, इस फिल्म में सभी चीजें मौजूद हैं। फिल्म शैतान के बाद आर माधवन और अजय देवगन को एक बार फिर दर्शक साथ देख सकेंगे।फिल्म की रिलीज डेट सामने आने के बाद यूजर्स प्रतिक्रिया दे रहे हैं और मेकर्स से सवाल कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा, बाल दिवस पर रोमांटिक फिल्म रिलीज करने का क्या तुक हैं? वहीं एक अन्य यूजर ने लिखा, इतना लंबा इंतजार, बेकार रिलीज डेट है।

फिल्म दे दे प्यार दे 2 की रिलीज डेट को अजय देवगन की ही फिल्म रेड 2 की वजह से आगे खिसकाया गया है। हाल ही में एलान किया गया कि फिल्म रेड 2 1 मई, 2025 को रिलीज होगी। ऐसे में दोनों फिल्मों के टकराव से बचने के लिए मेकर्स ने दे दे प्यार दे 2 की रिलीज डेट बदल दी।

अद्रिजा राय ने अनुपमा में ली एंट्री, अलीशा परवीन को किया रिप्लेस, निभाएंगी राही का रोल

अनुपमा में इन दिनों काफी फेरबदल दिख रहा है. शो में राही का रोल निभाने वाली एक्ट्रेस अलीशा परवीन को मेकर्स ने निकाल दिया. उनकी जगह मेकर्स ने एक्ट्रेस अद्रिजा रॉय को कास्ट किया है.अद्रिजा रॉय के साथ शूटिंग शुरू हो गई है. अद्रिजा को शिवम खजूरिया के अपोजिट रोल में देखा जाएगा. मेकर्स ने ऑफिशिय अनाउंसमेंट कर दी है.

अद्रिजा रॉय का जन्म कोलकाता में हुआ था और उन्होंने बंगाली सीरीज से ही टीवी डेब्यू किया था. वो 2016 में शो बेदिनी मोलुआर कोठा में नजर आई थी.

इस शो से उन्हें बहुत तारीफ मिली थी. उनकी एक्टिंग को पसंद किया गया था. इसके बाद उन्होंने और भी बंगाली शो में काम किया.वो दुर्गा दुर्गेश्वरी, पोटोल कुमार गाणवाला, जय काली कलकत्तेवाली, बिक्रम बेताल और मौउ एर बारी जैसे शो में नजर आई थीं2023 में अद्रिजा ने हिंदी टीवी इंडस्ट्री में एंट्री ली और खुद को प्रॉमिनेंट फिगर के तौर पर स्टैब्लिश किया. उन्होंने इमली में काम किया.उन्होंने पॉपुलर शो कुंडली भाग्य में भी काम किया. इस शो में डॉक्टर पालकी खुराना का रोल प्ले किया था.उन्होंने बंगाली फिल्म परिणीता और गोल्पेर मायाजाल में भी काम किया है. अब उन्हें अनुपमा में देखा जाएगा. अद्रिजा सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव हैं

केए10 के शीर्षक से उठा पर्दा, किरण अब्बावरम की प्रेम और रोमांटिक एक्शन फिल्म दिलरुबा का पहला पोस्टर भी जारी

युवा और प्रतिभाशाली नायक किरण अब्बावरम ने सस्पेंस थ्रिलर केए से सभी को प्रभावित किया है। अभिनेता अपनी अगली फिल्म के साथ सभी को आश्चर्यचकित करने के लिए तैयार हैं। अभिनेता की नई फिल्म का शीर्षक फाइनल हो गया है, दिलरुबा। शीर्षक पोस्टर ने पहले ही काफी दिलचस्पी पैदा कर दी है। रुखसार ढिल्लन फिल्म में मुख्य भूमिका निभाएंगी।दिलरुबा का निर्माण शिवम सेल्युलॉइड्स और यूडली फिल्म्स द्वारा किया जा रहा है, जो सारेगामा इंडिया लिमिटेड का फिल्म स्टूडियो है। रवि, जोजो जोस, राकेश रेड्डी और सारेगामा इसके निर्माता हैं, जबकि विश्व करुण इस दिलचस्प मनोरंजक फिल्म का निर्देशन कर रहे हैं।

अमित शाह के इस्तीफे को लेकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने किया प्रदर्शन

मीरजापुर(एजेंसी)। लंबे समय से खिसकते रहे जनाधार से जूझती कांग्रेस को संविधान शिल्पकार बाबा साहेब डॉ भीमराव अंबेडकर के बहाने एक बड़ा मुद्दा हाथ लगा है, सो इसी बहाने धरना–प्रदर्शन का क्रम तेज करते हुए कांग्रेस ने अपनी एकजुटता भी दिखाना शुरू कर दिया है. काफी समय के बाद जिला मुख्यालय पर एकत्र हुए कांग्रेस कमेटी के नेताओं ने यहां जिला कांग्रेस कमेटी मिर्जापुर के जिलाध्यक्ष शिवकुमार सिंह पटेल के नेतृत्व में प्रदर्शन करते हुए जिलाधिकारी के माध्यम से महामहिम राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजकर गृहमंत्री अमित शाह के इस्तीफे की मांग की है. जिला मुख्यालय पर प्रदर्शन करते हुए कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने कहा कि 17 दिसंबर 2024 को गृहमंत्री अमित शाह ने भारत रत्न बाबा साहब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर के बारे में राज्यसभा में बेहद आपत्तिजनक और अपमानजनक टिप्पणी की है. यह टिप्पणियां न केवल भारत के महान नेताओं में से एक अद्वितीय विरासत का अपमान है, बल्कि उन करोड़ों करोड़ों भारतीयों का भी घोर अपमान है जो उन्हें भारतीय संविधान के निर्माता और सामाजिक न्याय के प्रणेता के रूप में पूजते हैं. कहा एक संवैधानिक पदाधिकारी द्वारा इस तरह के बयान बेहद अपमानजनक है जो हमारे गणतंत्र की नींव को कमजोर करने का एक खतरनाक प्रयास है. डॉ अंबेडकर समानता न्याय और हमारे संविधान में निहित लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रतीक हैं उनके नाम को कलंकित करने का कोई भी प्रयास इन मूल्यों का अपमान है और हमारे राष्ट्र की सामाजिक सद्भावना के लिए खतरा है. मांग किया कि अमित शाह सार्वजनिक रूप से सदन में माफी मांगे और अपने पद से इस्तीफा दें, नहीं तो कांग्रेसजन और उग्र विरोध प्रदर्शन करने के साथ आंदोलन तेज करेंगे. इस दौरान प्रदेश कांग्रेस कमेटी के पूर्व उपाध्यक्ष पूर्व विधायक भगौती प्रसाद चौधरी, भगवान दत्त पाठक उर्फ राजन पाठक, छोटे खान, विधि कुमार सिंह, अर्चना चौबे, तुलसीदास गुप्ता, गुलाब चंद पांडे, राम श्रृंगार दुबे, नरेश, लवकुश, इत्यादि कांग्रेस कमेटी के कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी मौजूद रहे हैं.

पटेवर स्पोर्टिंग क्लब मड़िहान मीरजापुर ने 11 रनों से फाइनल मुकाबला जीत

सोनभद्र ।(एजेंसी) विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी क्यू स्टार टूनामेंट करी बराव सोनभद्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में कुल 32 टीमों ने भाग लिया, जिसका फाइनल मुकाबल शुक्रवार को अम्बेडकर पार्क के करी बराव ग्रामसभा में पटेवर स्पोर्टिंग क्लब मड़िहान मीरजापुर और चित्रांश स्पोर्टिंग क्लब नदिहार शाहगंज रोड मीरजापुर के बीच खेला गया, जिसमें विजेता टीम ने टॉस जितकर पहले बल्लेबाजी की निर्धारित दस ओवर में कुल 146 रन बनायें। जबकि इस मुकाबले में उप विजेता टीम ने सम्पूर्ण विकेट खोकर कुल 135 रन ही बना पाई जिससे विजेता टीम पटेवर स्पोर्टिंग क्लब मड़िहान मीरजापुर ने 11 रनों से फाइनल मुकाबला जीत लिया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि समाजवादी पार्टी के जिला उपाध्यक्ष डॉ० लोकपति सिंह पटेल ने विजेता टीम के स्टार बल्लेबाज अक्षय शर्मा को मैन ऑफ द मैच व मैन ऑफ द सीरिज से सम्मानित किये एवं पटेवर स्पोर्टिंग क्लब मड़िहान मीरजापुर के कप्तान को फाइनल मुकाबला जितने के लिये ट्राफी देकर सम्मानित किये एवं उप विजेता टीम चित्रांश स्पोर्टिंग क्लब नदिहार के कप्तान को उप विजेता ट्राफी देकर सम्मानित किये।

इस कार्यक्रम का आयोजक बालेश्वर यादव, विवेक यादव, अभिषेक पाठक, संजय बलमा, दीपक कुमार, रामलाल यादव को मुख्य अतिथि डॉ० लोकपति सिंह पटेल जी ने हौसले को बढ़ाया और लोगों को खेल के प्रति, शिक्षा के प्रति एवं लोगों के हक अधिकार के प्रति सजग रहने की बात की और इस कार्यक्रम की समापन की घोषणा की।

एनटीपीसी प्रबन्धन नीद से जागा अबैध निर्माण कार्य रोकने के लिए पुलिस को भेजा पत्र

बीजपुर(सोनभद्र)एनटीपीसी की बेशकीमती खाली जमीन पर हो रहे रात दिन निर्माण कार्य की खबर से प्रबन्धन की नींद टूट गयी है और एचआर विभाग के सहायक प्रबंधक एचआर पी एन शाह की ओर से प्रभारी निरीक्षक बीजपुर थाना को पत्र लिख कर तत्काल अबैध निर्माण कार्य पर रोक लगाने की माँग की गई है।इस बाबत मिली गोपनीय जानकारी पर गौर करे तो शीर्ष प्रबन्धन एनटीपीसी की जमीन पर अबैध निर्माण के खिलाफ सख्त रुख अपना लिया है और तत्काल निर्माण कार्य को रोकने के लिए पुलिस को पत्र लिख कर रोक लगाने को कहा गया है।

गौरतलब हो कि रेणुकोट बीजपुर सड़क मार्ग के किनारे पुनर्वास प्रथम स्थित बेड़िया हनुमान मंदिर के पास सड़क के दक्षिण पटरी पर हो रहे अबैध निर्माण कार्य को बन्द कराने के लिए उच्चाधिकारियों को भी अवगत कराया गया है बावजूद कब्जेदार किसी की मिली भगत से रात दिन भवन निर्माण में लगे हुए हैं।बताया जाता है कि कब्जेदार पट्टा कहीं और का दिखा रहा है और निर्माण कार्य कहीं और प्रबन्धन की खाली जमीन पर कर रहा है जिससे आसपास के ग्रामीणों में आक्रोश ब्याप्त है।

व्यापारी सुरक्षा प्रकोष्ठ की बैठक पुलिस लाइन में सम्पन्न

सोनभद्र ।(एजेंसी) शुक्रवार को व्यापारी सुरक्षा प्रकोष्ठ की बैठक पुलिस लाइन स्थित सभागार में पुलिस अधीक्षक की अध्यक्षता में संपन्न हुई जिसमें व्यापारी समस्याओं पर व्यापक रूप से विचार विमर्श किया गया एवं पुलिस अधीक्षक महोदय द्वारा अति शीघ्र समाधान का आश्वासन दिया गया। उत्तर प्रदेश उद्योग व्यापार संगठन के जिला अध्यक्ष कौशल शर्मा ने जनपद में तेजी से बढ़ रहे साइबर अपराध की ओर पुलिस अधीक्षक का ध्यान आकर्षित कराया और कहा कि आम आदमी यह कैसे जान सकता है की भरोसेमंद सुरक्षित और प्रामाणिक कौन सी वेबसाइट है और यदि साइबर हेल्पलाइन 1930 पर डिजिटल अपराध की रिपोर्ट दर्ज न हो तो क्या करें। उन्होंने कहा कि अभी हाल में ही झांसी मेडिकल कॉलेज में आग लगने से 11 बच्चों की मौत हो गई फायर एवं विद्युत सुरक्षा की स्थिति बेहद चिंताजनक है सरकारी अस्पतालों से लेकर प्राइवेट अस्पतालों में विद्युत सुरक्षा एवं फायर की एन.ओ.सी. तक नहीं है सभी अस्पतालों की व्यवस्था राम भरोसे है आगे श्री शर्मा ने व्यापारियों की समस्याओं से अवगत कराते हुए आगे कहा कि जिला मुख्यालय पर ना तो ट्रांसपोर्ट नगर है नहीं पार्किंग की व्यवस्था है आखिरकार व्यापारी अपने सामानों की लोडिंग एवं अनलोडिंग कैसे कराये यदि पटरी पर भी गाड़ी खड़ी करके सामान की लोडिंग एवं लोडिंग होती है तो ट्रैफिक पुलिस द्वारा भारी भरकम चालान कर दिया जाता है उन्होंने आगे कहा कि बढौली चौराहे पर प्राय प्राइवेट बसों के बेतरतीब खड़ा होने की वजह से आए दिन जाम का सामना करना पड़ता है।

झोलाछाप डाक्टर के इंजेक्शन ने ली मासूम की जान,परिजनों में मचा कोहराम

बीजपुरध्सोनभद्र(एजेंसी) ।थाना क्षेत्र अंतर्गत ग्राम सभा पिंडारी के टोला मनरहवा में गुरुवार शाम एक झोला छाप डॉक्टर के इंजेक्शन से एक 8 वर्षीय बालक की मौत हो गई। हृदय को छू जाने वाली इस मौत से परिजनों में कोहराम मचा दिया। परिजनों ने शुक्रवार सुबह पुलिस को तहरीर देकर कथित झोला छाप चिकित्सक के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की ळें प्रभारी निरीक्षक अखिलेश मिश्रा ने बताया कि अभिषेक 8 वर्ष पुत्र अशोक कुमार ग्राम पिंडारी टोला मनरहवा की मौत गाँव के एक चिकित्सक के इलाज के पश्चात हुई है मृतक के बाबा दया शंकर ने तहरीर देकर घटना की जानकारी पुलिस स्टेशन में दी है। मृतक का पंचनामा कर शव को पीएम के लिए दुद्धि सीएचसी भेजा जा रहा हैं रिपोर्ट आने के पश्चात विधिक कार्रवाई की जाएगी।

गौरतलब हो कि थाना क्षेत्र के विभिन्न चट्टी चौराहे पर विभागीय मिली भगत से दर्जनों ऐसे झोला छाप चिकित्सक बैठे है जो सस्ती दवा उपचार के नाम पर गरीब ग्रामीणों को आयेदिन मौत के घाट उतार रहे हैं।ग्रामीण अंचल में बंगाली दवा खाना जैसे तरह तरह के नाम पर बिना किसी मेडिकल डिग्री के दवा इलाज चीड़फाड़ बेरोकटोंक कर रहे हैं जब कोई घटना हो जाती हैं तो अपना बोर्ड उतारकर फरार हो जाते है और मामला ठंडा होने के पश्चात फिर कही न कही बोर्ड लगाकर इलाज करने लगते हैं। इधर मृत बालक के बाबा दया शंकर ने बताया कि गुरुवार की शाम उनका नाती घर के पास पुलिया पर गाँव के बच्चों संग खेल रहा था उसी दौरान उसके पैर में पत्थल से चोट लग गई जिससे पैर में खून बहने लगा परिजन गाँव के डाक्टर मधु सरकार के दवाखाना ले गए जहां उनका सहायक महेश ने पट्टी मरहम के बाद एक इंजेक्शन लगाया उसके बाद उनका नाती अचेत हो गया।

हालत गंभीर देख झोला छाप डॉक्टर के हाथपांव फूल गए घबराया डॉक्टर बालक को लेकर परिवार संग बेहोशी की हालात में एनटीपीसी रिहंद के धनवंतरी चिकित्सालय ले गया जहां चिकित्सकों ने देखते ही बालक को मृत घोषित कर दिया।बच्चे के मौत की सूचना मिलते ही परिवार में कोहराम मच गया। हॉस्पिटल से आए मेमो की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर अग्रिम विधिक कार्रवाई में जुट गई।बातचीत मे डॉ मधु सरकार ने कहा कि हम तो किराना दुकान चलाते है पहले दवाई किया करते थे अब हमारा साला महेश दवा करता है।उधर सीएमओ डॉ अश्वनी कुमार ने कहा कि हमको जानकारी है नोडल अधिकारी को मामले की जांच में भेजा हूँ दोषी पाए जाने पर कार्रवाई की जाएगी।

रोजगार मेले में कुल 56 अभ्यर्थियों का हुआ चयन

सोनभद्र(एजेंसी)। शुक्रवार को जिला सेवायोजन कार्यालय, परिसर, खुशबू बाग नर्सरी रोड (जिला अस्पताल के सामने) लोढ़ी, राबर्ट्सगंज, सोनभद्र में रोजगार मेले का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 150 अभ्यर्थियों ने प्रतिभाग किया। उ०प्र० राज्य सड़क परिवहन (सोनभद्र डिपो) में चालक की संविदा भर्ती एवं लैट्रीक स्टाफींग, नोएडा, मेराक्यू दिल्ली, क्रेडिट एक्सेस ग्रामीण लि०, सोनभद्र, टैलेन्टअप, नोएडा, शिवशक्ति एग्रीटेक, वाराणसी, महादेव हनुमत, वाराणसी, विजन इण्डिया सर्विसेज प्रा० लि०, नोएडा, एन०एस०डी०सी०, वाराणसी, स्वतंत्र माइक्रो फाइनेंस प्रा० लि०, सोनभद्र, कामाख्या टी०वी०एस०, रावर्ट्सगंज, सोनभद्र, एस०बी०आई० कार्ड, वाराणसी एवं मीडलैण्ड माइक्रोफीन, सोनभद्र इत्यादि ने प्रतिभाग किया।

आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति का प्रतिदिन ब्यौरा किया जाये प्रस्तुत-डीएम

सोनभद्र(एजेंसी)। जिलाधिकारी बी0एन0 सिंह की अध्यक्षता में शुक्रवार को कलेक्ट्रेट सभागार कक्ष में आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति की समीक्षा की गयी, समीक्षा के दौरान आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति धीमी पायी गयी, जिस पर जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी, जिला कार्यक्रम अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी, जिला पूर्ति अधिकारी को निर्देशित करते हुए कहा कि सभी विभाग आपस में समन्वय स्थापित करते हुए आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति में तेजी लायें, इसमें किसी भी स्तर पर शिथिलता व लापरवाही क्षम्य नहीं होगी, उन्होंने कहा कि आयुष्मान कार्ड बनाने की प्रगति का ब्यौरा सम्बन्धित विभाग प्रतिदिन प्रस्तुत करना सुनिश्चित करें इस दौरान वर्कशाप का आयोग अर्न्तविभागीय सहयोग आयुष्मान कार्ड बनाये जाने की प्रगति में सहयोग हेतु उक्त वर्कशाप में जिला पंचायत राज

अधिकारी जिला पूर्ति विभाग, जिला कार्यक्रम अधिकारी, को मुख्य रूप से सम्मिलित किया गया था। इस दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि आयुष्मान कार्ड बनाये जाने की प्रगति में अपेक्षित सुधार के निर्देश देते हुए इस बात पर विशेष जोर दिया गया कि सभी विभागीय अधिकारी स्वयं आयुष्मान कार्ड बनाये जाने की जानकारी प्राप्त कर लेवे, जिससे कि वे अपने अधीनस्थ कार्मिकों को प्रशिक्षित कर सके, जिससे कि कार्मिक आयुष्मान कार्ड बना सके। जिलाधिकारी ने मुख्य चिकित्साधिकारी सोनभद्र को निर्देशित करते हुए कहा कि आयुष्मान भारत के अन्तर्गत तैनात कार्मिकों द्वारा कार्ड बनाये जाने का पी०पी०टी० बनाकर प्रदर्शित करावे जिससे कि लाभार्थी को स्वयं कार्ड बनाये जाने की जानकारी प्राप्त हो सके एवं स्वास्थ्य विभाग के अतिरिक्त विभाग कार्ड बनाये जाने में मदद कर सकें। उक्त वर्कशाप में मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 अश्वनी कुमार, जिला विकास अधिकारी शेषनाथ चौहान एवं आयुष्मान कार्ड बनाने वाले कार्मिकगण उपस्थित रहें।

टीबी रोगियों की स्वास्थ्य समस्या दूर करने में आईएमए रहेगा तत्परः-डा0 जी पी राय

--- आईएमए के चिकित्सक गोद लिये गये टीबी रोगियों की निःशुल्क करेगे उपचाररू-डा.वाई के मद्देशिया।

----सामाजिक सहयोग से ही होगा टीबी मुक्तसमाजरू-डीटीओ।

---- समाजसेवी राकेश जयसवाल उर्फ गुड्डू बाबू की पत्नी ने लिया एक मरीज को गोद।

कुशीनगर, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत जनपद के कसया सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के सभागार में शुक्रवार को इंडियन मेडिकल एसोसिएशन के सहयोग से टीबी रोगियों में दूसरे माह की पोषण पोटली वितरण का कार्यक्रम आयोजित किया गया।कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित करते हुए आईएमए के अध्यक्ष डॉ ज्ञान प्रकाश राय ने कहा कि टीबी रोगियों के स्वास्थ्य सम्बंधित समस्याओं को दूर करने के लिये आईएमए के चिकित्सक सदैव तत्पर रहेंगे। उन्होंने ने कहा कि प्रधानमंत्री टीबी मुक्त भारत बनाने के लिये सरकारी एवं प्राइवेट चिकित्सको को मिलकर काम करना होगा तभी हमें सफलता मिलेगी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि आईएमए के सचिव डॉ० वाई के मद्देशिया ने कहा कि जिन टीबी रोगियों को आईएमए के सदस्यों ने गोद लिया है। उन्हें कभी भी कोई दिक्कत आये तो वे तत्काल सम्पर्क करें उनका निःशुल्क उपचार किया जायेगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे जिला क्षयरोग अधिकारी डॉ एस. एन.त्रिपाठी ने कहा कि इस पुनीत कार्य हेतु मैं आईएमए के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। उन्होंने ने कहा कि सामाजिक सहयोग से ही हम टीबी मुक्त समाज की स्थापना कर सकते है। कार्यक्रम में कुल 26 मरीजों में पोषण सामग्री वितरित किया गया। जिसमें आईएमए के सहयोग से 25 टीबी रोगियों को दूसरे माह का तथा एक रोगी को प्रथम माह का जिसको नगर निवासी उषा देवी पत्नी समाजसेवी राकेश जयसवाल उर्फ गुड्डू बाबू द्वारा गोद लेकर पौष्टिक आहार दिया गया।द्द कार्यक्रम का संचालन निक्षय मित्र नोडल आशुतोष मिश्र ने किया तथा आगन्तुकों का स्वागत सीएचसी अधीक्षक डॉ० मार्कण्डेय चतुर्वेदी ने किया एवं आभार डॉ० संजय सिंह ने व्यक्त किया। बताते चले कि विगत माह कलेक्ट्रेट सभागर में जिलाधिकारी विशाल भारद्वाज की उपस्थिति में आईएमए द्वारा 52 टीबी रोगियों को गोद लिया गया था।द्द इस दौरान डॉ अनिल श्रीवास्तव, डॉ भावना गुप्ता, डॉ अशोक सिंह, डॉ आर एस यादव, डॉ० गौतम गौरव, अशोक सिंह, वशीर अहमद, एसटीएस शाहिद अंसारी, विमलेश दुबे, हरिवंश गुप्ता, राजन, साबिर, बीना दुबे, मीरा दुबे, ममता, अशोक गुप्ता, धनश्याम प्रसाद, नगीना यादव आदि उपस्थित रहे।

शहीद मेजर अमिय त्रिपाठी क्रिकेट प्रतियोगिता 23 दिसम्बर से

कुशीनगर, (एजेंसी)। 19 वीं अखिल भारतीय शहीद मेजर अमिय त्रिपाठी क्रिकेट प्रतियोगिता का आगाज आगामी 23 दिसम्बर से होगा। इसके लिये टीमों की चयन सहित अन्य तैयारियां पूरी कर ली गयी है। उक्त आशय की जानकारी शहीद मेजर के बड़े भाई और आयोजन समिति के संरक्षक अजय त्रिपाठी ने प्रेस वार्ता में दी। उन्होंने बताया कि प्रति वर्षों के भांति इस वर्ष भी यह प्रतियोगिता दो ग्रुपों में होगी। प्रतियोगिता के लिये 23 दिसंबर को सुबह आठ बजे से कसया स्तिथ शहीद मेजर के मूर्ति से 41 धावक मशाल लेकर सपहा, तुर्कपट्टी होते हुए शहीद के पैतृक गांव भेलया पहुचेंगे। जहां शहीद के प्रतिमा पर माल्यार्पण करने के बाद वहां से 310 अन्य धावक धविकाओ के साथ यह मशाल दौड़ मो, पटहेरवा, काजीपुर होते हुए आयोजन स्थल पावानगर महावीर इंटर कालेज के खेल ग्राउण्ड पर पंहुचेगी जहां मुख्य अतिथि द्वारा अमर जवान ज्योति प्रज्वलित कर प्रतियोगिता का शुभारंभ करेंगे। इसके बाद सेन्ट जोसफ स्कूल के छात्र छात्राओं द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर आयोजन को भब्यता प्रदान करेंगे। पहले दिन प्रतीकात्मक मैच खेला जायेगा।प्रतियोगिता का पहला मैच 24 दिसंबर को खेला जायेगा। प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाली सभी टीमें रणजी खिलाडियों से सजी होगी। इस प्रतियोगिता के बिजेता टीम को ट्राफी के साथ एक लाख पचास हजार तथा उप विजेता टीम को पचहत्तर हजार नगद राशि पुरस्कार में दिया जाएगा। इसके अलावे मैच के मैन ऑफ सीरीज को हीरो मोटर्स के तफर से लेटेस्ट माडल की बाइक दिया जाता है। इस प्रतियोगिता के निर्णायक बीसीसीआई पैनल के अंपायर करेंगे इसके अलावे थर्ड अंपायर की भी भूमिका के साथ साथ स्कोर बोर्ड की व्यवस्था होती है। प्रतियोगिता में ग्रुप ए में मेजबान टीम आजाद स्पोर्ट्स फाजिलनगर, एनई रेलवे, 3 क्रिकेट एकेडमी दिल्ली, बीजी इलेवन बिहार तथा ग्रुप बी में क्रिकेट एसोसिएशन लखनऊ, स्पोर्ट्स मंत्रा हरियाणा, दिल्ली चौलेंजर्स, क्रिकेट एसोशिएशन उत्तराखंड की टीमें प्रतिभाग करेंगी। मैच फाइनल मुकाबला 30 दिसंबर को होगा। पत्रकार वार्ता के दौरान राजन शुक्ला, बिनीत कुमार बंटी, आजाद अंसारी, टीएन राय, सीओ जोश, शिवशंकर तिवारी, प्रदीप सिंह, मीडिया प्रभारी दिनेश सिंह, गुडडू पाण्डेय, मुहम्मद आलम, मोनू इराकी, दारोगा भाई, असरफ अंसारी, भास्कर राय, गुड्डू सिंह, पिंटू सिंह, उदयभान सिंह सतेंद्र सिंह, कबीन्द्र सिंह आदि मौजूद रहे।

गन्ना कृषकों का दल प्रशिक्षण लेने जाएगा महाराष्ट्रः निदेशक

कुशीनगर, (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा गन्ना उत्पादक राज्य है। प्रदेश में गन्ने का औसत 841 कुन्तल प्रति हेक्टेयर है। प्रदेश के 20 गन्ना कृषिको का एक 07 दिवसीय अध्ययन यात्रा प्रशिक्षण लेने भारत के दूसरे नंबर का गन्ना उत्पादक राज्य महाराष्ट्र जनवरी 25 में लाल बहादुर शास्त्री गन्ना किसान संस्थान लखनऊ के निदेशक विश्वेश कनौजिया के मार्ग निर्देशन में जाएगा। निदेशक द्वारा जारी पत्र के हवाले से जानकारी देते हुए गन्ना किसान संस्थान प्रशिक्षण केंद्र पिपराइच गोरखपुर के पूर्व सहायक निदेशक ओम प्रकाश गुप्ता ने बताया कि अध्ययन यात्रा में जाने के लिए कृषकों का चयन गन्ना विकास विभाग के ज्येष्ठ गन्ना विकास निरीक्षक व जिला गन्ना अधिकारी द्वारा किया जाएगा चयनित कृषक गन्ना समिति का सदस्य होना आवश्यक है। इस अध्ययन यात्रा में गन्ना किसान संस्थान प्रशिक्षण केंद्र पिपराइच गोरखपुर परिक्षेत्र तीन कृषक, मुरादाबाद परिक्षेत्र से चार कृषक, गोंडा क्षेत्र से तीन कृषक, मुजफ्फरपुर से चार कृषक, शाहजहांपुर से चार कृषक , मुख्यालय से दो कृषक , कुल 20 कृषक प्रशिक्षण लेने बसंत दादा शर्करा संस्थान पुणे महाराष्ट्र ट्रेन से जाएंगे। इस अध्ययन यात्रा का मुख्य उद्देश्य महाराष्ट्र में किए जा रहे सोध तकनीक को प्रयोगशाला से किसान के खेत पर पहुंचा कर गन्ने की उत्पादकता एवं चीनी परता में वृद्धि करना तथा कृषकों की आय बढ़ाना है। प्रशिक्षण की तिथि रेलवे आरक्षण उपरांत किए जायेंगे। पूर्व सहायक निदेशक ओम प्रकाश गुप्ता जो यह प्रशिक्षण पुणे जाकर ले चुके हैं उन्होंने बताया कि वैज्ञानिकों द्वारा गन्ना प्रजातियां , मृदा प्रशिक्षण से लाभ ट्रेंच विधि से गन्ना बोने से लाभ, ड्रिप विधि से सिंचाई, संतुलित उर्वरकों का प्रयोग, गन्ने में लगने वाले कीट रोग का नियंत्रण, गन्ना फसल में कृषकों यंत्रों का प्रयोग टिश्यू कल्चर से तैयार पौधा, आदि विषयों पर प्रशिक्षण दिया जाता है । शोध प्रक्षेत्र का भ्रमण कराया जाता है स्थानीय चीनी मिल दिखाया जाता है किसान के खेत पर वार्ता कराया जाता है वहां पर अधिकतर किसान गन्ने के साथ प्याज की खेती करते हैं गन्ने की पंक्ति से पंक्ति की दूरी 5 फुट या इससे अधिक रखते हैं इस यात्रा में वैज्ञानिक खेती के प्रति कृषकों में जागरूकता बढ़ेगी, उपज बढ़ाने में सहायक होगा।

ठगी और लूट के गिरोह का पर्दाफाश, लाखों के जेवरात बरामद

बाराबंकी ।शुक्रवार को कोतवाली प्रभारी नगर ने स्वॉट टीम और सर्विलांस टीम के प्रभारियों के सहयोग से ठगी और लूट करने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया। पुलिस ने दो महिलाओं सहित पांच आरोपियों को धर दबोचा। जबकि दो बाल अपचारियों को संरक्षण में ले लिया। पुलिस

ने इन लोगों के पास से सोने के जेवरात, पांच मोबाइल फोन व नकदी भी बरामद की। एएसपी दक्षिणी ने पूरी पुलिस टीम को पुरस्कृत करने की घोषणा की। जानकारी के अनुसार, शुक्रवार सुबह स्वाट, सर्विलांस व थाना कोतवाली नगर की संयुक्त पुलिस टीम द्वारा डिजिटल डेटा व मैनुअल इंटेलीजेंस की मदद से कोतवाली नगर क्षेत्र में हुई ठगी और लूट की चार घटनाओं में शामिल अभियुक्त जनपद गाजियाबाद के थाना टोनिका सिटी गली नं–1 निवासी गोपाल प्रजापति पुत्र छबिलाल प्रजापति, दिल्ली प्रांत के थाना मरौला के चंचलपार्क अमरुद वाली बाग निवासी रतन लाल पुत्र हरीलाल, रतनलाल के पुत्र रौनक सोलंकी उसकी पत्नी गंजा देवी व यही की निवासिनी आरती प्रजापति पत्नी गोपाल प्रजापति के अलावा दो बाल अपचारियों को धर दबोचा। तलाशी के दौरान पुलिस ने इन लोगों के पास से पांच मोबाइल फोन, चांदी और सोने के जेवरात एक इलेक्ट्रानिक तराजू 1200 रुपये नकद, नोट के नकली बण्डल बरामद किये। पुलिस लाइन में आयोजित प्रेसवार्ता के दौरान एएसपी दक्षिणी ने उक्त गुडवर्क का खुलासा किया। पूछताछ एवं जांच से ज्ञात हुआ कि अभियुक्तगण का एक गिरोह है जिनके द्वारा जनपद बाराबंकी, लखनऊ, गाजीपुर एवं बिहार, मध्य प्रदेश आदि अन्य प्रान्तों में भी ठगी व लूट की घटनाएं कारित की गई हैं। अभियुक्तगण द्वारा कम्बल या अन्य सामान बेंचने के बहाने रेकी कर मुख्यतः महिलाओं को चिन्हित किया जाता है, जिसके बाद गिरोह में सम्मिलित छोटे बच्चे (बाल अपचारी) को महिला के पास भेज दिया जाता है एवं एक अन्य सदस्य भी पीछे से वहीं पहुंच जाता है। पूर्व नियोजित योजनानुसार बच्चे द्वारा महिला से रोते हुए स्वयं के कई दिनों से भूखे होने एवं मालिक द्वारा पीटे जाने की बात कही जाती है। तभी वहां पूर्व से उपस्थित गिरोह के सदस्य द्वारा उसे कुछ खरीद कर खाने हेतु रूपये दिये जाते हैं किन्तु उस बच्चे द्वारा स्वयं के पास मालिक के यहां से बहुत रुपये चुरा लाने की बात कहते हुए नोटों की गड्डी दिखाई जाती है, गड्डी में ऊपर–नीचे 500 रूपये का नोट एवं बीच में नोट के साइज के कागज लगे होते हैं। गिरोह के अन्य सदस्य द्वारा महिला को कुछ जेवरात देकर उस बच्चे से नोटों की गड्डी ले लेने का लालच दिया जाता है तथा महिला उन लोगों के षडयंत्र में फंस कर अपने जेवरात दे देती हैं।

किसानों की फसल जलमग्न, भरा गदे नाले का पानी

रामनगर, बाराबंकी। रामनगर तहसील क्षेत्र में प्यारेपुर से होते हुए मरकामऊ बदोसराय तक निकले हुए गंदे नाले में पानी आ जाने से किसानों की फसले जलमग्न हो गई। ग्राम सुरवारी मलिहामऊ टांडा रावत सहित कई गांव की सैकड़ो बीघा गेहूं आलू सरसों के फैसले अधिक पानी आने के कारण जलमग्न होकर नष्ट होने के कगार पर आ गई। जबकि जिस नहर से यह पानी आया है उसे निकली हुई सिंचाई की माइनर अभी भी सूखी पड़ी हुई है। अगर यह पानी आना बंद नहीं हुआ तो विगत 5–7 वर्षों की तरह इस वर्ष भी अन्नदाता किसानों की झोली खाली रहेगी। सुरवारी के पास जगह–जगह कटे व उफनाए हुए गंदा नाला को दर्जनों किसानों ने आपसी सहयोग से शुक्रवार को जीसीसी से बंधाया है। शिवकुमार वर्मा, जगजीवन कश्यप,पूर्व प्रधान सतीश रावत,नीरज चौहा विशम्भ आदि ने रोष व्यक्त करते हुए कहा कि ऐसे अनावश्यक आने वाले पानी से किसानों का लगातार नुकसान हो होता है इसके लिए प्रशासन को सही दिशा में कार्य करना चाहिए।

सीआरपीएफ के जवानों ने किया फ्लैग मार्च

बड्डूपुर, बाराबंकी ।विकास खण्ड निदूरा क्षेत्र के कोतवाली बड्डूपुर, कुर्सी, घुंघटेर में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल व स्थानीय पुलिस के साथ पैदल मार्च किया ।शुक्रवार को कोतवाली बड्डूपुर प्रभारी मनोज कुमार, कुर्सी प्रभारी गजेंद्र प्रताप सिंह, घूघंटेर प्रभारी बेचूं सिंह यादव के नेतृत्व में केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के साथ कस्बा बड्डूपुर,डफरपुर,खिंझना, रीवा सीवा, कुर्सी, अमरसंडा, अनवरी, बाबागंज आदि जगहों पर पैदल मार्च कर ग्रामीणों को शांति व्यवस्था बनाए रखें। किसी भी प्रकार की कानून को अपने हाथों में ना लें तथा हर समस्या के लिए ग्रामीणों को पैदल मार्च कर सुरक्षा का एहसास दिलाया।

हिन्दी दैनिक विजडम इंडिया
स्वामी,मुद्रक एवं प्रकाशक श्री शील कुमार शुक्ला द्वारा हिन्दुस्तान समाचार फीचर सेवा लि0 ,94, एम0जी0 मार्ग, हजरतगंज, लखनऊ से छपवाकर 633/387,गेहमर कुंज कालोनी, फैजाबाद रोड, चिनहट, लखनऊ उ0प्र0 से प्रकाशित।
सम्पादक–शील कुमार शुक्ला
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र लखनऊ मान्य होगा।